



CLOSED

Library of The Theological Seminary

PRINCETON • NEW JERSEY



FROM THE LIBRARY OF
ROBERT ELLIOTT SPEER



**BIG
T**

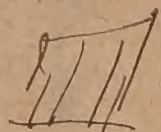
Letter Copying Book.

EVERY ONE GUARANTEED.

Folio
Doc
S742
A2
v.6

✓
R.E. Speer
Letters: Personal
June 12, 1905 - Jan. 9, 1906

49. 96. 3183. 93. 94. 104. 105. 106. 113. 116. 120. 129. 146.
150. 162. 167. 182. 186. 189. 191. 193. 200. 226. 231.
233. 240. 241. 245. 248. 250. 256.
264. 266. 271. 279. 280. 282. 291. 296. 302.
304. 306. 307. 313. 317. 322. 324. 329. 337.
346. 356. 360. 363. 371. 381. 389.
391. 395. 397. 399. 405. 409. 417.
418. 424. 426. 432. 434. 436. 438. 448.
444. 461. 465. 469. 471. 473. 475. 481. 483.
488. 492. 496. 500.


closed



| | |
|-----------------------|----------------------------------|
| Andrus Mr. Fred H. | 29. 139. 164. 228. 329. 355. 371 |
| Adams Rev. W. H. | 30. |
| Alexander Mrs. S. M. | 49. 75. 104 |
| Andersen Mr. H. P. | 58. |
| Allen Miss. | 138. |
| Adam Rev. J. Douglass | 236. |
| Arms Mr. George W. | 266. |
| Abbot Mr. A. W. | 287. |
| Acworth Rev. John | 315. |
| Anderson Mr. Chas. H. | 341. |
| Anderson Miss C. L. | 342. |

Beaver Mrs Gilbert A.
Beattie Rev. J. D.
Briggs Mr. S. E.
Barnes Mr. Clifford W.
Brown Prof. C. E.
Gray Mr. Kenneth
Baberman Mr. S. E.
Best Mr. Nolan A.
Brant Mr. John J.
Badd Miss
Bank Mr. T. M.
Becher Rev. W.
Bakeman Mr. O. R.
Barclay Mr. Gilbert A.
Bailey Mrs. Mary
Buckley Mr. E. J. B.
Beach Rev. H. C.
Brouson Rev. O. D.
Buehler Rev. H. G.
Board of Directors of N. Y. J. A.
Bliss Pres. H. S. C.
Bridgman Rev. A. E.
Bulky Mr. C. M.
Boner Mr. John.
Bridgman Mr. S. E.
Bryman Dr. Louis A.
Clatchley Mr. H. G.
Bartholomew Mr. C. O.
Brown Mr. C. G.
Baldwin Mr. C. V.
Boyd Mrs. James
Bailey Mr. C.
Bailey Mrs. M.
Barnes Miss D. M.
Bernant Mr. H.

4.136.175.
229.
14,458. Bromley Mr. A. S. 427.
259.
17. Barrow Mr. James 451.
259. 493.
21.286. Brown Mr. E. S. 456.
263.321.
27199. Brown Prof. W. A. 460.
268.
37. Bailey Mrs. C. E. 464.
308.
45. Beaver Hon. J. A. 498.
310.
79.225-
312.
84/48. 385.799.
322.407.
96.203.260.281.313.482.
352.
122.
360. Bulky Rev. C. A. 492.
144.
374.
182.193.289.
384.
217.252.
386.
223.
414.
224.
409.
225.
410.
422.

Caswell Miss Mary
 Cameron Mr. A. C.
 Camp Mr. George Q.
 Camp Mrs. C. M.
 Cook Mrs. J. L.
 Coffin Mr. H. J.
 Converse Mr. John. H.
 Canterbury Mr. F. R.
 Croman Mr. C. S.
 Carter Mr. R. D.
 Cooke Miss S. J.
 Cummings Mr. George M.
 Clarke Miss L. N.
 Crane Mr. L. D.
 Crote Miss Susan M.
 Coleman Mr. H. C.
 Clark Mr. Walter
 Conway & Curran N.
 Conning Rev. C.
 Conroy Rev. Sidney C.
 Coe Mr. J. L.
 Cole Mr. John. A.
 Carter Hon. H. J.
 Cushman Mrs. W.
 Carter Mr. C. C.
 Clark Rev. A. C.
 Chase Mr. J. L.
 Campbell Miss C.
 Cooper Rev. C. S.
 Day Mr. J. L.
 Canfield Dr. James H.
 Christman Prof. H. C.
 Clark Mr. Dumont
 Chipman Mr. A. L.

H. 68. 143.

183.

12

195.

18. 100.

209. 241.

26.

211.

39.

245.

42. 101. 141. 159. 179. 306.

269.

45. 71.

274

48.

281.

62

325.

64.

357. 420.

84.

364. 394.

117. 118. 201.

380.

123.

382.

131.

403.

155.

414

163. 252.

415.

173. 190. 212. 286. 292. 431.

455.

Campbell Mrs. M. W. 413

Conant Mr. H. J. 457.

| | |
|-----------------------|----------------------------------|
| Dow Mr. F. B. | 51. |
| Lickie Miss C. C. | 88. 105a. 442 , 105a. |
| Devins Rev. J. B. | 94. 394. |
| Danner Mr. W. M. | 149. |
| Dalles Mr. Wm. | 180 |
| Dutta Mr. S. S. | 184. |
| Dennis Rev. Joseph | 200. |
| Driher Pres. Henry S. | 205. |
| Davis Mr. H. J. | 246. |
| Dennis Prof. A. L. P. | 321. |
| Dennison Rev. D. H. | 333. |
| Dwight Rev. F. B. | 359. |
| Dyer Mr. T. A. | 366. |
| Dunby Mr. Chas. | 478. |

| | |
|----------------------|--|
| Earle Rev. R. C. | 19. |
| Evans Mr. T. S. | 22 58.80. 232. 276. 304. 310. 406 |
| Edwards Mr. Boyd | 78. 192. 284. |
| Eckard Rev. J. M. L. | 102. 116. |
| Ellinwood Rev. T. T. | 135. |
| Edmunds Mr. S. R. | 206. |
| Eddy Rev. D. Brewer | 233. |
| Edman Rev. C. P. | 237. 371. |
| Emmet Prof. D. | 291. |
| James Mr. John C. | 293. |
| Eckerson Rev. Frank. | 340 |
| Edman Rev. Albert | 403. |
| Ely Miss E. L. | 426. |
| Ely Rev. J. B. | 483. |

| | |
|-------------------------------------|---|
| Foster Miss ^{Mr} Eugene C. | 3.183.466. |
| Frankhouser Prof. G. A. | 452. |
| Fairchild Mrs. C. A. J. | 38. |
| Fergusson Miss A. P. | 483 |
| Fuller Miss M. B. | 92. |
| X | |
| Fulton Rev. A. A. | 124. |
| Frick Miss | 158. |
| Frost Mr. H. W. | 162. 244 214. 234. 235. 345. |
| Fiske Miss Martha J. | 194. |
| Funk Rev. A. C. | 238. |
| Fine Prof. Henry D. | 298. |
| Farrier Rev. Robert. | 335. |
| Fought Mr. C. F. | 347. |
| Fitch Mr. John F. | 392. |
| Forbes Miss P. E. | 399.486. |
| Fegert Mr. A. G. | 411. |
| Fitt Mr. A. F. | 436. |
| Fernald Rev James I. | 439.468. |
| Fernald Mr. H. P. | 442. |

| | |
|--------------------------|-----------|
| Luthie Rev. Donald | 3. |
| Groves Mr. J. M. | 364. |
| Gates Mrs. L. M. | 15. 134. |
| Gray Rev. James M. | 378. |
| Goldsbury Mr. P. S. | 62. |
| Gross Rev. P. C. | 475. |
| Gurley Mr. J. H. | 91. |
| Gilbre Mr. Chas. W. | 476. |
| Gibson Mr. A. | 113. |
| Gabrial Mr. M. S. | 148. |
| Grant Mr. T. R. | 172. |
| Grant Mr. H. H. | 178. 196. |
| Gillete Mr. T. R. | 220. |
| Gladwin Mr. H. H. | 230. 242. |
| Gaffin Mr. J. H. | 257. |
| Gordon Mr. James M. | 258. |
| Goodman Mr. J. S. | 261. |
| Gillespie Rev. George S. | 288. 419. |
| Groves Mr. J. M. | 290. |
| Gates Mr. Don S. | 291. |
| Gladwin Mr. L. S. | 328. |

| | | |
|-------------------------|---------------|-----------------------|
| Hamilton Mrs. George | 6. | |
| Hodge Mr. L. | 230. | |
| Harris Pres. George | 7. 28. 247. | Hurton Miss A. 478. |
| Hunt (Rev. W. B.) | 242. | |
| Holmes Rev. P. S. | 33. | Hamilton Rev. M. 480. |
| Hollenbeck (Rev. E. F.) | 240. | |
| Hornum Mr. M. M. Wm. | 36. 72. 166. | |
| Honecom Mrs. A. L. | 287. 339. | |
| Hornes Mr. Wm. L. | 61. 346. | |
| Hopkins (Rev. Henry) | 296. | |
| Hotter Mr. Allen | 17. | |
| Hull Mr. D. W. | 331. | |
| Hutchinson Miss J. L. | 70. 465. | |
| Hitchcock (Rev. D.) | 334. | |
| Hilles Mr. C. D. | 77. 106. 450. | |
| Hamlin (Rev. F. S.) | 348. | |
| Harlan Miss (Bertha) | 97. | |
| Hickney (Baker.) | 363. | |
| Hicks Mr. C. | 146. 246. | |
| Hume Mr. E. H. | 396. | |
| Humphrey Mr. J. A. W. | 152. | |
| Hunter Mr. J. C. | 397. | |
| Houghton Mr. James J. | 171. | |
| Holmes Mr. J. M. | 420. 453. | |
| Hammer Miss C. D. | 177. | |
| Harmer Mr. J. C. | 434. | |
| Hayes Mr. C. W. | 186. | |
| Hobbs Mr. J. D. | 435 X | |
| Hicks Mr. H. W. | 194. | |
| Helm Mr. H. W. | 443. 470. | |
| Hill Mr. H. C. | 197. | |
| Hole Miss Mary J. | 456. | |
| Hopkins Mr. J. E. | 148. 388. | |
| Hobbs Mr. H. | 467. | |

Intelligencer The Christiana 69.

Invitation

168.

Joshi Rev. S. L.
Jacks Mr. Noel H.
Jackson Miss Helen
Jacobs Mr. E. H.
Jone (Rev. H. G.
Judson Mr. M. F.
Janvier (Rev. C. A. R.
Jackson Rev. H. C.
Jeffries (Prof. W. V.
Jach Rev. Robert W.
Johnstone Mr. Theodore J.

5.

12.

52.

153.

160.

185.

222.

272. 356. 379.

279.

300. 484.

430.

| | |
|------------------------|---------|
| Kurtz Mr. B. M. | 20. 87. |
| Spindregan Mr. J. H. | 167. |
| Nendrick Miss Eliza H. | 255. |
| Keeler Mr. C. M. | 258. |
| Knott Miss L. A. | 389. |
| Gratzenbach Mrs. L. S. | 364. |

| | |
|---------------------------|-----------|
| Loomis Mr. Roger | 59. |
| Lee (Rev. L. B.) | 74. |
| Letter of Introduction | 87. |
| Loomis Rev. Henry | 128. |
| Logan Mr. Wellington W. | 178. |
| Leland (Rev. L. R.) | 201. |
| Lyons (Rev. J. J.) | 201. |
| Lennington Rev. George C. | 308. |
| Life Miss S. L. | 353. 376. |
| Longee Mr. W. C. | 355. |
| Lynch Mr. Fred. | 428. |
| Lawrence Miss C. H. | 433. |
| Lane Rev. C. has. S. | 479. |

| | |
|------------------------|-------------------------------|
| Meigs Mrs. John | 4. 319 |
| Moore Mr. W. C. | 244. |
| Morgan Miss Marie | 2. |
| Mynick Rev. H. | 311. |
| Meigs Prof. John. | 7. 133. 393. |
| Main Mr. W. W. | 330. |
| Muir Miss A. P. | 19. 476. 484. |
| Merrill Rev. George G. | 380. 424. 481. |
| Mercer Mr. C. C. | 31. 151. |
| Moments Mr. D. | 348. |
| Mott Mr. John P. | 35. 207. 235. |
| Quick Mr. C. C. | 102. |
| Maynard Mr. L. A. | 39. 199. |
| Corrigan Mr. H. | 425. 441. |
| Miller Rev. J. P. | 42. 46. 248. 249. 271. 282. 4 |
| Miller Miss J. A. | 324. 409. 431. 452. 4 |
| Marsh Mrs. W. | 53. |
| Miller Miss Sarah H. | 435. |
| Moody Mr. Still P. | 73. 176. 297. 336. 440. 493. |
| Miller Mr. H. H. | 447. 477. 481. |
| Murray (Rev. J. H.) | 127. |
| Mineas Mr. M. P. | 471. |
| Miller Miss E. C. | 156. |
| Marquis Rev. Wm. H. | 480. |
| Moody Mr. U. L. | 172. 294. |
| Mullins Pres. E. Y. | 491. |
| Mateer Miss Jean | 221. |
| Morse Mr. W. A. | 254. 294 |
| Moran Mr. Hugh H. | 259. |
| Melrose Mr. J. A. | 265. |

| | |
|-------------------------------|----------|
| Mc Harg Mr. H. S. | 24. |
| Mc Nair Mr. C. O. | 469. |
| Mc Murrie Miss Clara | 43. |
| McC. Gill Mr. S. W. | 488. |
| Mc Murrie (Rev. E. S.) | 85,119. |
| Mc Pherson Rev. S. J. | 95,472. |
| McC. Conaway Mr. S. | 112. |
| McC. Thamy Rev. Hugh | 120. |
| Mc Nair (Rev. C. W.) | 129. |
| Mc Lee (Rev. C. B.) | 188,326. |
| Mc Cook Col. J. J. | 226. |
| McC. Comb Miss Laura B. | 268. |
| McC. Dowell Rev. John | 283. |
| McC. Affie (Rev. C. S.) | 307. |
| Mac Donald Rev. C. C. | 312. |
| McC. Wiers Rev. L. S. | 448. |
| McC. Ewen (Rev. A. J.) | 451. |
| McC. Pherson Rev. H. | 462. |
| McC. Carter (Rev. Mrs. D. B.) | 463. |

Nicholls Miss Edith A.

192 278.

Norton Mr. W. J.

255.

North Miss Elizabeth

317.

Al Nichols. (Rev. Harry R.)

317.

Norris Mrs. John L.

349.438.

North Rev. F. M.

444.

Oldham Rev. J. L.
Cyphent Mr. Murray

137. 187. 220. 280.
437.

| | |
|--------------------------|--------------------|
| Pullman Ticket Agent | 8. 69. |
| Peters (S. Co. Ohio) | 546. |
| Plumtree Mrs. | 10. |
| Plumb Rev. Albert H. | 375. |
| Pierson Mr. D. L. | 23. 114. 332. 479. |
| Pittkin Mr. H. A. | 447 417. |
| Porter Mr. J. C. | 245 318. |
| Price Rev. C. C. | 495. |
| Perry Mr. J. D. | 55. 285. |
| Perry Mr. Joseph E. | 76. |
| Peters Rev. A. | 111. |
| Pierce Dr. L. F. | 113. 175. |
| Pettit Mr. H. C. | 126. |
| Press Office "C. J." | 132. |
| Princeton Inn | 153. |
| Polkison Mr. C. G. | 174. |
| Paul Mr. Frank A. | 191. 216. |
| Pease Furnace Rev. C. J. | 205. |
| Pierson Rev. Isaac | 264. |
| | 316. |
| | 354. |

| | |
|------------------------------------|-------------------------|
| Robinson Rev. G. F. | 12 |
| Foreman Mr. Henry S. | 354. |
| Robinson Mr. Charles G. | 232. |
| Rogers Rev. R. A. | 377. 404. 449. |
| Rice Mrs. Mary (C.) | 53. |
| Register W. Union Theo. Sem. | 383. |
| Robinson Mrs. E. J. | 54. |
| Robinson Mrs. G. F. | 386. |
| Rankin Mr. W. W. | 56. 109. 231. 427. 463. |
| Raymond Rev. W. R. | 389. |
| Redden Mr. Wm. (P.) | 83. |
| Richardson Mrs. J. U. | 487. |
| Rossiter Rev. J. W. | 128. |
| Robertson Mr. J. S. | 199. |
| Revells & Fleming, St. | 111. 211. 362. |
| Reed Mr. Charles. | 213. |
| Regarding a quiet day at Princeton | 227. |
| Reeve Miss Margaret M. | 209. |
| Robinson Prof. Geo. L. | 277. |
| Robbins Prof. J. V. | 272. |
| Robinson Rev. W. C. | 351. |
| Ross Rev. Jas. | 346. |
| Richardson Rev. H. M. P. | 247. |

Stearns (Rev. A. C.
Stimson (Rev. A. C.
Springer (Rev. John
Simpson (Rev. J. R.
Shaw Mr. Wm.
Smith Mr. S. T.
Stevenson (Rev. J. P.
Stewart Mr. Wm. J.
Speer (Rev. J. W.
Sage Miss Pauline
Storey (Rev. Miss S. M.
Sunderland Miss M. M.
Smith Miss E. E.
Stevenson Mr. Andrew
Store (Rev. John J.
Smyth Mr. S. S.
Cairer (Rev. J. S. C.
Sanford (Rev. E. J.
Scott Mr. J. J.
Strong (Rev. E. E.
Stanley Mr. J. S.
Styer Miss Helen M.
Cheaman Miss M. H.
Speer Mr. Victor
Scott (Rev. J. S.
Stahl Mr. Wm.
Stogdun (Rev. William J.
Searer (Rev. J. S.
Stevenson (Rev. J. R.
Sherlock Mr. L.
Sperman (Rev. J. S.
Smith Mr. J. S.
Seal (Rev. Wm.
Smith Mr. Arnold

6. 303. Suter Mr. 470.
260. 284.
20. Shocum Miss Agnes 497.
270.
34. 424.
286. 416. Sanford Mr. J. W. 412. 418.
38. 359.
295.
47.
296. 315. Thurman Pres. J. G. 410.
51.
301. Sinclair Miss M. J. 411.
37.
302a. 327. 387. 490.
60. 311. 328. 358. 487.
490. 302 b.
65. 448. Sware Mr. J. 421.
308.
81. Skidmore Mr. L. W. 440.
315.
82. Sware Mr. J. 434.
344.
98. Smiley Mr. J. E. 467.
36.
103. Staley Dr. J. J. 489.
372.
166. Simons Mr. L. S. 496.
377.
304.
380. 381.
204.
382.
223. 262.
402. 424.
267.

| | |
|-----------------------|---|
| Jannahill Miss Mary | 9. |
| Trumbull Mr. G. G. | 40. 44. 63. 73. 111. 187 218. 244. 258. |
| Tibbitts Mr. F. B. | 282. 328. 406.
40. |
| Turner Mr. F. C. | 7198. |
| Thornton D. M. Esq. | 121. |
| Tappan Dr. D. S. | 131 |
| Taylor Mr. S. Earl. | 210. 285. |
| Thomas Pres M. C. | 267. |
| Taylor Mr. Arthur L. | 490 302. 6. |
| Tift Mr. Henry N. | 317. |
| Taylor Dr. J. H. | 446. |
| Talmadge Mr. Henry G. | 462. |

| | |
|----------------------|---------------------------|
| Varley Miss Alice M. | 30. #85 . 100. |
| Vail Miss Laura A. | 46. |
| Vickrey Mr. T. V. | 154. 275. |
| Vain R. Drew | 55. |
| Vance (Rev.) John P. | 322. |

| | |
|-------------------------|---------------------|
| Weatherford Mr. W. D. | 14. |
| White Mr. Frank | 345. |
| Wingfield Rev. J. D. | 17. 391. 412. |
| Wells Prof. A. R. | 398. |
| Wood Mr. J. W. | 18. 362 |
| Woodcock Mr. J. W. | 422. |
| Winkhaus Miss M. H. | 56. |
| Waddell (Rev.) M. | 433. |
| Westover Mr. Oscar | 57. |
| Walker Mr. J. S. | 437. |
| Ward Miss R. P. | 58. 239. |
| Webb Miss Elizabeth May | 446. |
| Woodman Miss Sophie | 92. 80. 247. |
| White (Rev.) W. W. | 457. |
| Winnard Mr. Luther | 138. 280. 273. 441. |
| Wason (Rev.) Robert | 459. |
| Wright Mr. Henry | 147. |
| Harbison Mr. J. A. | 485. |
| Wilson Mrs. | 152. 261. 384. 398. |
| Wright Mr. Ellen | 483. |
| Wobles Miss Mary C. | 176. |
| Wood Mr. Edward C. | 188. |
| Willis Mr. E. M. | 243. |
| Wilkins Mr. M. | 257. 265. |
| Wilder Mr. Robert O. | 314. |
| Witter Rev. W. E. | 323. |
| Wells, Mr. Ralph, | 338. |
| | 368. |

Yosef Yoel.

28.

Lewner - Per. 11. M.

157. 398 418.

I
M.

✓
June 12, 1905.

Mrs. John Meigs,

Pottstown, Pa.

My dear Mrs. Meigs:

I have made inquiries as to shipping the Graphophone to Tokyo. Wells Fargo Express would send a box, six cubic feet, from New York to Tokyo for \$7.50. This would not include any charge for duty in Japan, but doubtless the Young Men's Christian Association people there could arrange to get it in duty-free. If the box is only five cubic feet, it would cost by express \$4.00. This probably would be the quickest way of sending it.

We would be glad to ship the box with some one of our own shipments to Japan in which case, the cost would be about \$6.00, on the assumption that the box would be about six cubic feet and have the insurance and duty levied on a valuation of about \$25.00.

If there is anything that we can do in the matter, please let me know. Of course the box ought to be securely packed so that no damage would be done to the machinery in transmission.

Will you please ask Miss Johnson to drop me a note, giving the dates of the next college year, including the vacation periods?

With much love to you and the Professor,

Your sincere friend,

June ninth, 1905.

Miss Maria Morgan,

80 Willoughby Street,

Brooklyn, N. Y.

My Dear Miss Morgan:-

Mrs. J. W. Simonton, of Harrisburgh, Penna., is looking for a companion for the summer. She is an elderly woman, of perhaps sixty years of age, not an invalid, but not robust, and desiring a companion who would be able to give helpful, and I judge not heavy service. Mrs. Simonton expects to spend the summer at Diamond Pond, New Hampshire, a Camp north of the White Mountains. I go there each summer, and think you would find it one of the most healthful and beautiful and pleasant places you have ever been to. Mrs. Simonton would meet all the expenses of railway journey and board, but would, her daughter tells me, like to find a companion who would be willing to go with her for this remuneration alone, without salary. Would you feel able and willing to respond to such a call? If you would like to take up the matter, will you not write to Mrs. Simonton, whose address is North Front Street, Harrisburgh, Penna.

Mrs. Shedd has often spoken about you to Mrs. Speer and me, and we have made a number of inquiries regarding the possibility of some positions for you. Perhaps this summer experience might open up some acquaintances and opportunities that would be of service to you.

Please let me know if I can be of any help at any time.

Very sincerely yours,

M.

June 12, 1905.

Mr. Eugene C. Foster,

1031 Walnut Street,

Philadelphia, Pa.

Dear Sir:

Your note of June 8th. has been received. I do not have any photographs of myself and have had no cabinet photographs taken for five or six years. These were very poor ones and I have no copies of them.

Regretting that I cannot comply with your request, I am

Very sincerely yours,

M.

June 12, 1905.

The Rev. Donald Guthrie, D.D.

800 Park Avenue,

Baltimore, Md.

My dear Dr. Guthrie:

I shall be very glad to act as an advisory member of the Board of Directors of the Deaconess Home and Training School, and shall be happy to be of service to the School in any way that I can.

Very cordially yours,



June ninth, 1905.

Mrs. Gilbert A. Beaver,
Care Mrs. J. W. Simonton,
North Front Street, Harrisburgh, Penna.

My Dear Anne:-

Emma has asked me to write in reply to your note of June second, regarding a Miss Maria Morgan, who might be just the person your Mother is looking for for the summer. Miss Morgan is an English woman, who went out to Persia some years ago in connection with an English Mission there, and then became connected with our Mission, where she was highly esteemed. Her health broke down, and she has been in this country I think for about sixteen years. I have never met Miss Morgan, but a number of our Persia missionaries have spoken about her very cordially. She has been in need I think, and is anxious to do any work. I do not know how strong she is, or whether she would be able to do what your Mother would want, but I judge from what has been said that she would. I shall write to her, telling her of your need, and asking her to send a note to your Mother in case she would be able and willing to take the position.

I envy you and Gilbert the privilege of going up to Camp immediately after Northfield. We hope to get there in due time.

With much love to Gilbert and yourself.

Your sincere friend,

✓

June 13th, 1905.

Mr. S. L. Joshi, M. A.,

499 West 128th Street, City.

My Dear Mr. Joshi:-

I am sorry to have to say that I must leave town to-morrow, and though I shall be here for a few hours on Thursday, I shall then have to go away for a fortnight, and shall not get back until the first week in July. I would ask you to come and lunch with me on Thursday, but I have already made another engagement for that hour, and conferences in the morning and other work will I am afraid, fill up the day. We could have a few minutes' talk together, however, if you could meet me here about four o'clock. We could go down to the Ferry together, and if you would, you could come with me on the Ferry to Jersey City. This would give us about three-quarters of an hour together.

Very cordially yours,

Frederick J. [illegible]

June 13th, 1905.

Mrs. George Hamilton,

Tenafly, N. Y.

My Dear Mrs. Hamilton:-

I enclose herewith a copy

of the verse which you wished.

Very cordially yours,

Wm. E. Stearns

June 13th, 1905.

Principal Alfred E. Stearns,

Andover, Mass.

My Dear Principal Stearns:-

I thoroughly appreciated your very

kind note of June third, and I hope I do not need

to say that there is nothing I can do for the

school that I would not gladly do. I have not

been able yet, however, to work out next year's

appointments beyond November, and shall not be

able to do until next month. I shall try to

let you know them, if that will not be too late,

whether it will be possible for me to come up

to the Academy for some Sunday in the spring.

With kind regards to Mrs. Stearns and yourself,

Very sincerely yours,

June 13th, 1905.

President George Harris,

Amherst, Mass.

My Dear President Harris:-

I thank you very much for your kind invitation to come to Amherst for September 24th. I hope that it may be possible for me to come that day, but I am afraid I can not answer definitely until the first week in July. If that will not be too late, I can let you know at that time I hope.

Very sincerely yours,

June 13th, 1905.

Professor John Meigs,

Pottstown, Penna.

My Dear Professor John:-

Thank you very much indeed for your kind note of yesterday with its generous enclosure.

I did very greatly enjoy the day, although my heart was going out so much to those boys, that I didn't sleep very much on the sleeper back to New York.

I sent Mrs. John yesterday, some information she wanted about shipping a gramophone to Japan, and asked her whether Miss Johnston could let me know the dates of the next school year, the beginning and the closing and the vacation times. Perhaps she could add any Sundays that were not planned for otherwise.

I do hope that you may get off this week, and with much love to you and Mrs. John, I am,

Very affectionately yours,

M.

✓
June 12, 1905.

Pullman Ticket Agent,
Grand Central Station,
New York City.

Dear Sir:

Is it possible to engage so long in advance a stateroom and one section on the night train to Pabys, leaving New York on the evening of July 31st? If such reservations cannot be made so long in advance, will you kindly tell me when they can?

Very truly yours,

0

M.



June 13, 1905.

Miss Mary Tannahill,

The Albany,

224 West 52nd Street,

New York City.

My dear Miss Tannahill:

The enclosed
check should have gone to you ten days
ago, but got lost in an overflowing
letter-basket in my office. Thank you
very much for your kindness.

Very sincerely yours,

✓
June 13th, 1905.

Mrs. Plumptre,

55 Drummond Street,

Montreal, Canada.

My Dear Mrs. Plumptre:-

Your very kind note of May 26th came several days ago, just as we were beginning our Annual Conference with new Missiaries, which has taken up most of our time since, and delayed all correspondence. I write now, at the first opportunity, to say that I wish very much I could accept your invitation for next February, but that it will not be possible for me to come. If I can get away from my work here at all then, I shall have to go to the Student Volunteer Convention at Nashville, which will take quite a little time, and the ordinary appointments for meetings near at hand will take all the rest of the time that I can hope to get away from the offices.

Very much regretting that I shall not be able to accept, and with kind regards to you from Mrs. Speer and myself, I am,

Very sincerely yours,

P. S. I think that Mrs. Speer will be at Silver Bay. I know she would hope that she would have the pleasure of seeing you there.

✓
June 13th, 1905.

Miss Mary Caswell,

Wellesley, Mass.

My Dear Miss Caswell:-

I am very sorry that I still can not say anything definite about either October or December. We have not received yet from the Stated Clerk of our General Assembly, the list of times and places of Synod meetings, and until we get that, cannot plan itineraries for October. I think, however, as perhaps I said before, that it is extremely doubtful that I shall have a Sunday free in October, and I do not think it would be right to ask you to keep these Sundays unengaged any longer. I shall let you know as soon as we get the list to which I have referred, and can make our plans for the fall, whether there is any Sunday in October or December in which I can come, and then if that Sunday is not otherwise arranged for, we can settle upon it. Otherwise, perhaps we can arrange for some Sunday later in the year.

Very cordially yours,

June 13th, 1905.

The Rev. G. F. Robinson,
Young Men's Christian Association,
Pittsburgh, Penna.

My Dear Mr. Robinson:-

I received a few days ago, in the midst of an annual Conference which we have with our new missionaries, your letter of May 19th, which had been sent to the Assembly. I can arrange to come to Pittsburgh for November fifth, and shall be glad to speak at your Anniversary Meeting that day; and if desired, at the afternoon meeting of the Railroad Department. I have held the first Sunday in November for you, in view of the impossibility of my making the change which you desired to the second Sunday.

Very sincerely yours,

June 13, 1905.

Mr. Noel H. Jacks,

Drawer 10,

Hartford, Ct.

My dear Mr. Jacks:

I am sorry to have to say that I do not think it will be possible for me to spend any Sunday in Hartford this coming Fall or Winter. There are very few Sundays in the year after all and I have to spend them all either among our own churches, or in the work of the colleges.

Very sincerely yours,

✓
June 13, 1905.

Mr. George R. Camp,

513 South 45th Street,

Philadelphia, Pa.

My dear Mr. Camp:

Your kind note of the 29th, came just at the beginning of our annual Conference with our new missionaries, which explains my delay in answering it. I cannot say now whether there will be any possibility of my coming to St. Paul's for a Sunday this Fall or Winter. It is astonishing how few Sundays there are when you come to try to put into them three or four times as much work as they will hold, but I shall keep your kind invitation in mind, and if I find that it will be possible for me to come over for a Sunday, and if not for a Sunday for any Wednesday, I shall let you know later.

Very cordially yours,

11

June 13th, 1905.

Mr. S. Edgar Briggs,

158 Fifth Avenue,

New York City.

My Dear Mr. Briggs:-

I enclose herewith a note which will explain itself.

That is, all but the signature. The name is R. Cobden Earle.

I have no objection whatever to this use of the chapter from "A Young Man's Questions." Indeed, if such a use is likely to accomplish good, the wider the circulation the better; and I have replied to Mr. Earle that the copyrights belong to you, but that I would ask you to answer his letter of inquiry. I should think that the circulation of this chapter as a leaflet would help the circulation of the book in England, if the Tract Society would print a notice of the book on the leaflet, as doubtless they would be willing to do. Will you please answer the letter?

Very cordially yours,

June 13, 1905.

Mr. W. D. Weatherford,

Asheville, N.C.

My dear Mr. Weatherford:

Thank you very much for your note regarding the Conference and what you want on Saturday evening. I do not think I have been accustomed to go at the things that you want struck, in the direct and detailed way in which Mr. Mott takes them up, but I shall be glad to try to meet your wish.

Very cordially yours,

June 13, 1905.

A.

Mrs. L. M. Gates,

19 & 20 Williams Building,

Scranton, Pa.

My dear Mrs. Gates:

Your kind note of May 30th. came just at the beginning of our new missionaries' Conference.

I cannot speak with absolute definiteness now for the end of next October, but I think it will be entirely unlikely for me to be at the Convention in Scranton. I shall almost certainly have some engagement that Sunday, which will take me elsewhere. Furthermore, October is the month of our Synod meetings and I have had to decline all other engagements for that month, lest they should interfere with our plans for the visitation of the Synods.

Very cordially yours,

M.

June 13, 1905.

Professor O. E. Brown, A.M., D.D.

Nashville, Tenn.

My dear Dr. Brown:

I do not know who has been so kind as to send me a copy of your most helpful address on Paul as a Missionary, but I want to thank you for the address and to ask you to thank whoever may have been good enough to send me the same, and also Bishop Hendrix's address.

I hope that you are to be at the Asheville Conference this year, and in that case, I shall see you before this letter reaches you.

With kind regards,

Very sincerely yours,

M.

June 13, 1905.

Mr. Frank White,

164 La Salle Street,

Chicago, Ill.

My dear Mr. White:

Your kind note of June 3rd. with its enclosed check was received several days ago. On the occasion of that visit to Chicago, I also spoke to McCormick Seminary and they gave me something toward expenses, and I should have been glad to have been of any service possible to you, even if you had not been in a position to do anything. I am very grateful to you for the check so generously enclosed.

Our interest in and sympathy with the work of the Union continues unabated, and we rejoice in all its prosperity.

Hoping to see you sometime again in the not distant future, I am
Very cordially yours,

M.

June 13, 1905.

Mrs. F. G. Cook,

49 Garden Street,

Cambridge, Mass.

My dear Mrs. Cook:

I am very much afraid

that it will not be possible for me to accept your kind invitation to speak at the Convention in Lowell next February. I have no prospect of being in New England for either the third or fourth Sunday and I shall be sure to have other engagements here, that would make it impossible for me to get up to Lowell for the Friday evening meeting. I am sorry, as I should like to come if I could.

Very cordially yours,

M.

June 13, 1905.

Professor Amos R. Wells,

Tremont Temple,

Boston, Mass.

My dear Professor Wells:

I have written

two articles on Dr. Trumbull, one in Forward and another in the Intercollegian, but shall be very glad to write another for the Christian Endeavor World, if you desire; only I should not want to write it, under the impression on your part that I had not already written something about him.

Very cordially yours,

June 13th, 1905.

Miss Agnes P. Muir,

Englewood, New Jersey.

My Dear Miss Muir:-

I received some time ago your kind note about my speaking at some missionary meeting of the West Side Christian Endeavor Society. If some time next fall or winter I find I can have a Sunday evening free to come there, I shall be glad to let you know; but I am away from home almost every Sunday, and now and then when I do get a Sunday at home, I am selfish enough to want to spend it with my family.

Very sincerely yours,

June 13th, 1905.

The Rev. E. Cobden Earle, B. A.,

65 St. Paul's Churchyard,

London, E. C., England.

Dear Sir:-

Your kind note with reference to the printing of "The Layman's Duty to Propagate His Religion" as a leaflet for general distribution, has been received. I should have no objection whatever to this use of the chapter. If such a circulation would accomplish good, the more the better. The copyrights, however, are the property of the Fleming H. Revell Co., 158 Fifth Avenue, N. Y. City. I am sending your note to the New York Manager, Mr. Briggs, asking him to reply directly to you.

Very sincerely yours,

June 15th, 1905.

Mr. R. H. Kurtz,

Cleveland, Ohio.

Dear Sir:

I shall be very glad to write the article you wish for the Bulletin of the Board of Christian Missions, the Effect of the Present War on Asiatic Missions, and shall try to send it to you some time in July.

Very sincerely yours,

June 15th, 1905.

Principal John Springer,
Presbyterian College,
Montreal, Canada.

My Dear Mr. Springer:-

Your very kind invitation to me to give a short course of lectures on Missions some time this coming fall or winter, in the Presbyterian College, Montreal, Canada, is most welcome. I thoroughly appreciate the honor of the invitation, and should be glad to accept it if there were any possibility of my doing so, but I do not believe that I shall be able to get the time away from my work here and in our own Church here, which would be required. If some other year you might wish me to come, and I could then to get away, I should be most happy to do so.

Very sincerely yours,

M.

June 13, 1905.

Mr. S. E. Bateman,

Young Men's Christian Association,

15th & Chestnut Sts.,

Philadelphia, Pa.

My dear Mr. Bateman:

Our annual Conference with new missionaries was in session when your letter was received, and that has blocked all correspondence. I am sorry to have to say that it will not be possible for me to accept your invitation for November 26th. or for any other Sunday, either in October or November. As to December, if I can come to Philadelphia at all for the first or second Sunday in the month, it will be to the University. I have a letter from Mr. Evans regarding my coming for December 10th. I am writing to him, telling him that it is impossible for me to say now whether I shall be able to come for that day or not, but that I shall let him know as soon as I am able to give a definite answer. If I can come then and you can arrange to combine with him, so that I can be free to speak for your meeting in the evening, I shall of course be glad to do so. My impression is that he will want to have the meetings both morning and evening, as usual, at the University.

Very sincerely yours,

M.

June 13, 1905.

Mr. Thomas S. Evans,
Houston Hall,
Philadelphia, Pa.

My dear Tom:

I am sorry to have been so slow in answering your two letters, but you got what was being dished out to every one, and I have a big pile still behind, which will weigh heavily on my conscience as I go away for some of the Summer Conferences this week.

I cannot say now anything definite about Sunday, December 10th., but I can let you know, probably within a few weeks whether there is any possibility of my being able to come then.

I have a letter from Bateman about some theatre meetings he is planning for November and December, and I have told him that I could not come for a Sunday in November, and that if I could get over at all in December, it would be to the University, and also that if I was to speak to any theatre meeting in the evening, it would have to be by arrangement with you.

Very cordially yours,

M.

June 13, 1905.

Mr. Delavan L. Pierson,

44 East 23rd Street,

New York City.

My dear Del:

I would have answered your note of May 26th. before, but everything has been blocked by our new missionaries' Conference. Thank you very much for the enclosed check.

I have looked over the other articles on Missionary Calls with much interest. I think it is a good subject to ventilate, to get past the vocabularies to the underlying realities.

Yes, I ~~did~~ have under way an article for you on the White Peril in Mission Fields. I had it all blocked out when I heard that Mr. Gulick was writing a book on that subject, and I thought there was no use going on with the article until I saw his coming book. But lo, his book does not deal with it at all, but only with the Russia-Japan war. What I had hoped it was going to do was to handle in a strong, broad way, with sufficient generalization and yet with sufficient detailed facts, the great question of the peril of our moral, and political, and industrial and intellectual invasion of the East, dealing with the immense work of destruction that is going on in the midst of which, the missionary enterprise is the saviour of life and creative up-building.

Let me think a while over the other job you block out for next January. It is an interesting subject, but it ought to be done carefully.

Very affectionately yours,

June 15th, 1905.

Mr. A. W. Pitkin,


124 Riverside Drive, N. Y. City.

My Dear Mr. Pitkin:-

I take the liberty of introducing herewith the Rev. Edward Hume, of Bombay, India, and his son, Mr. Robert Hume. I would not venture to do a thing of this sort save in extraordinary circumstances; but there is nothing I should not wish to do for Mr. Hume, who is one of the choicest missionaries of the Congregational Church, and for his son, whom I knew as a student at Yale. The son is leaving college and seeking work, and I have wondered whether you would be able to send him to some one of the works under your direction, perhaps to Schenectady, where I could ask Dr. Stevenson to take a special interest in him. He is an exceedingly bright, capable fellow; able I think to do anything that he puts his hand to, and I believe a solid and reliable man. It seems to me an opportunity to start a young man of the kind an older man, who has succeeded, would be glad to help to his beginning.

Asking your pardon for intruding in this way, and yet feeling sure that this is one of the attempts at help that one ought to make and be thankful for the opportunity of making, I am,

Very sincerely yours,



June 15th, 1905.

Mr. A. W. Pitkin,

194 Riverside Drive, N. Y. City.


My Dear Mr. Pitkin:-

I take the liberty of introducing herewith the Rev. Edward Hume, of Bombay, India, and his son, Mr. Robert Hume. I would not venture to do a thing of this sort save in extraordinary circumstances; but there is nothing I should not wish to do for Mr. Hume, who is one of the choicest missionaries of the Congregational Church, and for his son, whom I knew as a student at Yale. The son is leaving college and seeking work, and I have wondered whether you would be able to send him to some one of the works under your direction, perhaps to Schenectady, where I could ask Dr. Stevenson to take a special interest in him. He is an exceedingly bright, capable fellow; able I think to do anything that he puts his hand to, and I believe a solid and reliable man. It seems to me an opportunity to start a young man of the kind an older man, who has succeeded, would be glad to help to his beginning.

Asking your pardon for intruding in this way, and yet feeling sure that this is one of the attempts at help that one ought to make and be thankful for the opportunity of making, I am,

Very sincerely yours,

Robert E. Appleton



June 15th, 1905.

Mr. John H. Converse,

Baldwin Locomotive Works,

Philadelphia, Penna.

My Dear Mr. Converse:-

I take the liberty of introducing herewith, the Rev. Edward Hume, of Bombay, India, and his son, Mr. Robert Hume. I would not venture to do a thing of this sort save under extraordinary circumstances, but there is nothing I should not wish to do for Mr. Hume, who is one of the choicest missionaries of the Congregational Church, and for his son, whom I know as a student at Yale. The son is leaving college and seeking work, and I have wondered whether you would be able to send him to some one of the works under your direction. He is an exceedingly bright, capable fellow, able I think to do anything that he puts his hand to, and I believe a solid and reliable man. It seems to me an opportunity to start a young man of the kind an older man, who has succeeded, would be glad to help to his beginning.

Asking your pardon for intruding in this way, and yet feeling sure that this is one of the attempts at help that one ought to make and be thankful for the opportunity of making, I am,

Very sincerely yours,

Robert E. Hume



June 16th, 1905.

Mr. John J. Brant,
Grand Central Station,
New York City.

Dear Sir:-

Your card of yesterday, to Mr. Speer, in regard to reserved section on Car No. 55, for July 31st, is received. Mr. Speer has left the city to be gone for about ten days. If it is desired now, I will send you a check for the \$11.00, but if it will do as well to wait until his return, I will see that your card has his attention immediately upon his return. If you do not reply I will know that the letter is sufficient.

Very truly yours,

Secretary for Mr. Speer.



June 19th, 1905.

Ycek Yoseph, M. D.,

113 Garfield Place,

Cincinnati, Ohio.

Dear Sir:-

Mr. Speer finds that his train from the South on the Queen and Crescent, is due in Cincinnati at 8-15, to-morrow morning, instead of 7-15, as he wrote you the other day, and that he will have to take the 8-30 train for Chicago, if the train from the South is on time and will admit of this.

Very truly yours,



June 16th, 1905.

Mr. Fred H. Andrews,

Plainfield, New Jersey.

My Dear Fred:-

I am sorry to have missed seeing you, but glad to know that they are thinking of Knapp at West Point. He is Dr. Richards' assistant, you know, and you could find out all about him from Dr. Richards, and have anything done about it through Dr. Richards.

I was away all day yesterday at Wallealee. My office tried to get you on the telephone, but failed.

Knapp strikes me as a very good man for West Point, although if he is to go there, he ought to go to Northfield, and trim into the college work a little more.

I saw Titus Tuesday evening in the Erie Station in Jersey City. He said that Chaplain Brown, who was with the Rough Riders, is up there now, and making a fine impression.

I return Mr. MacFarland's letter, and have sent Josh Mills letter back to MacFarland.

I am leaving to-day for Asheville and Lake Geneva, but hope to see you soon after getting back, either here or at Northfield.

Very affectionately yours,

W. R. H. L. D. M.

✓
June 16th, 1905.

Miss Alice Varley,

East Northfield, Mass.

My Dear Miss Varley:-

I enclose herewith a few
book reviews. If you can get me Clement's
"Christianity and Modern Japan," published by
the American Baptist Publishing Society in Phil-
adelphia, I should be glad to review it. And
also Walliston's "The Sword of Islam," published
by Sutton.

Very cordially yours,

June 16th, 1905.

✓
The Rev. W. H. Adams,

Tanworth, Ontario, Canada.

Dear Mr. Adams:-

Your very kind note of June
12th was received yesterday. I shall look forward
with pleasure to meeting you at Toronto, and any of
your boys who may be with you.

With gratitude for your kind words, and rejoic-
ing if anything I have written has been of help to
your boys, I am,

Very sincerely yours,

✓
June 16th, 1905.

Mr. E. C. Mercer,

P. O. Box 1599,

New York City.

My Dear Mr. Mercer:-

I think that the best times to go to Northfield, are either during the Students' Conference which begins on June 30th, and lasts for nine days, or at the General Conference for Christian Workers in August, which begins the first week and lasts a fortnight or more. I should think that perhaps the first of these Conferences might be the better one for you to attend, but I am not sure.

The most pleasant place to stay is the Northfield Hotel. Besides that there are a number of good boarding houses, and of course there are the Seminary buildings. In the latter you would be right among the students at the first Conference, or among the general attendants at the second. Mr. Ambert G. Moody is the right person to write to for the second Conference or for the hotel or for the boarding houses. If you would like to go to the first Conference, and be among the men, I think you could arrange it by either calling up or writing to the College Department of the International Young Men's Christian Association, 3 West 29th Street, N. Y. City. I am so glad that you can go, and am sure that whenever you go and wherever you stay, you will like it and be helped by it.

Very cordially yours,

Robert C. Stearns

✓
June 29th 1905.

The Rev. Charles E. Robinson, D. D.,
The Vale Cottages,
Block Island, R. I.

My Dear Uncle Charlie:-

I have been away for a fortnight, at Student Conferences and the Sunday School Convention in Toronto, and only returned to my office this morning. I read your note through among the very first after coming to the office, and had an opportunity this morning to give your name to Mr. Randolph of Dr. Erdman's church in Morristown, which wants a preacher for July ninth.

No, I didn't do it at all. It was Mr. Smith who did it. I might have written dozens of reviews of your little book on Dr. Babcock, and there never would have been any trouble with Scribners, if it hadn't been for Mr. Smith. And yet, in another sense, it was Mr. Briggs who did it, because I didn't write that note for use on the book, if I remember rightly, but as book notice for the Record of Christian Work, where it would have been peacefully buried, had it not been printed on the cover of the book.

I hope that you and dear Aunt Clara will have a thoroughly good rest this summer, and with a great deal of love from us both, I am,

Very affectionately yours,

✓

June 29th, 1905.

The Rev. Richard S. Holmes, D. D.,
214 South Fifth Street,
Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Holmes:-

I just returned to New York to-day. I received a letter from Mr. Shaw with reference to a memorial building in honor of Dr. Clark, a month ago. I was very busy for two weeks after receiving it, and then went away for an absence of a fortnight, and have not been able to answer it until to-day. I enclose herewith a copy of my reply for your confidential information in reply to your inquiry. I do not care to be quoted in connection with the matter, and am sorry Mr. Shaw asked me for my opinion.

Very cordially yours,

Richard S. Holmes

✓
June 29th, 1905.

Mr. William Shaw,

Trueman Temple,

Boston, Mass.

My Dear Mr. Shaw:-

Your letter of May 26th, with reference to a memorial to Dr. Clark, signalizing the twenty-fifth anniversary of Christian Endeavor, was received some weeks ago. I had not meant to delay so long replying, but Conferences of one sort and another, and a long absence from the city, from which I only returned to-day, have prevented my answering earlier.

I am sorry you have asked my opinion, because once before I had a somewhat similar inquiry from you, and I had conscientiously to reply in such a way that must have been disappointing to you; and this reply must be of the same character.

I have much esteem for Dr. Clark, for his good spirit, his good sense, and his devotion. But I have no enthusiasm whatever for memorials to living persons. I do not feel called upon to criticize them, in view of the contrary opinions of many good people; but I have a number of whims and prejudices of my own, and this is one of them.

Very sincerely yours,

June 30th, 1905.

Mr. John L. Hunt,

East Northfield, Mass.

My Dear Mother:-

I got back yesterday, from a two week's trip, covering Asherville, Lake Geneva, Lakeside, and the Sunday School Convention in Toronto, and I go up to-night to Silver Bay. I have had a good time, and look forward with much hope and prayer to Northfield. I have been away so much, however, that I am afraid I cannot get up in time for the evening meeting next Wednesday. Unless you hear from me to the contrary, I shall not come up until a late train next Wednesday afternoon, reaching Northfield about ten o'clock. I can stay over until Friday noon.

I do not remember whether I spoke to you about a little book we are getting out, entitled "Counsel to New Missionaries from Old Missionaries of the Presbyterian Church." I remember speaking to Turner about it, I believe, and I know to Mr. Beach. I was wondering whether the Student Volunteer Movement would want any copies of the little book. It is all set up in type now, and we are ordering about three thousand copies for ourselves. The type will then be destroyed, and it will not be possible for anybody to get any copies of it; but we have thought that perhaps the Movement would want some now, and if so you could get them printed while the type is still standing. With this in view, we sent a copy of the proof up to the offices for Mr. Turner to see, but it was returned with the statement that he had gone into the woods. We ventured to send the material after him, however. This was done while I was away. It might just as well have been sent to Mr. Beach; but it will take none of Turner's time, and a single word will indicate whether you want the printer to strike off any copies for you, or to break up his type.

Very affectionately yours,

June 30, 1905.

Mr. M. M. Hartshorn,
120 Boylston Street,
Boston, Mass.

My Dear Mr. Hartshorn:-

I have been away from New York for a fortnight, at various Conferences, going last to the Convention at Toronto, and only received your letter of June 15th on my return to New York yesterday. My last appointment before going to Toronto was at Lakeside, Ohio, a good deal nearer than New York, but I was unable of course to take advantage of any reduced railroad rates for a round trip. My total expenses were \$23.65.

I trust that the Convention accomplished the desired ends.

I was glad that the Program Committee gave the last evening to the missionary enterprise. I wish in planning the program for Louisville, an evening might be given as was done at Toronto, and in addition, an afternoon section conference provided for, with perhaps a half hour some time before the whole Convention, to deal with plans alone.

Will you kindly let me revise the stenographer's report of my address the last evening, in case you intend to make any use of it? That will set forth my earnest convictions regarding the responsibility of the Sunday School movement in relation to the evangelization of the world.

Very sincerely yours,



July 5th, 1905.

Mr. Talcott M. Banks,

103 Front Street,

New York City.

My Dear Talcott:-

I have been away from the city, with the exception of three or four days, for the last three weeks, but got your good letter the two-day interval I was home last week. I do heartily hope that something of just the sort you have in mind will develop; and I do not need to say that I shall be more than happy if I can be of any service in connection with the matter. I wish we could have an evening to talk it over some time. I go away for a couple of days to-day but I shall be back on Friday, and after that shall be here all the rest of this month, with the exception of two or three days, so that we can surely get together some time if you are going to be in Englewood.

I strongly sympathize with the way your thoughts are turning. I suppose there are men to whom business is sweet and who can find the satisfaction they want in it; but I do not believe I can, and I do not wonder that you cannot.

I saw John Strong on Sunday and Monday, and had some good talks with him upon Lake George.

Looking forward with pleasure to seeing you before long, I am,

Your sincere friend,

And certainly yours,

Yours truly,

Now when they come, we shall perhaps still be in the July and June numbers of the Christian Science which is just received. I shall be glad to see

your kind note of the

My Dear Dr. Stevenson:-

My dear friend,

With much respect,

The Rev. Dr. Stevenson, D. D.

July 18th, 1887

And sincerely yours,

Most respectfully,

Remembering that I have met who were the authors of the Declaration of the Women's Christian of Samuel's New York. She could give you the which you refer to from her. Henry V. Johnson. In the History of Christianity in the House of

The friends to which I am referring

Dear Madam:-

Respectfully, New York,

Rev. Dr. V. George Johnson,

July 18th, 1887

✓ July Fifth, 1905.

Mr. L. A. Maynard,
Liberty, New York.

My Dear Mr. Maynard:-

Your kind note with its enclosure has been received. If I can write anything for you before long I shall be glad to do so, but I do not know what I may be able to do.

Very cordially yours,

Robert E. Ch

✓ July Fifth, 1905.

Mr. Charles S. Crossman,
Haverford, Penna.

My Dear Mr. Crossman:-

Your kind note with its enclosed check, has been received. I return herewith the voucher signed, and thank you heartily for your kindness. It was a great pleasure to be present at the Commencement, and I was delighted to have an opportunity to make the acquaintance of the school. It will be a pleasure to come back again at any time, if I find it possible to do so.

Very cordially yours,

Robert E. Ch

July fifth, 1905.

Mr. Charles G. Trumbull,
Philadelphia, Penna.

My Dear Charlie:-

I do not know whether the two notes enclosed would do for the front page of the Times or not. I wrote them with some notes for Forward, and shall send them there if, as I suspect, they are not just what you want for the front page.

Very affectionately yours,

July 6th, 1905,

Mr. F. B. Tibbitts,
Wilmington, Delaware.

My Dear Mr. Tibbitts:-

Your kind note of June 22nd was received some time ago. I am sorry it will not be possible for me to accept your invitation. I have already other engagements for Sunday, November 12th, and indeed have so many appointments in connection with my own lines of work, that I can only hope to have the pleasure of going to Sunday afternoon meetings of the Young Men's Christian Association when I can do it incidentally to other appointments.

Very sincerely yours,

✓

July 5th, 1905.

Mr. Charles G. Trumbull,

1031 Walnut Street,

Philadelphia, Penna.

My Dear Charlie:-

I enclose herewith copy for the Young People's Meeting column for the rest of the year. I wrote them up traveling about from one Student Conference to another last month.

Thank you very much for your good letter of last Friday night, written as you were sitting up over your report of the Toronto Meeting. I was very sorry not to see more of you, but I never count on seeing anything of people at Conventions, and am happy to get just a glimpse and a hand-shake. I am so sorry that Mrs. Trumbull was under the weather. Will you thank her for her kind note which I got the same time with yours.

I am in my office for only a few hours this morning, as I have to go up to Northfield for the Students' Conference there this evening.

Hoping to see you some time again during the summer,

Very affectionately yours,

Wm. E. A. [Signature]

234

July 5th, 1905.

Miss Helen Temple Cooke,

Dana Hall,

Wellesley, Mass.

My Dear Miss Cooke:-

Your very kind letter of June 20th, with its generous enclosure, was acknowledged while I was away from New York. I want to thank you personally for it. It was a great pleasure to be at the Commencement. Indeed, it is a real delight just to think of Dana Hall, and of visits to it.

Mrs. Speer got back safely from Silver Bay last evening, a little tired with the journey, but happy over the Conference. I am so glad that you could go up there, and that the Conference has won the place it has in your heart. I trust that it was some real help to Miss Stewart and Miss Avery, also, as you hoped it would be.

With warm regards from Mrs. Speer and myself.

Your sincere friend,

July fifth, 1905.

The Rev. J. B. Miller, D. D.,

Witherspoon Building,

Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Miller:-

I enclose herewith a few

Notes for Forward.

Very affectionately yours,

July fifth, 1905.

Miss Clara McMurtrie,

Huntingdon, Penna.

My Dear Aunt Clara:-

Thank you very much indeed for the paper regarding the Eliots. I was thinking just the other day that we ought to have some of the facts about our family lines written out for the sake of the children. Don't you think you ought to have as full a statement as possible got up regarding the McMurtries? I am going to see what can be done about the Speers. I have not had time to read the paper on the Eliots yet, except to look at several items in it, which seem to me to tally with other information which I had.

I am so glad that you and Uncle Stewart are going to carry out your plan. Emma and I have both been away so much that I haven't seen your letter to her, although she told me of having received it.

As to cameras, I never had any trouble about mine. Thousands of them are traveling all over the world, and I do not think you will have any difficulty whatever. Of course there are a few places where there are investigations, and a few places in a country where they will not allow you to have a camera; but I do not think you will have any trouble with the Customs in any place.

With reference to films, I hope you have the kind of a camera that you can load and unload in daylight. Mine was a rather old-fashioned one, and I had to load it by night. It carried, however, a roll of one hundred films, and as fast as one roll was used up, I would pack it in black paper and tin foil, and send it home to the Eastman Company in Rochester, to have the pictures developed and held for me. I had them send films to meet me at various points, too, so that I could pick them up as I went around the world, and so get them as fresh as possible. This was years ago, however, and all these things are greatly improved since then, and perhaps for a short journey like yours, you could take enough rolls along with you to last all the time. What kind of a camera is yours? and what sort of films do you use? Plates are a great nuisance on

Miss McMurtrie, 2.

such a trip, being heavy and breakable; and I wouldn't be cumbered with them myself. Mr. Grant, however, used them, but I would rather take no pictures at all than go around the world with the bother of glass plates.

I have to go now to Northfield, and shall be back on Friday. I was up at Lake George at the Young Women's Conference this last Sunday, and came down on Monday. Emma came last night.

There! I have not got another minute, but please let me know if there is anything I can do. Perhaps you wrote fully about your plans to Emma, and I shall see your letter to her when I get home at the end of this week.

With much love to all.

Very affectionately yours,

✓ July 7th, 1905.

Miss Lillian M. Clark,
88 Buena Vista Avenue,
Yonkers, New York.

Dear Miss Clark:-

Your kind note of July 4th came while I was at the Students' Conference at Northfield. I do expect to speak for Dr. Richards here the second Sunday in November, but I practically promised the Twenty-Third Street Branch of the Young Men's Christian Association, that if I were to be in town any Sunday in November and could give them the afternoon, I would do so. So that it will not be possible for me to have the pleasure of addressing the proposed union meeting in Yonkers that afternoon.

Very sincerely yours,

2 July 7th, 1905.

Mr. Percival R. Bakeman,
Oceanville, Maine.

My Dear Mr. Bakeman:-

I am sorry it will not be possible for me to accept your invitation for next Washington's Birthday. I have to be away from home so much that I long ago adopted the rule that I would make no engagements for legal holidays or for one Sunday out of each month. Some such rule I have found is the only possible way for me to get any time at all at home; so that you will have to count me out as far as your plans for next February 22nd are concerned.

Very sincerely yours,

July Feb, 1905.

The Rev. J. K. Miller, D. D.,

Witherspoon Building,

Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Miller:-

Your kind note of yesterday is just received. I will look over the proofs of the Lessons for the Teachers' Training Manual as soon as they come to hand, and will send them back as soon as possible.

Very affectionately yours,

July Feb, 1905.

Miss Laura A. Vail,

Elizabeth, New Jersey.

My Dear Miss Vail:-

I have been away from the city, or should have earlier acknowledged the receipt of your kind note with reference to the address at the Commencement Exercises at the school, with its kind enclosure. It was a real pleasure to be present, and see so many nice girls graduated, and so many more in the classes that are to be graduated in the future.

Very cordially yours,

2

July 7th, 1905.

The Honorable Robert W. Speer,

Denver, Colorado.

My Dear Walter:-

Your kind letter of the third was received yesterday, and it makes my mouth water to think of your proposition. I would rejoice to accept it if I could, but it will not be possible for me to get out West this summer. I have been away at a number of meetings the last three weeks, so that my work is a good deal behind; and I shall have to stick here pretty closely for the next three weeks to clean it up. And then, the first of August, Mrs. Speer and I expect to get away with our three youngsters, to the Camp in Northern New Hampshire, where we have been accustomed to go for the last four or five years. I wish I could come to Denver; and that trout fishing in the mountains is a terribly enticing inducement; but it is out of the question this year.

I meant to write to you some time ago to thank you for the Denver paper we got in the fall. I read them and their references to you with the greatest interest. I wish I could visit Denver some time during your term as Mayor, and am proud to think of you as representing the family so honorably in such an honorable place.

With warm regards to Kate and yourself.

Your affectionate cousin,

July 7th, 1905.

Miss Susan M. Clute,

289 Fourth Avenue, N. Y. City.

My Dear Miss Clute:-

On coming back from an itinerating tour among the Student Conferences, I found your note of June 21st. I am sorry to have to say that I do not have copies of any of the addresses which I made at Silver Bay; but the Sunday morning address, and the Sunday evening missionary address I repeated substantially at Northfield, at the Men's Conference, and I think they both were taken down there for the Record of Christian Work. I am sure that Mr. Moody would be glad to give you proof copies of either of these addresses, in case you want to make use of either one of them in the

Evangelist.

I am glad the Conference went off so well, and trust that you are not all of you worn out with the hard work of it.

Very cordially yours,

64
✓
Mrs. Alexander,

Box 28,

Seabright, N.J.

My dear Mrs. Alexander:

I went up to Northfield on Wednesday and came back on Friday. I should be glad to propose to Mr. Foss as soon as he arrives to-morrow, when his steamer is expected, an exchange of Sundays at Seabright, but I have promised to go to Silver Bay to the Young People's Missionary Conference for the 27th, so that I could only make the exchange by breaking that engagement, which I could not do. It would be impossible to transpose it to the 30th as I have to be in New York on the 31st, and could not get back from Silver Bay in time.

I am very sorry, as I should be happy to do anything I possibly could to comply with any wish of yours.

Mrs. Speer was fully hoping to come with me to Seabright this year, but we hope to get away on the evening of July 31st. to northern New Hampshire, and she feels that it will be impossible for her to go on Monday night, so I am afraid she will feel that she will have to give up the pleasure of coming.

I did not get to Silver Bay until after Keithland had gone, but Mrs. Speer spoke with great satisfaction of the work that he had done the opening days, and Janet's Bible Class was just what you might know it would be. Dr. Sailer and others told me of the really face with reality. Both the Silver Bay and the young men's Conference,

July 7th, 1905.

Mr. Fayette B. Dow,

Rochester, N. Y.

My Dear Mr. Dow:-

I am sorry to have missed seeing

you the other day when you were here, but I have been in my office very little during the last three weeks. We shall look forward to seeing you as soon as possible after you come back to New York. We shall go up to Diamond Pond the last night of this month, and shall not get back until the first week in September; but hope that the first opportunity you have you will be sure to come out and see us.

Miss Russell told me up at Northfield, yesterday, that she had met you, and I hope you may have met also some of the other girls whom Mrs. Speer wanted you to know. I wish you could have been at Northfield. It is a very good Conference, and I do not see how any man or woman can be there without seeing more light, and rejoicing in it.

With kind regards from us all.

Your sincere friend,

July 7th, 1905.

Miss Helen M. Stonecypher,
25 North Second Street,
Easton, Penna.

My Dear Miss Stonecypher:-

Your kind note was received

yesterday. I am afraid it was not possible for me to accept your invitation to spend a Sunday at Wilson College this college year. I have already made, or in prospect, almost as many Sunday engagements as I think it will be possible for me to make, and it would be specially difficult to get to Wilson for a Sunday, as nearly all of Saturday and Monday would be consumed in going and returning. If I find that during the year I shall be in or near Chambersburg, and could come to the College for a meeting, I should be very glad to do so.

Very sincerely yours,

2

July 7th, 1905.

Miss Helen Jackson,
15 Engle Street,
Englewood, N. J.

My Dear Miss Jackson:-

I remember very well my pleasant hour at your school several years ago, when I came over in the afternoon with Mr. Atherton, and it would be a pleasure to visit the Seminary again; but I do not see any prospect of being able to come for a Sunday to the school, and I have no prospective engagement to spend any Sunday in the Wilkesbarre churches; so that I very much fear it will not be possible for me to accept your cordial invitation. I would only say that, if I at any time am near Kingston, and could come and speak to the young men and women, I should be very happy to do so.

Very cordially yours,

i

July 7, 1905.

Mrs. M. Gordon, Pryor Rice,

R. W. D. 11.

Clarkton, Va.

My dear Mrs. Rice:

I am venturing to send you herewith a copy of the little book, containing the sketch of your brother, which you so generously helped me with. I hope the little book may accomplish some real good and that the example of his life may be truly helpful to some of the boys or young men, who may perhaps read of him in these sketches.

Very sincerely yours,

✓
July 7, 1905.

M. M.

Mr. Graham C. Porter.

67 Howe Street.

New Haven, Ct.

My dear Graham:

I do not know how soon you are to go down to the Spring Street Church, although I think Mr. Janeway, whom I saw the other day, stated that it would be a week or two before you were due there, but I enclose herewith my check for \$31.50, the amount you said would cover the extra expense. I shall hope to see you some time while you are here. I shall be in New York for the next three weeks, but expect to be away during the month of August.

I return herewith Mr. Bates' letter, which you may want.

Very sincerely yours,

M.

July 10, 1905.

Mr. J. E. Woodcock,

630 Madison Avenue,

Soranton, Pa.

My dear Mr. Woodcock:

I got your kind note of
July 28th. at Northfield, but I was not able
to have a talk with Mr. Groff. I was there
from only six o'clock Wednesday morning until
five o'clock Friday morning and I had seven
meetings and a good many appointments inbetween.
I wish I could have stayed through, in which
case I should have been sure to see Mr. Groff.
Gilbert Beaver was there, however, and I have
no doubt he saw him.

Very cordially yours,

July 8, 1905.

M.

Mr. Henry W. Rankin,

Macon Street,

Brooklyn, N.Y.

My dear Mr. Rankin:

I want to thank you for
your kindness in sending me your paper on
the Philosophy of Dr. Shields. I have been
away from New York almost constantly the last
three weeks at various Student Conferences,
having returned from Northfield only yesterday,
and have had time only to look hastily over
your paper, but many sentences have already
got and held my interest and I shall read it
through with sympathy and care.

I hope that you are enjoying better
health than you were and that the McCarty biog-
raphy is not proving too great a burden to you.

With kind regards,

Very sincerely yours,

M.

JULY 7, 1905.

My dear Johnnie:

I would like to ask you in an entirely confidential way what you think of Mr. W.E. Geil. Is he a man to tie to and be responsible for? I saw him some years ago before he started off on his travels and have heard from him from time to time, and have seen him several times since his return to America. He gave me at Northfield yesterday a copy of the Doylestown Daily Intelligencer for June 28th. containing a number of pictures, yours among them, and the report of the reception and his address at Doylestown.

I hope you like the work in Doylestown.

With warm regards,

Ever your friend,

The Rev. J.M. Waddell,

Doylestown, Pa.

M.

JULY 7, 1905.

Miss Elizabeth E. Smith,

Hotel Northfield,

East Northfield, Mass.

My dear Miss Smith:

I am very grateful for your kind note and the copy of "Far Consequences Sake". I had seen the book but had never read it and appreciate very much your kind thoughtfulness in sending it to me.

I know that Mrs. Spoor also will.

It was a great pleasure to meet you and it was a great encouragement to have your kind words about the truth, which I was eager to put before the students yesterday morning and which I felt I expressed so inadequately. I hope you may have a very pleasant visit at Northfield and with kind regards, I am

Very sincerely yours,

M.

July 7, 1905.

Mr. S. E. Walker,

East Northfield, Mass.

My dear Mr. Walker:

Thank you very much for your note regarding Mr. Moody's little child. I hope the little one's life may be spared and that this great burden of anxiety may be lifted off the minds and hearts of the parents.

I enclose a book notice for the Record of Christian Work by Mrs. Speer.

Very sincerely yours,

N.

July 10, 1905.

Mr. Thomas S. Evans,

Howard Houston Hall,

West Philadelphia, Pa.

My dear Tom:

I have been trying to work over my appointments a bit and I see that there is a possibility that I may not be able to come to Philadelphia for December 10th, but might for the 17th. Would that suit you and Bateman in case I cannot come for the 10th?

Very sincerely yours,

July 10th, 1905.

Mr. H. P. Andersen,

3 W. 29th st., City.

My dear Mr. Andersen:

Your kind note of Saturday with enclosure, is just received. I return herewith the voucher. I wish I could have stayed through to the end of the Conference, but there is too much to keep up with here. I hope it closed with high power.

Very cordially yours,

K.

July 8, 1905.

Mr. Roger Loomis,

Potomac School,

Takeville, Ct.

My dear Roger:-

I have wondered very much whether you have found any satisfactory work for the Summer. One or two things came to my notice, but they were not the sort of thing you were looking for, and I have heard of nothing that would give you just the kind of arrangement that you wanted. I hope you have found something and that you may have a good, profitable Summer.

With kind regards,

Your sincere friend,

M.

July 8, 1905.

My dear John:

We are thinking a great deal of Diamond Pond these days and I am wondering whether you have gone up yet, or are waiting in Baltimore, as I suppose you are, until the Endeavor Convention is over. Our months are just watering for the Camp. Elliot was talking last night of going in swimming and even the Baby is talking about getting on the cars to go and going swimming in the boat! I am looking now at that picture of the fishes which you sent and the basket of nice green moss in it. Won't it be fine when we come tramping down the little Dead Diamond or the East Branch to the Hell Gate Camp next month? I am hungering to see you and to be with you and the clean fresh life of the Camp.

With much love to all,

Your affectionate friend,

The Rev. John Timothy Stone,
Brown Memorial Menace,
Baltimore, Md.

M.

July 18, 1905.

Mr. William S. Humes,
Bellefonte, Pa.

My dear Mr. Humes:

I have just received, thanks to your kindness, the Souvenir Program of the One Hundredth Anniversary Exercises of the Bellefonte Academy. I was very glad, indeed, to have this expression of your kind thoughtfulness and also to see the program and to read over many familiar names on the various committees. I wish I might have been present at the Anniversary. I remember with the greatest pleasure my summer in Bellefonte and only regret that it has been possible to get back so seldom.

With kind regards,

Very sincerely yours,

July 10th, 1905.

Mr. R. S. Goldsbury,

25 B'way, City.

My dear Mr. Goldsbury:

I received some time ago your kind note referring to an answer in the Record of Christian Work to one of its subscribers regarding life insurance. I am glad to hear of your great success in your work, and hope you are going to be one of those men who will earn money for the Kingdom of God, and do for missions, in their support, what you would not have been able to do by giving your life.

Very sincerely yours,

July 11, 1905.

Mr. Walter Clark,

Grand Rapids, Mich.

Dear Sir:

The Fleming H. Revell Company,
20 N. LaSalle Avenue, Chicago, Ill. has just
issued a little book of biographies, of
which I spoke to you, entitled "Young Men
Who Overcame". I wrote an biography for
the book, especially in view of your sugges-
tion. It is the last one and begins with an
allusion to your kind letter.

Very cordially yours,

July 10th, 1905.

Mr. Chas. C. Trumbull,

1031 Walnut st., Phila., Pa.

My dear Charlie:

I suppose that the copy of the Sunday School Times containing my article on Simon Peter's claims to greatness, must have gone astray in the mails, and I wonder if it would be troubling you too much to ask if you could send me just one other copy?

Very affectionately yours,

18



Rev. J. S. Conning,

1002 Madison ave., Baltimore, Md.

My dear Mr. Conning:

Your kind note of yesterday is just received. I am sorry that it will not be possible for me to accept your kind invitation for November 12th, but I have an engagement of long standing to speak in the Brick Church in New York, and have had to decline several other invitations on this account. I hope you will have a good meeting that day.

Very cordially yours,

✓
July 12th, 1905.

Dr. T. H. P. Sailer,

Jamestown, R. I.

My dear Thomas:

I was at Northfield last Wednesday evening and Thursday, and came back on the early morning train Friday. They seemed to be having a good conference there, with the largest and best attendance they have ever had. Grant, who stayed over Sunday and heard Dr. Johnson Ross of London who came over, said it closed on a high level.

On coming back I found your note of July 5th, enclosing the letters regarding Walter Erdman. Whatever we have been able to get hold of regarding him seems to be very favorable. I have written to Charlie telling him what we are considering Walter for, and asking him what he thinks of Walter's ability for building and patience in laying foundations. Walter is due in Boston the 5th of August, and I think I shall write to him, asking him to hold off tying himself up in any way until fall, when I think we can get the home department together.

I had a short talk with Mott at Northfield about his conversation with you, and he seemed entirely satisfied with the idea as it commended itself to you, namely that what you should do for the Volunteer Movement would be supplementary to what you are doing for the Board, and would in no way interfere with it. He said that what they would want would be a month or so in the summer time at the Student Conferences, and some few weeks in the winter time, for conferences in the various centers, and then a week perhaps in the fall at the setting up conference with their Volunteer work. It seems to me that what he had in mind would not interfere any more with your work in the Board than my work among the colleges and student conferences interferes with my work

No. 2, T. H. P. S.

in the Board, and as you felt it will give a fine field to work in, and in which to try to solve the problem of directing the student work with the church work, and weaning over into the church service the young men and women who are active in missionary work while in college.

I shall write to Mrs. Weitzel and Mr. Frost regarding Walter Erdman and get their judgment about him.

You went away just in time to escape a spell of heat and humidity, largely humidity. We did not get in any tennis the last afternoon, as the humidity precipitated.

Mrs. Speer is at Northfield now, at the Young Women's Conference. She will be back the close of next week, and on the 31st we hope to start for Diamond Pond.

Very affectionately yours,

P.S.

How much was the map of Japan that I got from you and never paid for? You had four or five of them, I think. Please let me know what the cost of each map was.

R. E. S.



July 12th, 1905.

Mr. Allen Hoffer,

Hill School, Pottstown, Pa.

My dear Mr. Hoffer:

Can you tell me with whom the Professor left the arrangement of the Sunday appointments for next school year. Just before he went away I had a letter from him on the subject, mentioning some special Sundays on which he wanted me to come. I have been making out my schedule for the year, and would be glad to send a list of the Sundays on which I can come to whoever has charge of the appointments for next year, so that he can fill up the other Sundays, as I suppose someone will be doing this summer in the Professor's behalf.

The Sundays which I should try to hold, and which include the special ones the Professor mentioned are September 24th, October 22nd, November 26th, December 10th, January 28th, February 18th, April 8th, May 13th, and June 10th.

Very sincerely yours,

July 12th, 1905.

Miss Mary Caswell,

Wellsley College,

Wellsley, Mass.

My dear Miss Caswell: -

I have been trying to work

out my appointments for next fall and winter, and I think I shall be able to Wellsley for Sunday, October 29th, and have put this down on my appointment calendar. That is one of the Sundays you are kindly holding for me.

Very cordially yours,

July 12th, 1905.

President George Harris,

Amherst, Mass.

My dear President Harris:

I am sorry to have been de-

layed in writing a reply to your kind note of June 7th, and therefore so as I find that I will not be able to go to Amherst Sunday, September 24th. I could go for October 8th, if that would be convenient.

Very cordially yours,

✓
July 12, 1903.

The Christian Intelligencer.

23 E. 22nd Street.

New York City.

Dear Sir:

Will you kindly send me two copies of the recent issue of the Intelligencer, containing an article which I wrote on Mr. Ingham? If you will kindly let me know the cost, I will remit at once. Very truly yours,

July 12, 1903.

✓
Fidelity Ticket Agent,

Fabyans, New Hampshire.

Dear Sir:

Will you kindly reserve for me a stateroom and one section at the same end of the car with the stateroom, from Fabyans to New York on the evening train, Monday, September 4th? Will you kindly let me know whether you can reserve these accommodations? I will be in Fabyans on Tuesday, August 1st, and can take up the tickets then, if necessary.

Very truly yours,

H.

July 12, 1908.

Miss A. L. Hutcheson,

Dwight Place,

Englewood, N.J.

My dear Miss Hutcheson:

Your note, enclosing a copy of Mr. Morgan's comments on the second chapter of Thessalonians II. has been received. I cannot explain all that Paul means, but I do not believe it offers us sufficient foundation on which to base the assertion that at the second coming of Christ, the Holy Spirit is to be withdrawn from the world.

But if I were you, I would not waste a moment's time over such things. There are a thousand glorious things that are clear over one such point of obscurity, and when we have a whole house and all out of doors, with Divine truth bathed in light, surely we ought not to spend time prying into dark closets or hunting around in unlighted places. There are thousands of questions I cannot answer, but there are thousands of things waiting to be done and thousands of rich things already revealed, and these are enough for me.

I wish I could explain the passage in Thessalonians to you but what is clear in it is that Christ is going to triumph over evil and that evil is a terrible thing to play with, and these are things that give us enough to think about, without being worried because I do not understand some other things.

I shall be glad to be of help to you at any time I can.

Very sincerely yours,

July 14, 1905.

M.

Mr. F. F. Turner,

3 West 29th Street,

New York City.

My dear Turner:

The printer will hold for a year, perhaps, the type of "Counsel to New Missionaries". That will give time to ascertain whether any more copies of the book will be wanted, and if they will, they can either be printed off the type or plates can be made any time while the type is standing.

Very sincerely yours,

July 14, 1905.

M.

Miss Lillian M. Clarke,

The Northfield,

East Northfield, Mass.

My dear Miss Clarke:

Your kind note of July 12th. has been received. I am sorry to have to say

that I do not see any Sunday on which I can come up to Yonkers for the proposed meeting. I could only hope to do it as incidental to some Sunday appointments in the neighborhood, and I have none except the Dobbs Ferry one, and there I shall have to give the afternoon to the Juvenile Asylum of which I am one of the directors.

Very sincerely yours,

M.

July 14, 1905.

Miss Edith May Wells,

1510 Ontario Avenue,

Ocean City, N.J.

My dear Miss Wells:

I am sorry to have to say that it will not be possible for me to go to Amherst for Sunday the 24th. I have written to Dr. Harris, however, that I could come for October 8th. and in case that is satisfactory to him, I shall be glad to come over and speak at Vespers at Smith that day. I shall let you know when I hear from Dr. Harris.

Very cordially yours,

M.

July 14, 1905.

Mr. Wm. Hartshorn,

120 Boylston Street,

Boston, Mass.

My dear Mr. Hartshorn:

I am sorry it have to say that I have no photograph of myself and cannot accordingly comply with the request of your letter of July 12th.

Will you please let me revise the report of my address at the last meeting in the Metropolitan Church. In case you wish to print it in the report volume?

Very cordially yours,

M.

July 14, 1905.

Mr. Will R. Moody.

East Northfield, Mass.

My dear Will:

I return herewith Mr. Caulkins' and Mrs. Freer's letters. Regarding Miss Mary Reed, her address is: Pithoragarh, India, C/o Methodist Episcopal Mission. As to Miss Sorabji, she is an earnest, capable Christian woman. She was at Silver Bay at the Young Women's Conference. Emma can tell you about her. I do not think it would be anything amiss to have her at Northfield, but ask Emma and see what she says.

I am so glad to hear that your little one continues to improve.

If you are going to print any of the addresses I made at the Student Conference in the Record of Christian Work, you will let me have the stenographer's report for revision, will you not?

I expect to go up next Thursday for the last evening of the Young Women's Conference at least. Miss Harlan wrote to ask me to come for Wednesday evening, if I could, but I am trying to get all the work cleared up before the end of the month, and I am not sure that I can afford the two days next week.

Very affectionately yours,

✓

July 19th, 1900.

Rev. Lewis Earle Lee,

4402 Hamilton ave., Cincinnati, O.

My dear Mr. Lee:

Your good letter of Monday is just received. I wish I could promise to come for the Jubilee celebration, but if I can get away from the office at all at that time I shall have to be visiting some of the synods, but I do not anticipate being able to get even to many of the synods, on account of the pressure of the work here and the other provision that has been made for Synod visitation.

I am very sorry as I should have enjoyed a share in your Jubilee gathering. Trusting you may have a very helpful time,

Very cordially yours,

✓
July 19th, 1905.

Mrs. Susan M. Alexander,

Seabright, N. J.

My dear Mrs. Alexander:

I wrote you a note several days ago, proposing a missionary for August 18th, but am not sending that letter, because I have heard a later report regarding that particular missionary's preaching ability which causes me to hesitate. I do not think of any other one who will be available. I know of a number of men who want to supply pulpit, but the only one I think I could recommend is Rev. Chas. F. Robinson, D.D., formerly of Scranton, but who is now living at Pelham Manor. He can be addressed at Jackson Sanitarium, Dansville, N. Y. I do not know that he would please everybody, but he pleases me.

If you would like a preacher for the second Sunday in September I would like to suggest Rev. K. Ibuka, D.D., President of our School at Tokyo, who is now in Europe but will be in this country in August. President Ibuka is a very attractive man, speaks English perfectly, and is very able and devoted. I think you would be delighted with him. I am trying to plan some engagements for him, and hope he can go to Far Harbor for the first Sunday, and wonder whether you might want him for the second Sunday in September.

I hope to go to Northfield to-day. Mrs. Speer has been there for more than a week, at the Young Women's Conference.

Very affectionately yours,

✓

July 19th, 1905.

Rev. S. D. Price,

Shrewsbury, N. J .

My dear Mr. Price:

Dr. Halsey has given me your very kind invitation to speak at the Presbytery of Monmouth on September 23th. I wish I could accept, but I do not see how it would be possible for me to go. I wish you could get Dr. Halsey himself, or if not him Mr. David McCaughy, the Assistant Secretary of the Home Department, responsible for the work in the eastern section of our country.

Very cordially yours,

David McCaughy

✓
Jul. 18th, 1905.

Mr. Chas. D. Hilles,

Dobbs Ferry, N.Y.

My dear Mr. Hilles:

Miss Thompson, of Miss Master's School has been inviting me for some time to go to Dobbs Ferry for a Sunday, when I could speak at the School. I do not very well see how I can get two Sundays this year to go to Dobbs Ferry, one to go to the School and one to the Children's Village, and yet I would like to^{do} both, and to combine the two.

Would it be satisfactory to you if I should postpone my going until some Sunday in the latter part of the winter or early spring, and then be able to speak both at the afternoon service at the village at the meeting which I should want to have in the church, and at the school.

The date that I had promised to go to the Asylum was December 31st. I expect to see Miss Thompson at Northfield to-morrow, and can try to arrange with her for some Sunday in February, March or April, and will then write to you again if you can make the change from December 31st.,

Very sincerely yours,



July 19th, 1906.

Mr. Boyd Edwards,

1293 Dean St., B'klyn, N.Y.

My dear Boyd:

I am having to slow down on my engagements to speak, and cannot promise at this time to go to the Kings County Sunday School Convention in November. I wish I could do so, but last year's experience has taught me that I have got to save a great deal more time for my direct work here at the office. It is a good opportunity, and I wish I could accept it. Perhaps in the fall I might find that I could do so, but you ought not to delay completing your program at once.

Very cordially yours,



✓
July 19th, 1905.

Miss Mary Bailey,

Saybrook, Conn.

My dear Miss Bailey:

I am sorry that I cannot promise now to speak on Mission Sunday at Saybrook on October 15th. It may be possible for me to do so, but I cannot promise now, in view of the fact that October is the month in which we have a great many ecclesiastical meetings, and I may be called on to attend some of them. If you have made no arrangement by fall let me know then, and I shall be very happy to go if I can do so.

Very sincerely yours,

A. S. J.

July 19th, 1905.

Miss Edith May Wells,

1510 Central ave., Ocean City, N.J.

My dear Miss Wells:

I have just heard from President Harris, in reply to my letter to him, and he says that October 8th will be satisfactory for my visit to Amherst, so I could speak at your vesper service that afternoon if you wish.

Very sincerely yours,

July 19th, 1905.

Mr. Thos. C. Evans,
Howard Houston Hall,
West Phila., Pa.

My dear Tom:

How would February 11th do for the University and Datanen's meeting?

Very cordially yours,

✓
July 13th, 1905.

Mr. Geo. T. Scott,

Beirut, Syria.

My dear Mr. Scott:

I appreciate very much your kind thoughtfulness in sending me a catalogue of the Syrian Protestant College for 1904-05. I have gone over it in part, but wish to go over it more fully as soon as I can find time.

I suppose that just now you are in Europe with Vera. I saw her the day before she sailed. We miss her very much, and shall look forward with pleasure to her coming back in the fall.

With warm regards,

Your sincere friend,

K. A. Smith

✓
July 19th, 1905.

Mr. I. N. Stanley, Jr.,

Elkhorn, Wisc.

My dear Mr. Stanley:

I am sorry to have to say that I do not see any prospect of being able to visit Earlham College this coming college year. All I can do in the way of college visitation I have to do incidentally, and am afraid I shall not be near Richmond with the time to spend at any time this fall.

Very cordially yours,

W. J.

Mr. Robert M. Kurtz,

Union Gospel News,

Cleveland, O.

Dear Sir:

I enclose herewith the article on "The Effects of the Present War on Asiatic Missions", which I promised to write for the Union Gospel News.

Very sincerely yours,

July 14, 1905.

✓
July 19th, 1905.

Mr. Wm. R. Redden,

130 Stanwood st., Roxbury, Mass.

My dear Mr. Redden:

Your kind note was just received. I am sorry to have to say that there is no prospect of my being able to get to Bates this year. I have been invited to a Young Women's Christian Association convention at Lowell, I think some time in the winter, but I am not sure that I can get to it, but even if I can I know I shall not be able to get the time to go to visit my college in Maine. I am very sorry, as I should enjoy going if I could.

Very sincerely yours,

28

✓

Mr. Geo. S. Coe,

Englewood, N. J.

My dear Mr. Coe:

I am not surprised that Dr. Schauffler cannot come for one of the meetings. I shall try to help you get anyone else you may wish, but I shall be away from home all the three Sundays you mention, speaking at schools and colleges, which is the sort of appointments which Dr. Schauffler likes too, but I shall be of any help to you I can at any time.

Very cordially yours,

✓

Rev. H. P. Beach,

3 W. 29th st., City.

My dear Mr. Beach:

I shall be glad to try to write a brief article for the October Inter-collegiate, summarizing the address you mention.

I hope you are having a good rest this summer. With warm regards,

Very sincerely yours,

1905

July 18th, 1905.

July 18th, 1905.

July 18th, 1905,

E. S. McMurtrie, D.D.,

Huntingdon, Pa.

My Dear Uncle Stewart:

I was very glad indeed to get your note of July 10th, and the little booklet describing your trip around the world. I have friends in many of the cities to which you are going, and I shall write to them of your coming so that they will be on the watch for you. The following are the cities to which I shall write: Yokohama, Rev. Henry Loomis; Tokyo, Rev. T. W. McKim; with whom Aunt Clara's friend, Miss West lives; Osaka, Mr. E. A. Murray; Nagasaki, Rev. A. Peters; Manila, Rev. S. W. Rossiter, D.D.; Canton, Rev. A. A. Fulton; Calcutta; Mr. E. C. Carter, 35 College st.; Beirut, President Howard S. Bliss of the Syria Protestant College; Cairo, Douglas M. Thornton, an Englishman living there, and connected with the Church Missionary Society of England.

Perhaps in some of these places Aunt Clara will want to see some things, and possibly you will get to other places where there are missionaries, so I enclose a general letter of introduction, in case you should find yourself in places where such a letter to missionaries may be of use. You are going around just at the right time of year, and I think will find that just the same sort of clothes that you would be wearing here at home will be needed, except that you might take your summer clothing along also, as there will be times and places where it will be quite a little warmer than at the same season of the year here.

The little book you sent me has good advice at the beginning, and any of the friends I mention will be glad to do anything they can to help you if there is anything you need along the way.

I wish I were going with you, but in that case I think

No. 2, E. S. Hall.

we would strike off on an independent itineracy, and take in a good many places not on the list. There is enough here, though for the time available, and it is going to be a fine trip.

We have not gotten off to the woods yet, but hope to go two weeks from to-day. This hot weather makes the thought of the woods very enticing, but there is too much to do to go up just now. I have two good weeks' work ahead of me before I shall be in shape to go.

With love to Aunt Clara and yourself,

Your affectionate nephew,

Jul, 10th, 1895.

✓

I beg leave to introduce her with my uncle, E. S. McMurtrie, Esq., and my aunt, Miss Clara McMurtrie, of Washington, Pa. They are making a journey around the world, visiting some of the stations, and many points of interest apart from missionary work, and I shall be very grateful for any courtesy shown them, or any opportunities given to see the mission work, and the other points of interest in the places to which they go.

✓
July 18th, 1905.

Miss Edith C. Dickie,
C/o Mrs. L. C. Storrs,
Schenevus, N. Y.

My dear Miss Dickie:

Thank you very much for Dr. Field's note enclosed in your letter received yesterday. I am very sorry for its loss. I wonder how it happened. I hope she is not going to be one of those missionary correspondents who tells you just enough to arouse your curiosity, without satisfying it.

I am glad that New York seems so far away from you, and that you are really having a rest in a cool place. We are not resting much here just now, and it is not a cool place. Last night little Eleanor was so warm that she got up about one o'clock, and I do not think that either she or I had very many hours of especially sound sleep the rest of the night. She is talking jubilantly now about the Camp, and of the journey there. She remembers nothing about it, of course, but she has caught the enthusiasm of the other children, and I must confess of myself too.

Mrs. Speer is still at Northfield, but will be down on Friday of this week.

Miss Reid and Miss Duncan have three or four books of dictation apiece to write out, and it is still accumulating. I shall try to have Miss Duncan's books, however, kept down so that she can get through in time for her vacation. Miss Reid will be here, though for the summer, and I think I may leave a good deal of work with her that she can write out after I am gone.

I should like to have everything cleared up when I go, but I have given up the hope of doing this, and shall only endeavor to do

Ms. A, 7, 1, 2.

Mr. Brown goes around saying that he has every
thing, and I try to be a Christian and reach people.

With warm regards,

Your sincere friend,

✓

July 18th, 1910

Mr. F. M. Turner,

3 W. 29th st., City.

My dear Mr. Turner:

I shall try, of course, to be present at any meeting of the advisory committee this September, but I do not believe it will be possible for me to attend all the sessions of the Fall Conference. My experience with the work this past year warns me that I shall have to be very much less indulgent in the matter of absences from the office this coming year if I am to keep up with my work.

Very cordially yours,



July 18th, 1905.

Mr. Thos. Gurley,

Cottage Content, Nantucket, Mass.

My dear Tom:

I was very glad to get yesterday your letter of July 14th, and to hear a little more fully about your Bible group. It is certainly a most opportune thing you have, and I hope and pray that you may be given wisdom and courage and power to improve it. I am not sure that your little book is the best book for you to use, but I had felt that that line of study is the best to take up. Probably Bushnell's "Character of Jesus", or Youngs' "Christ of History", or Sealey's "Ecce Homo" or Simpson's "Fact of Christ" would be a better book. At any rate, I think it would be worth your while to look into these books, and get the men to do side reading in them. If only those men individually could be gotten to face bravely the realities of life and the soul of man, surely they could be won to the service of the true, enduring things. Of course, I shall be glad to help you in any way I can, and hope you will let me hear from you at any time.

I am trying hard to clean up so that I can get away from New York about August 1st, when I expect to go up to Northern New Hampshire, where I confess I long to be.

Your sincere friend,

July 13th, 1895.

Miss Mary Broeze Miller,

70 Crown, Shipley Co.,

123 Mail Hall, London, England.

My dear Mary:

I was very glad to get this morning your note of yesterday, and
wished you up at once. I was out. I received,
however, a telegram which Emma had sent to you yesterday in my care,
and I hoped to be able to give to you personally. I trust you got
it before leaving the hotel for the steamer.

The children were very happy at the prospect of seeing you
yesterday, but they realized that they probably
probably would not go. They are happy and jolly and
they are happy and jolly and they are happy and jolly
and they are happy and jolly and they are happy and jolly
bring.

I wish you could be with us, but am glad if you are not that
you are on the summer ahead, and hope that you will have a
happy and restful time.

Emma is at Northfield now, went up a week ago, but will be
down Sunday, with the children, so hope to see you then.

I am glad that where there was perplexity the light is be-
ginning to shine a little, and I hope that you will be able to
we follow them, turn to the fulness of the day in the time of the.

I shall hope to hear from you from time to time during the
summer, and to see you at Englewood as soon as you come back.

With much love from Emma and myself,

Your sincere friend,

Rose

✓
July 1886, 1886.

Wm. C. Trumbull,

1031 Walnut st., Phila., Pa.

My dear Charlie:

Your kind note of yesterday is just received. I enjoy trying to write these little paragraphs for the front page. The trouble is, I am doing this sort of work for a number of papers, and I get their ideas mixed up in my mind.

Of course, I shall be glad to go on with the Young People's articles for 1886. I am glad that you have them in hand for all the rest of the current year.

I was sorry to miss Phil the other day as he passed through New York, but glad to see him and Annie at Northfield. I expect to go up there for one day next week, and shall look forward to seeing him then.

Very affectionately yours,

Frederick Douglass

20!

✓

..

JULY 25th, 1905.

The Rev. J. B. Devins, D.D.

157 Fifth Avenue,

New York City.

My dear Dr. Devins:

Your kind note of the 23rd, is just received to-day, as I have been at church day after day at the Young People's Missionary Conference. I wish I could write the article you want this week, but I have no time to do so, and I am not so well then, and I am working pretty nearly all morning in the offices during the day in the hope of getting things cleared up, in order to get off next Monday night. Sometime later, when I find time, I shall be glad to write something of the sort for you.

With warm regards,

Very sincerely yours,

W. D. P.

H.

July 25th, 1905.

Rev. S. J. McPherson, D. D.,

Lawrenceville, N. J.

My Dear Dr. McPherson:--

Your very kind note came last week.

Dr. C. C. Vinton is the son of old "Freddy" Vinton, as we used to call him, who was for many years librarian of Princeton College. Mrs. Vinton was a Miss Letitia E. Coulter, of New York City.

If these facts are not sufficient to identify Dr. and Mrs. Vinton, please let me know and I can easily send you others. Mrs. Vinton died several years ago, leaving Dr. Vinton with a number of small children.

Thank you very much for the cordial invitation with reference to next year. Would December 17th and April 22nd be satisfactory Sundays?

With warm regards to Mrs. McPherson and all the family,

Very sincerely yours,

H.

✓
July 26th, 1905.

Rev. H. G. Buehler,

Lakeville, Conn.

My Dear Mr. Buehler:--

I have been trying to work out my engagements for next year and write to ask whether, in case I am able to arrange it, October 15th and March 25th would be satisfactory Sundays for visits to the Hotchkiss.

Very cordially yours,

Secretary.

80
H.

✓
Jul - 25th, 1905.

Miss Bertha Harlan,

East Northfield, Mass.

My Dear Miss Harlan:--

Your kind note of yesterday, with its enclosed check, is just received, and I thank you very much for your thoughtfulness.

It was a great pleasure to attend the Conference, and I am glad that it seemed to be in every way so encouraging a success.

Very sincerely yours,

Secretary

H.

July 26, 1905.

Miss Margaret H. Shearman,

1600 West 7th Street,

Wilmington, Delaware.

My dear Margaret:

I was up at Silver Bay from Saturday until Monday and only got back to my office this morning. I telephoned up the the Pearl Harbor Station and also sent a boy to see about the berths for next Monday night, but every lower berth is sold. I am asking the agent to give you two lowers or a section for the first night after the thirty-first, that he can do so, and to send his reply directly to you. I am very sorry that we cannot all go up together.

I knew that Anna was expecting us on the 26th, but I wrote her last week that we would not be up until the first and have had a reply from her.

Very affectionately yours,

M.

July 22nd, 1905.

Mr. John J. Brant,

Sleeping Car Agent,

Grand Central Station,

New York City.

Dear Sir:

Miss M. H. Sherman, 1000 West 11th Street, Birmingham, Ala. sent me the enclosed card, asking me to inquire whether there might not be some lower berth on the White Mountain train next Monday night, unsold. I have written to her that there is none. She asked me in this case to request you to reserve for her two lower or a section for the first night after the 31st. that you can do so. Will you kindly cancel accordingly, her reservations for next Monday night, and send her word of the reservation that you can make for her in accordance with her desires, the first night after the 31st. that it may be possible. Do not trouble to reply to me but kindly drop a card to Miss Sherman.

Very truly yours,

✓
July 26th, 1905.

Mrs. Frank G. Cook,

385 State st., Bridgeport, Conn.

My dear Mrs. Cook:

Your kind letter of the 21st has been received. I am sorry that it will not be possible for me to go to New England for the Convention in February. The third Sunday I expect to be in Pottstown, Pa, and the fourth Sunday I shall have to be here, or near here, as I will probably be going that week to a Student Volunteer Convention at Nashville, Tenn.

I expect to be at Wellesley on October 29th at the College, and shall have to combine my visit to Dana Hall with my visit to the College.

Very sincerely yours,

✓
July 26th, 1905.

Miss Cooke,

Dana Hall, Wellesley, Mass.

My dear Miss Cooke:

I have promised to spend Sunday, October 29th at Wellesley, speaking at the College in the morning and at vesper service. I just wanted to let you know so that if I could have the pleasure of meeting the girls any time that day I might not miss it by not letting you know that I was going.

I hope that you are having a restful summer, and that the memories of Silver Bay are not fading away. With warm regards from Mrs. Speer and myself,

Your sincere friend,



July 27th, 1905.

Rev. J. MacIntosh Eckard,

Lakewood, N. J.

My Dear Mr. Eckard:--

Your kind note of yesterday is just received.

I am sorry it will not be possible for me to come down to any of the meetings you propose, as I have at present engagements for all of my Sundays until next spring. I am very glad to do work of this kind whenever it is possible and should be especially glad to get down to Lakewood and speak in Mr. Butler's Church in the morning, as you suggest, but it will be impossible for me to go.

Very cordially yours,

Ge.cretary.

✓

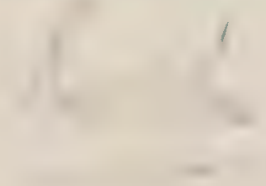
I thank you very much for sending me the article from May 15, Tales, with reference to Missions in Korea. It is good, occasionally, to see ~~the article~~ ~~in the paper~~ ~~in the paper~~. I hope to have it in for the missionary work in "Outing", and a lot of correspondents are whacking away in letters to the "Sun", abusing missions in South Africa. All this is good. It keeps up the agitation and it gives a chance for reply with an audience to reply to.

I hope that you and Anna are going to get off soon and that the Summer may bring you back all that you have lost, so that in the fall you can take ~~the paper~~ ~~the paper~~ ~~the paper~~.

We expect to get off next Monday night for northern New Hampshire.

With much love to Anna and yourself,

Your affectionate brother,



201



July 27th, 1905.

Miss Alice M. Varley,
East Northfield, Mass.

My Dear Miss Varley:--

I have received the reports of two addresses delivered at the Young Women's Conference, and shall hope to send them back to you on Monday.

I am very sorry that my corrections on the other addresses were too late. I have been accustomed to speak very freely to the young men students, with the expectation always of revising what I say, and am sorry that some of the statements will now appear without such revision. Could you send me back the corrected reports which I sent you?

I have written a few book reviews, but they have not been written out yet in typewriting, and I do not think I shall be able to send them soon; and I have nothing for "Notes and Queries" just now.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Secretary.

224

1025



July 23, 1905.

Miss Edith C. Dickie,
Schenectady, New York.

My dear Miss Dickie:

Yes, indeed, I hope you will stay Wednesday and longer, if you find these last days beneficial. Miss Duncan has changed her plan, somewhat, and will not be leaving until the 10th., so that there is no need of your hurrying back at all. I wish we could transport you from Schenectady right over to Diamond Point and keep you there all of August.

I am so sorry that the first days of your vacation did not bring the rest and new strength you needed. I think I shall have to take a hand in giving you instructions for the Summer, hereafter!

We have had beautiful weather for more than a week, now, cool and refreshing; but to-day it is warming up again, still it is not unpleasant.

We are sending off our trunks to-day and are all looking forward, joyfully, to following them on Monday.

I will give the picture to Elliott, and with much love from us all,

Your sincere friend,

1001
July 26th, 1905.

Mr. C. D. Hillis,
Chauncey, N.Y.

My dear Mr. Hillis:

Referring to a recent letter to
Miss Papenhausen replying to your letter of June 20th,
I write to ask whether a transfer of my appointment
to the Asylum from December 31st to March 18th would
be satisfactory. Miss Thompson, whom I saw at North-
field thought that would be satisfactory to Miss
Masters' School.

Very sincerely yours,

A,

July 28, 1905.

Mr. H. W. Rankin,

Brooklyn, N.Y.

My dear Mr. Rankin:

I was very glad to get your letter of July 28th. Mr. S.M.Olyphant of Englewood has spoken to me recently about the biography, and of your suggestion that his uncle should make some provision to guarantee the publication of the biography. I judge that he is likely to do this, probably sending his check for \$1000. to Mrs. McCartee for the purpose, with the expectation that when the book is published, some such arrangements can be made as would be the most advantageous to Mrs. McCartee.

I sincerely hope that you may have strength to finish the book and do much other work beside. As far as the book is concerned, I do not think that any harm is done by delay. The book will have to stand, in any case, not on a wide, popular knowledge of Dr. McCartee's name, but on its own merits as a book and on the interest it is felt the Far East question has made. And there is little likelihood that this interest will abate in the future, although it may of course be overshadowed by the developments in other parts of the world, as for example, by European war or up-heavals in the Turkish Empire.

I think I said before that I would try to finish the work, in case you were unable to do so, but I am very disappointed and hope that you will be able to complete it.

I am not competent to criticise the paper on Dr. Julius. I read it with greatest interest, however. Perhaps some day, I can work myself up to reading the "Philosophia Ultima". I elected Professor Child's course in the Harmony of Science and Religion

[Faint handwritten notes]

[illegible]

I do not want to give you some of my physical strength
and use it to no good purpose, and give it to you who would use
it to the highest ends, but I know that you know more about these mys-
teries than I do. I think about them, and meditate upon them, but you have gone deeper far.

Very sincerely yours,

M.

July 28, 1905.

Mr. Bliss Perry,

Atlantic Monthly,

Boston, Mass.

My dear Mr. Perry:

Sometime ago, the enclosed poem, entitled "The Wrestler" by Martha Gilbert Dickinson was sent me.

I write now to ask whether you would have any objection to my using it on a little card of personal Christmas and New Year greeting, to send to friends next Christmas season.

Ver.

M.

July 28, 1905.

Mr. C. C. Trumbull,

Philadelphia, Pa.

My dear Charlie:

I shall be glad to try to write sometime for you the editorial you suggest in your good letter of yesterday. I do not know how soon I can do it as I am working hard, now, to clear things up in the offices in the hope of getting away for my vacation on Monday. But if I do not find time to write it before I go, I shall hope to find time in August.

Very truly yours,

July 29, 1905.

Mr. David McConaughy,

Silver Bay, Lake George,

New York..

My dear David:

This is just a memorandum for use any time in the future. I think the Presbyterian Church in Williamsport, Pa. of which the Rev. William Charles Hogg is pastor, is a field well worth cultivating. They are giving between one and two thousand dollars as an extra, for the Chapel in Japan in which Mr. and Mrs. Brokaw are interested, and there is no reason why, after this year, they should not continue to give that amount and a good deal more. Mr. Hogg is very sympathetic and I think he would be very glad to have you come out there for the Presbytery meeting this Fall, and he would make room in his church for the course. Another, if you are out that way or have a moment's time, I think it might be well to take hold of this church because it is a good resource.

Very sincerely yours,

M.

July 29, 1905.

Mr. Adelano Gibson,

United States Military Academy,

West Point, N.Y.

My dear Mr. Gibson:

I should have written long ago to thank you for the photographs, which you so kindly sent my boy. He was greatly pleased with them and if he were a year or two older, he would write you himself, thanking you for them. He has every small boy's fondness for military things and sometime, I shall have to bring him up to the Point with me, but that will be, I suppose, long after you have gone away from the Academy.

I hope you are having a good Summer and with kind regards, I am

Very sincerely yours,

211

July 17, 1945,

Mr. E. J. Pierson,

East Northfield, Mass.

My dear Sir:

I have been awfully snowed under and have never had a chance to reply to your letter of June 16th. I do not know whether I will have the material with me next month at Diamond Pond to write up either of the two subjects, but if I have will try to do it. As to the progress article, that will require a good deal of studying, unless one were to prepare a list of questions and send it to the mission secretaries, and I should like to do that. I did it once years ago and I have been ashamed of the trouble I must have put people to. Only the other day, I got a long list of questions from a man, who was just seeing himself work by getting other people to do it for him.

We expect to pass through South Vernon next Monday night on our way to the beatific regions!

Very affectionately yours,



July 11, 1890.

Mr. Joseph E. Perry,

109 West 54th Street,

New York City.

My dear Mr. Perry:

Your kind note of yesterday is just received. As far as I can now see, I shall be able to come to Williamstown for Sunday, December 3rd. and shall try to reserve that Sunday. I can let you know finally sometime in September, if you will be good enough to drop me a note at that time about the matter.

Very sincerely yours,

Amos A. Phelps

✓
July 22, 1907.

The Rev. J. S. M. Mackard,
Lakewood, N. J.

My dear Mr. Mackard:

Your kind note just received. I am sorry to have to say that I have engagements for all three Sundays you mention in the Spring, and indeed for all my Sundays until next June, either finally or tentatively arranged for, or if not these, have invitations from which I shall probably have to pick out engagements.

Very cordially yours,
R. L. Mackard



July 31, 1908.

Mr. J. M. Carter,
Honolulu, H.I.

My dear Mr. Carter:

When you were out at Englewood, I told you that
my father, Mr. J. M. Carter of Huntington, and my Aunt, Miss Clara M.
Carter, were going to pass through Honolulu this Fall. I find
that they will be here all on September 10th. on the "Albatross", for
the Hawaiian Islands. They may call on you. Please do not let
yourself be any liable on their account at all, but I wanted them to
know the pleasure of meeting you. They will have some representative
of the Hawaiian Company with them on the trip, but if they
come to see you, just tell them what they ought to have him take
care of.

July 31, 1903.

The Honorable George N. Carter,
Honolulu, H.Is.

My dear George:-

This will introduce my
uncle, Mr. E.S. McMartrie of Huntington, Ia.
and my aunt, Miss Clara McMartrie, of whom
I wrote to you. They are spending the day
at Honolulu, and I do not want them to pass
through without calling and paying their re-
spects to you.

Yours sincere friend,

July 31, 1905.

Mr. F. C. [unclear],

Washington, Pa.

My dear Uncle Robert:

I have just discovered that my letter of July 10th. was not mailed. I see it in the letter-
box. You and Walter Speer will have to
send me some other article of apparel that will make you
Even those who have never seen you, think you
deserve a technological degree!!

I have just written to-day the notes which I said
in my last letter, I would write, and I have written on besides to one of
my best old friends, the [unclear] Governor of the [unclear] State. He was
here last week and I had a [unclear] with him in [unclear]. I hope that you
will not fail to go to see him in [unclear]. If you do, give him
you went through without giving him a [unclear]. I have
also a note to him and I have written to him, telling him that you will
be there on October 1st.

Very affectionately,
Robert

2

Mr. Hays L. Sweeney,
Swoope, Va.

My dear Mr. McIlhenny:

Your good letter of July 25th. & was received.

I am not sure whether it will be possible for me to go to the University of Virginia this winter or not. I am having a number of things to take care of that I shall like to do, and am having some of the things in the way of a tentative arrangement for, leaving the University which is the thing you have mentioned, to the University of Maryland. That is not definitely settled, however, and as soon as I am able, I may arrange to come down to Charlottesville. I am going on a slight business vacation and shall not settle the matter definitely until I come back the first week in September. I shall let you know then or as soon as I can, so that it will be possible to come. I hope that will be all right.

I am a nice talker, and this morning with your cousin, William Young of Rockledge.

With kind regards,

Your sincere friend,

Robert C. S.

July 31, 1905.

Douglas M. Thornton Esq.,
Cairo, Egypt.

My dear Mr. Thornton:

My uncle, Mr. E.S. McMurtrie of Huntingdon, Pa. and my aunt, Miss Clara McMurtrie, are expecting to make a tour around the world this Fall or Winter, under the conduct of a representative of the Raymond & Whitcomb Company. They expect to reach Cairo on February 19th. They are quite independent in their ways, but they may call on you and I have told them about you. They are both very interested in missionary work, and I hope their visit may deepen the interest of both of them, and be practically helpful to the mission cause. They would not take the time of any one who is not a friend of mine, but I felt sure that if they did come to see you, you would be glad to give them a word of counsel as to what it would be best worth their while to do, and that their visit might serve in some way the interests of the mission cause.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Robert E. Spence

President Howard S. Bliss,

Beirut, Syria.

My dear President Bliss:

My uncle, Mr. E.S. McArthur, of Huntington, Pa. and my aunt, Miss Clara McArthur, are expecting to make a tour around the world this Fall or Winter, under the conduct of a representative of the Raymond & Whitcomb Company. They expect to reach Beirut on April 3rd. They are quite independent in their ways, but they may call on you and I have told them about you. My uncle has ample means and my aunt is very much interested in missionary work, and I hope this visit may deepen the interest of both of them, and be practically helpful to the mission cause. They would not take the time of any one or be burdensome to any friend of mine, but I felt sure that if they did come to see you, you would be glad to give them a word of counsel as to what it would be best worth their while to look up, in the hope that their visit might in some way the interest of the mission cause.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Colbert E. McArthur

H.

July 31, 1905.

Mr. E. C. Carter,

Calcutta, India.

My dear Mr. Toomis:

My uncle, Mr. H.B. McMartrie of Huntington, Pa. and my aunt, Miss Clara McMartrie, are expecting to make a tour around the world this Fall or Winter, under the conduct of a representative of the Raymond & Whitcomb Company. They expect to reach Calcutta on January 11th. They are quite independent in their ways, but they may call on you and I have told them about you. My uncle has ample means and my aunt is very much interested in missionary work, and I hope this visit may deepen the interest of both of them, and be practically helpful to the Mission cause. They would not take the time of any one or be burdensome to any friend of mine, but I felt sure that if they did come to see you, you would be glad to give them a word of counsel, as to what it would be best worth their while to look up, in the hope that their visit might serve in some way the interests of the mission cause.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Robert E. Sage

July 21, 1907.

The Rev. A. A. Fulton,
Canton, China.

My dear Mr. Fulton:

My uncle, Mr. E.S. McMurtrie, of Huntingdon, Pa. and my aunt, Miss Clara McMurtrie, are expecting to make a tour around the world this Fall or Winter, under the conduct of a representative of the Raymond & Whitcomb Company. They expect to reach Canton on November 25th. They are quite independent in their ways, but they are well informed and have told them about you. My mother, who is very much interested in missionary work, and I hope this visit may deepen the interest of both of them, would be particularly glad to see them. They would be glad to see you, and I am sure you would be glad to see them, but I felt sure that if they did come to see you, you would be glad to give them a word of counsel as to what it would be best worth their while to look up, in the hope that their visit might serve in some way the interests of the mission cause.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Robert E. Spear

Jul. 21, 1905.

The Rev. S. W. Rossiter, D.D.,
Manila, P.I.

My dear Dr. Rossiter:

My uncle, Mr. McMartrie, of Washington, D.C., and my aunt, Miss Clara McMartrie, are expecting to make a tour around the world this Fall or Winter, under the conduct of a representative of the Department of Commerce. They expect to reach Manila on November 18th. They are quite independent in their ways, but they may call on you and I have told them about you. My uncle has ample means and my aunt is very much interested in missionary work, and I hope this visit may deepen the interest of both of them, and be particularly helpful to the American cause. They will not take the time to see me as I am so busy, but I felt sure that if they did come to see you, you would be glad to give them a word of counsel as to what it would be best for them to do. In the hope that they will in some way the interest of the American cause.

With kind regards,

Yours sincerely,
John McMartrie

July 31, 1905.

Mr. J. M. Peters,

Nagasaki, Japan.

My dear Mr. Peters:

My uncle, Mr. J. S. McArthur of Huntington, Pa. and my aunt, Miss Clara McArthur, are expecting to make a tour around the world this Fall or Winter, under the contract of a representative of the Raymond & Whitehead Company. They expect to reach Nagasaki in the latter part of the month of September in their ship, but they may call on you and I have told them about you. My uncle has ample means and my aunt is very much interested in missionary work, and I hope this visit may deepen the interest of both of them, and be practically helpful to the mission cause. They would not take the time of any one or be burdensome to any friend of mine, but I felt sure that if they did come to see you, you would be glad to give them a word of counsel as to what it would be best worth their while to look up, in the hope that their visit might serve in some way the interests of the mission cause.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Robert E. McArthur

831

✓

The Rev. D. A. Murray, D.D.

Osaka, Japan.

My dear Dr. Murray:

My uncle, Mr. E.S. McMurtrie of Huntingdon, Pa. and my aunt, Miss Clara McMurtrie, are expecting to make a tour around the world this year, under the patronage of a company of the Raymond & Whitcomb Company. They expect to reach Osaka on November 15th. They will be accompanied by a family, and they may call on you and I have told them about you. Their trip is very much interesting to them, and I hope that they will be of some service to the mission, and be practically helpful to the Mission cause. They would not take the time of any one or be burdensome to any friend of mine, but I feel sure that if they call on you, you will be glad to give them a word of counsel as to what it would be best worth their while to do up. In the hope that their visit will be of some service to the interests of the mission cause.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Robert H. Murray

July 31, 1905.

The Rev. Henry Loomis,

Yokohama, Japan.

My dear Mr. Loomis:

My uncle, Mr. E.S. McMurtrie of Huntington, Pa. and my aunt, Miss Clara McMurtrie, are expecting to sail around the world this Fall or Winter, under the conduct of a representative of the Raymond & Whitcomb Company. They expect to reach Yokohama on October 16th. They are quite independent in their ways, but they may call upon you and I have told them about you. My uncle has ample means and my aunt is very much interested in missionary work, and I hope this visit may deepen the interest of both of them, and be practically helpful to the Mission cause. They will not take the time of any one who is too busy to see any friend or mine, but I felt sure that if they did come to you, you would be glad to give them a word of counsel as to what it would be best worth their while to look up, in the hope that their visit might serve in some way the interests of the mission cause.

With kindest regards,

Very sincerely yours,

Robert E. Spurr
971

July 12, 1885.

The Rev. T. W. McMair,
Tokyo, Japan.

My dear Mr. McMair:

My uncle, Mr. E. S. McMurtrie of Huntingdon, Pa., and my aunt, Miss Clara McMurtrie, are expecting to make a tour around the world this fall or winter, under the contract of a representative of the Standard Oil Company. They expect to reach Tokyo on October 24th. They are quite interested in their trip, and they will call on you and I will tell them about you. My uncle has written me and he says he is very much interested in your work, and I hope their visit will deepen the interest of both of them, and be practically helpful to the mission cause. They would not take the time of any one else in Japan and so my uncle and aunt, and I will write them and tell them to see you. I will be glad to give them a word of counsel as to what it would be best to do while they are here, in the hope that their visit might in some way the interests of the mission cause.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Edmund S. McMurtrie

✓

September 5th, 1905.

My Dear Miss Allen:-

Mr. Spahr has just returned to the city this morning, and instructed me to send to you the enclosed article, on the late Dr. Cochran, for Over Sea and Land.

Unless you have something better, I should think that the little photograph of Dr. Cochran in the Dispensary would be very suitable to accompany this article. What think you?

Very sincerely yours,

September 5, 1905.

Mr. F. L. Chase,

519 Westminster St. Providence, R.I.

Dear Sir:

In reply to your note of August 4, acknowledged during my absence from New York, I am sorry to have to say it will not be possible for me to speak at any of your Sunday afternoon meetings this Fall or Winter. I have already engagements for all my Sundays, until the end of the Winter.

Very sincerely yours,

Mr. D. S. Tappan, Jr.

Circleville, Ohio.

My dear Mr. Tappan:

Miss Dickey answered your note of August 29, received while I was away from New York, stating that our Board meets on the afternoon of September 18, and that I shall be busy all that afternoon.

As it will be the first meeting of our Board after the summer holidays, there may be Committee meetings in the morning at which I may have to be present, but I hope you will stop in that morning, and if there are no such appointments, I shall be very happy indeed to see and hear you very sincerely yours,

s/

September 5, 1905.

Mr. Lyman L. Pierce,
Y.M.C.A., Washington, D.C.

My dear Mr. Pierce:

I have just returned to New York today,
and write at once in reply to your letter of Aug-
ust 17.

It will not be possible for me to come
down for the evening of September 27, or indeed for
any evening in the near future. The work here is
heavier than it has ever been and it will be neces-
sary for me to curtail very much this year my ab-
sences from the office.

Very sincerely yours,

September 5, 1905.

Professor John Meigs

Pottstown, Pa.

My dear Professor:

I have just come back today from Diamond Pond, where we have had a beautiful summer, and where we left Mrs. Heemer, Christine and Helen well and happy.

One of my first calls on returning was from Mr. James M. Speers, who is the active partner in McCutcheon & Company, who came to speak about his two boys whom he wants to get into the Hill this Fall. He has had correspondence with Mr. Hoffer, which will of course come to you. Mr. Speers says that if there is no arrangement by which the two boys can get in this Fall and for the last two years, he will have to give up the hope, which has certainly become a very intense one, of having them go to the Hill, as he wants to have them enter Princeton in two years. He did not know about the rule regarding three years in the school, or he would have tried to comply with it earlier.

I told him it was a rule alright, and besides that rule, there were probably scores of applications ahead of his, but he wanted to have me write just a note about the boys, which I gladly do. I know the family well; Mrs. Speers was a daughter of Peter Carter, and Mr. Speers is from the same village in Ireland from which my grandfather came, and I think, from the same family; I am debarred accordingly from saying anything about him, but the Carter blood is as good blood as there is. Peter Carter was one of the grandest Christians I have ever known. I have often spoken of him by way of illustration to the boys at the Hill. If there ever was an embodiment of unselfish honor, without a streak of

1. 2.

... in the ... boys have their ... off in them, they are good boys to take into ... school.

... home is a fine Christian home, and I think the two boys will be likely to have in them the kind of solid character which it is good to set hold of and to work upon.

I hope you have had a very happy and restful summer, and I am looking forward with pleasure to Sunday the 24th.

With warmest love to Mrs. John and yourself,

Ever, affectionately yours,

s/

September 1, 1888.

Mrs. L. M. Gates,
Rooms 19 & 20 Williams Building
Scranton, Pa.

My dear Mrs. Gates:

I am very sorry it will not be possible for me to go over for the Convention at Scranton the end of October.

I have to be at Wellesley, Sunday October 29, and cannot be in Scranton accordingly Saturday evening, and see no other possibility of being there for any of the earlier sessions. I wish very much I could go and have the talk with Mrs. Boies which you suggest. I have talked with Mr. Odell, however, about the trip, and shall be glad to be of any further service to the party.

Very cordially yours,

1891-1892, 1901.

1891-1892, 1901.

1891-1892, New York City

My Dear William:

I have not been able to find yet among the books I brought back with me, a little book which I intended to bring back, entitled "Gordon Anecdotes." It is a small red book, about four inches square. It may turn up late, in some of our trunks, but I wonder if you could go over to our cabin, or to the baggage room, or to the baggage left in the sitting room, or I may have dropped it in my bed-room. Or possibly I left it in the boat, or dropped it on the way coming up. If you find it, could you send it to me by mail? Please do not put yourself to any trouble about it.

I hope that my letter of yesterday, with the ticket and the mileage book, reached you before this letter gets to you.

Very truly yours,

✓
September 28th, 1900.

Mr. J. H. Clutton,

22 Warwick Lane,

London, England.

My Dear Mr. Clutton:-

I wrote last month, while away on my vacation, the chapter you kindly invited me to write for your book for theological students. It has been all written out in typewriting, and I shall now be able to send it to you within a week or two. I am not altogether pleased with what I have done, and if it does not cover just the ground that you wished me to cover, I hope you will not wait to get all of the chapter back, and to get something else will meet the important need that you have in mind.

Very cordially yours,

October 10, 1904.

The Rev. W. T. Miller, D. D.,

Millbrook, N. Y.

Dear Sir:

My Dear Sir: "Influence"

I shall trust you to let me know what time in the year you will want me to speak on "Influential Teachers."

I was glad to see your plan of getting men who had a few years in the pastorate to train as teachers in the English Bible in colleges, etc.

I was interested in what you wrote of the need which you had been unable to supply for such a teacher in the Chicago University. I would like to suggest the name of the Rev. L. F. Crane, now of Woodstock, Connecticut, for this place. I knew Crane in Princeton; he had a pastorate in the city, and was a member of the Chicago University. He was then a member of the Chicago University, and was a member of the Chicago University. I judge that he is the sort of man you are looking for. He is pastor of the Presbyterian Church at Woodstock, Pennsylvania.

Very cordially yours,

September 6th, 1905.

Mr. F. W. Andrews,

Plainfield, N. J.

My Dear Fred:-

I had a call this morning from the Rev. E. H. Herron, pastor of the Episcopal Church at Hook, who told me that he was a candidate for the Chaplaincy at West Point. He had been at West Point of course this summer, and was very much attracted to the place, and said that General Miles had spoken to him in a very encouraging way, and asked him to make application for the position and to let him know in case he did so. He wanted me to write to the President endorsing his application; and he had a letter from his Congressman, in which he stated that he had seen the President with reference to it. I told him that I could do nothing apart from you and Mr. MacFarland; that I understood Mr. Terft's preference to be for an Episcopalian, and his principle was that those who were anxious to get the place were the men who should not have it. But I told him that I had been away for some time, and did not know the situation at present, and that no one was more interested than you; so I gave him a note of introduction to you.

I do not know him very well, and I do not know whether he is the man or not. My instinctive judgment is adverse. I am sure that he is a smoker, and I am not sure that he is a total abstainer. And I would not recommend any man to West Point for Chaplain who did not err in these matters, if at all, on the side of the higher principle.

I am not sending him to you with the intention of expressing any judgment as to his fitness, however, and I certainly would not want to evade any responsibilities in telling him that I did not think he was the man we needed, if that was the judgment to which I should come on further knowledge. But it seemed to me that if General Miles had been willing to him, and if he had been in the way of success, it was desirable for you to know it that you and Mr.

Mr. Andrews, ?

The letter might also have been sent to me if it is the case for the place.

This is just a confidential note to you. Inasmuch as he asked me to endorse his application, I could not find in any tactful way to object to it, in that I should want to know the right thing to do, without speaking directly to him on the grounds by I could not approve.

I hope that you and Mrs. Andrews and Louise have had some vacation this summer, and looking forward to seeing you before long, I am,

Ever affectionately yours,

September 6th, 1905.

The Rev. Harlan P. Beach,

3 West 25th Street,

New York City.

My Dear Mr. Beach:-

I enclose herewith the article for the October Intercollegian, summarizing one of my addresses at Asheville and Lakeside.

Very cordially yours,

September 7, 1905.

Miss Helen Temple Cooke,
Wellesley, Mass.

My dear Miss Cooke:

Mrs. Speer and I came home yesterday from northern New Hampshire, where we were spending our vacation, and I read with great pleasure your good letter of August 15 on my way into the office this morning.

I am glad you had such a pleasant and profitable trip into Alaska, and that the missionary impressions are so vivid.

I shall be very happy to come to Dana Hall again unless some obligation should appear to go to the College. Miss Caswell writes that they will expect me to speak at the College in the morning, and also before a missionary meeting of the Christian Association in the afternoon or evening; but if I stay at Dana Hall, I can be at Chapel in the morning, and whether I stay there or not, can come for the closing hour of the day on Sunday, and shall look forward with great pleasure to doing so.

I shall, of course, let you know later when I can hope to reach Wellesley.

Mrs. Speer will be very much interested to know the Silver Bay plans and we shall look forward with pleasure to seeing you there next summer.

Among the other letters which I found awaiting me was one about which I hasten to write to you. It is from an English friend who is a missionary in North China; he is one of the strongest, most original men I know, and I think I had better send you his letter, instead of quoting any part of it. Could you take his daughter at Dana Hall? I imagine Mr. Jones' standards of promptness and energy are so high that others will not regard his daughter as dilatory and indolent, as markedly as he does. He is a man of such perfect veracity of mind, however, that he sees everything in very sharp and clear outline.

Miss M. P. T. L.

Of course there are other schools and "not over a hundred miles from New York", but they are not Dana Hall, and if by any possibility you could take Mr. Jones' daughter, I should feel that I had fulfilled the duty of a friend to my friend.

Will you please return Mr. Jones' letter so that I can reply to him? From the fact that he does not give his daughter's address, but expects me to write to him, and that he will write to his daughter, I suppose that he expects to send his daughter in the Fall of 1906.; although he may be thinking of having her come this Winter.

With warm regards from Mrs. Speer and myself,

Your sincere friend,

September 11, 1901.

Miss Mary Caswell,

Wellesley College, Wellesley, Mass.

My dear Miss Caswell:

I have been away the last month, and write as soon as possible after returning yesterday in reply to your kind note of August first.

I should be very glad to speak for the Christian Association, the afternoon or evening of October 29. Miss Cooke wants me to meet her girls at Dana Hall, and if there is no objection and if it does not conflict with any of your wishes for my visit, I should be glad to stay at Dana Hall, as I did last year, and come up to the College for any meetings you may desire.

Very cordially yours,

S/

September 6, 1905.

Mr. E. M. Bulkly,

Saranac Inn, Franklin, N.Y.

My dear Mr. Bulkly:

We came home from northern New Hampshire yesterday and I write as soon as possible, after returning to my office, in reply to your good letter of August 30 in reference to the nomination of Mr. Dulles for the office of Mayor in Englewood.

I do not need to say that I should be heartily in favor of such a nomination, and would lend it all the support I could. I couldn't, however, very well unite in a petition asking for his nomination by the Republican Party--I should prefer to give him my support as an Independent Democrat, which I should be most happy to do. I would be glad to attend the Democratic caucus in my Ward, and support its endorsement of Mr. Dulles.

We had only one candidate for Mayor when Mr. Platt was nominated as a Democrat. That would furnish a pretext in suggesting that we should have only one now, in case Mr. Dulles should be nominated, but I am afraid it would be only a pretext, however, and if Mr. Dulles should be nominated by the Republicans, the Democrats would be sure to nominate someone else; in which case I shall be happy to assert my independence and support Mr. Dulles with all my heart.

I hope that you are gaining considerably in strength and may come back in better health than you have known in years. We shall all rejoice to see you when you come.

The street is blocked in front of your house just now with sewer excavations, and I am glad to see the foundation almost done for my house. I shall

541

E.M.B. 2

much more freely, however, when it is all done and we are safely in.

With warm regards,

Affectionately your friend,

Mr. D. J. Nichol,

3 West 20th St.,

My dear Mr. Nichol:

On returning this noon, I found your note of August 21 awaiting me.

You are counting upon me, are you not, for Thursday, September 28, and Friday morning the 29th? That will enable me to get to New York on Saturday.

Please do not take the trouble to reply; I shall just assume that this is the arrangement.

Very cordially yours,

✓
September 7th, 1905.

The Rev. Robert Watson,
2603 Eden Avenue,

Mt. Auburn, Cincinnati, Ohio.

Dear Mr. Watson:-

I know young Abraham Thomas very well. His father was cook for us on a long journey in Persia, and has often been employed as a servant by the missionaries. The boy came to this country of course with no recommendation from us, but having come, we tried to do what we could for him; and his own countrymen who are here have gone to the limit in helping him. He has not shown himself a reliable boy, and one of the best of his own people, who is Professor in Columbia University, who has done a great deal to help him, tells me that he fears the boy is not altogether sound mentally; and I think that is the most charitable way of accounting for some of his performances. No help should be given him except on a charitable basis, and even as it would be given to anyone in need. Certainly it could not be considered a missionary contribution; but just as we should want to help anyone who is willing to work honestly, so I think we ought to do what we can for young men like him.

Thanking you very much for writing about him, I am,

Very sincerely yours,

2001, 1st Edition

1. 2. 3. 4. 5.

1. 1. 1. 1. 1.

Ergebnisse, Zusammenfassung

1940

I'm a busy guy from New York City and don't have time to write you.

7

... ..

... ..

It may be noted that the above is a very general statement of the principle of the method of moments. The method of moments is a very general method of estimation, and it is not necessary to assume that the distribution is normal. The method of moments is a very general method of estimation, and it is not necessary to assume that the distribution is normal.

... ..

relief in such cases, but I know of none. Our Board is of course limited in

The use of the money given to it for specific purposes, and it would not be

I journey as teller to ease a none of money all to was applying in detained

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

little help, and am suggesting to him the possibility of getting help from a

new friends in Denver. I am writing to Dr. Curtis also, who may be able to

and a little help.

✓
September 5th, 1908.

Mr. W. H. Danner,
Young Men's Christian Association,
Denver, Colorado.

My Dear Mr. Danner:-

On returning to New York this week, after an absence of a month, I found your letter of August 17th, and Mr. Gabriel's letter of the previous day. I do not know the young man at all, and we have of course to do our best to dissuade the young man from leaving his own country and coming to America, with the idea that this is a Paradise, and that we will find the streets paved with gold, and men, people eager to educate them and send them back to their own country. Experience has shown that such education does not develop the kind of men whom we need. At the same time, I can understand why the young man should want to come away from the terrible destitution and persecution of Turkey and Persia; and have been glad where they have shown themselves to be honest, self-respecting men, to help them in personal ways. Of course it would be entirely improper for our Board to take its missionary funds and apply them to such a relief case as this. I have written to Mr. Gabriel to this effect, and told him that I would write to you that I would be glad to make a little contribution personally for him, and would suggest the possibility of your getting a little money for him from friends in Denver. I enclose herewith ten dollars. Could you not get a few sympathetic persons in Denver to furnish a little money? I judge from your letter that the young man has only a few months to live, although his letter would seem to indicate that he expects to be able to leave the Balk. I am writing also to Dr. Curtis of Cincinnati, who was his pastor there, he says, in the hope that he may be able to send you a little help. I have nothing more about the case that is contained in your letter and Mr. Gabriel's. It is apparently a simple case of heart.

September 11, 1895.

Mr. F. C. Mercer,

P. O. Box 1232,

New York City.

Dear Mr. Mercer:-

There are several lives of Chinese Gordon, the most recent of which is by Sir William Butler, published by Macmillan and Co. Then, there is a life by Archibald Forbes, published by George Routledge & Sons; and a very full one, which, however, does not cover the last years of his life, written by A. E. Hake, and published by Penington and Co., London. One of the best little books is a small one by Dr. Macaulay, entitled "Gordon Anecdotes." The most characteristic and illuminating book of all, however, is the little volume of letters to Gordon's Sister, published by Macmillan.

It was a pleasure to hear from you, and shall always be glad to be of service to you in any way I can. I hope you have had some rest this summer, and trust that the coming winter's work may be better than any that has gone before.

Very cordially yours,

September 7th, 1905.

Mr. J. M. Watson,

100 Madison Avenue,

New York City.

Dear Mr. Watson:

I am sorry to hear that you are
not able to attend the meeting.

Very truly yours,

September 7th, 1905.

Mr. J. M. Watson,

100 Madison Avenue,

New York City.

My Dear George:

I expect to be at Detroit only
for the first evening and the following day,

and I am sorry that I cannot
write for a short article that you wish, and in
case still of course be glad to write it. It is

very a pleasure to hear of the
thing for you.

Mr. Coe tells me that he hopes to have you
speak at a meeting for men in our town
on Sunday, the last Sunday of this month.

I am sorry that I cannot
attend, and that I am not able to be home the
day, in which case you must not accept an invitation
elsewhere, but not to stay with us for a few days.

Very truly yours,

September 7th, 1905.

Mr. W. W. Tucker,

Brooklyn, N.Y.

My dear Mr. Tucker:

I enclose herewith a letter from
Miss Miller of Canada, and a copy of my reply.
The letter is in invalid, and so I have written
a gently but firmly, and so I have written
is of the same nature. I am sure you will
be able to understand just a little better what I mean
yourself, breaking the edge of her disappointment?
Very cordially yours,

Mr. William Smith Pettit,

Campobello, N. Y.

My dear Mr. Pettit:-

I was just returned from
New York this week, and hasten to write.
For your kind note of August second, which I
lines from New York, and I am sure you will
sort, which was a great pleasure to me.
Truth in a gripping way.

Very sincerely,
W. W. Tucker.

L

August 10, 1901.

Mr. C. W. Vickrey,

150 Fifth Avenue,

New York City.

My Dear Vickrey:-

I was not able to read until yesterday, your kind note regarding the Silver Bay Conference. I was very glad to be present, and to see that the Conference was going forward so successfully. I did not see enough of it to be able to form any judgments as to its character and administration.

Rejoicing that the Movement has had such a successful summer, I am,

Very sincerely, Wm. D. Howells.

September 30th, 1905.

The Rev. Clayton S. Cooper,
3 West 29th Street,
New York City.

My Dear Cooper:-

I shall be very glad of course to serve on such a Committee as you suggest in your letter of July 28th, which was received and acknowledged during my absence from New York.

Thank you very much for the most interesting and encouraging statement showing the growth of the number of men enrolled in Bible classes.

Have you ever made any investigations to find out how many of these men actually put any time on the study of the courses? I had a talk recently with a man from one of our leading Universities, where some hundreds of men are enrolled, who expressed a good deal of dissatisfaction with the conditions there, because, while the men keep their names on the lists, and more or less attended the classes, they did not do the work on the Bible, but merely looked over the text book, or came to the class without even having done that? What proportion of the men at Yale or the University of Illinois, for example, actually put in say ten minutes a day on the study of the lesson? I do not ask for any reply, but simply to raise the question for your own consideration.

Very cordially yours,

September 7th, 1906.

Miss F. U. Miller,

Watkinsburg, Ontario, Canada.

Dear Madam:-

Your kind note of August 4th, with the words and the music which you addressed for a hymn, was received and acknowledged while I was away from New York. I have read your letter and the hymn with much interest, but do not know enough about music to form any judgment as to the tune you have written. I am in a good deal of doubt as to whether the words of mine which you quote, have really enough in them to give birth to a hymn. I am very grateful to know that they were helpful to you, and I appreciated very much your kindness in sending me the little hymn to read. I am sending it to Professor Jacobs, whom you mention, and shall ask him if he makes no other use of it, to return it to you.

Very sincerely yours,

Rev. S. M. Zwemer,

Malabar Hill, Bombay.

My dear Sam:

I was away from New York during August, but found your letter of Aug. 12, waiting when I got back.

I will bring up the matter of our new building almost immediately, but I do not believe that anyone from the office will be able to go with you. Dr. Dennis, who is a member of the Board, might be able to go.

Of course, anything that I can do I shall be glad to do to help you.

I hope you had some little rest this summer, and will not come to the work of the Fall and Winter tired out.

Be sure to stop in the next time you pass through the city. With the earnest prayer that God may bless your visit to Yalta, and make it the means of converting some of the men there of their personal duty toward the Mohammedan world,

I am,

Ever affectionately your friend,

S/

September 11, 1905.

Dear Mr. [unclear],

[unclear]

[unclear]

On the Thursday before we left camp, a registered envelope was sent to me from my office here. It had not come when I left there, and we did not stop for mail on Tuesday, so I suppose it must have come after we left.

I should have it as soon as possible, and I write to ask if you will have it returned to me. I should have supposed it would have come back before this, but the delay may be due to the fact that it was registered. At any rate, if it has not started back already, please send it down at once.

I hope you are all well at the camp, and am,

Very cordially yours,

✓

September 11, 1905.

Miss Helen Temple Cooke,
Wellesley, Mass.

My dear Miss Cooke:

Your very kind letter of Saturday is just received, and I am writing to Mr. Jones, forwarding it with the Year-book and application blank.

I very much hope that his daughter may be able to take advantage of your very generous offer.

I had a note this morning from Miss Caswell, in which she allows my suggestion that I should stay at Dana Hall. It is possible that Mrs. Spear may be able to come up with me.

With kindest regards,

Very sincerely yours,

s/

September 11, 1905.

Miss M. J. [unclear],
 100 [unclear] St., [unclear], [unclear].

Dear Mr. [unclear].

I was away from New York during the month of August, and did not receive your good letter of July 7 until last week when I returned.

It was a great pleasure to hear from you, and be given an opportunity to endeavor to serve you. The school I am referring to which I know is Lake Hall, Wellesley, Mass. This is where I would send my own little girls if they were old enough to go away to school now, and it is the school to which a friend of mine, who has one of the best boys' schools in the country, and whose judgment I would most trust in such matters, has sent his daughter. Wellesley is a few miles from Boston, and is more than a hundred miles from New York, but it is quite accessible, and I thought you would rather have the best school, even though it might be a little farther away. I wrote at once, accordingly, to Miss Cooke, the head of the school, and have just this morning received her reply, which I enclose herewith. I am also enclosing ^{you} also the first book and application blank which she has sent you.

I was very glad to hear how you would like your daughter to come over here; from the date of your letter I suppose you had in mind not this school year, but the school year beginning the Fall of 1906. If it is your wish for her to come, as you will see from the enclosed letter, no school is better, and in view of that fact, I should suggest Mrs. Life's school at Rye, N. Y.; my younger sister went to this school. It is only a few miles from New York, and I hope, however, that your daughter can come to Mrs. Cooke's school. It is a school of quite a different atmosphere and character, and the girls are going to college, so that the intellectual standards of the school are kept high in fact. The other half are going out into life, so that the atmosphere of the school must be kept so as to fit them for the home life.

101
A. G. J. 2.

If there is any further service I can do in connection with the matter, will you let me know? If I can meet your daughter when she comes and see that she gets on to Wellesley, I shall be very glad to do so.

I am glad that the Educational Union is going forward steadily; I know some of the snags on the field, and we have some at this end too, but they cannot stop the stream or divert it from its proper course.

With the most pleasant memories of our past meetings, and the hope of seeing you again before many years,

I am,

Very cordially yours,

✓

September 17, 1902.

Mr. H. W. Frost,

c/o Diamond Pond, N. H.

My dear Mr. Frost:

Your letter of September 8 is just received. It was only a pleasure to hear from Elsa with us and to see her at the camp this summer. I hope that her outing did her real good, and that she may be the stronger for the winter's work in consequence.

I enclose herewith a copy of a letter which I am sending out regarding the proposed meeting on October fifth. I put the proposition as to an equal division of the traveling expense rather tentatively to them, confident that Mr. Stone, Mr. Stone and Mr. McConkey would not consent to it. I am rather afraid that it is probable that they will not be able to go to Princeton, and might have to stay at home if the proposition is not accepted.

Please write frankly if you think anything else should be said, and make any suggestions that occur to you.

I am so glad that you were up at the camp, and hope that Mr. Coleman will entice you to a thorough rest, and store up in your body strength for the physical demands which the winter work will make upon you.

Ever affectionately yours,



September 9th, 1905.

Dr. James H. Canfield,
The Library, Columbia University,
New York City.

My Dear Dr. Canfield:-

Can you tell me in what version of the Bible the seventh verse of the 37th Psalm reads - "Be thou silent unto God, and let him mould thee"? I have an impression that it is in one of the Prayer Book versions.

And can you tell me in what poem of Lowell's the lines occur -

"If chosen men had never been alone
In deep mid-silence, open-doored to God,
No greatness ever had been dreamed or done,
The nurse of full grown souls is solitude."

Please do not take any trouble or time to answer these inquiries, but I thought perhaps you might have the information at hand without needing to look it up.

Very cordially yours,

✓
September 9th, 1905.

Mr. Fred H. Andrews,

Plainfield, N. J.

My Dear Fred:-

I was engaged yesterday morning when you called me up on the telephone, and when later I was free and tried to get you, I could not. Since writing you the other day I had a talk with Mr. P. L. Colver, of Tensley, with reference to Mr. Herron. Mr. Colver says that Mr. Herron stood very well there, that he was an eloquent preacher, a man of excellent tact, genial and friendly, pretty liberal in his attitude and opinions. He knew that he was a smoker, but he did not know whether he used wine or not. He thought he was a real religious leader in his church, but perhaps more of a good minister of the ordinary type than of an aggressive and energetic man of consecration and spiritual power. On the whole, his judgment of Mr. Herron was very favorable. He did not know, however, of the matter of the chaplaincy at West Point. I do not think Mr. Herron knows very much about the Northfield side of things, or the work of the College Young Men's Christian Association, but I think he would be sympathetic. I do not know whether he could stand up against the loosening influence of the Faculty at West Point, and he isn't exactly the sort of man we have been looking for.

I wonder how the Rev. L. B. Crane would do? He is a Princeton man, who taught the English Bible at Princeton for a year or two after his graduation. Then he had a church at Buffalo, and from there went to Chicago as Professor in the Congregational Theological Seminary there. He told me that he was a little too conservative for them, however, so he resigned, and is now in Woodstock, Conn. I do not know whether he has enough of the magnetism and grip of men that is wanted, but perhaps that could be found out. Sailer would have good judgment on that point; so would Maitland Alexander of Pitts-

Mr. Andrews, 2.

burg; so would A. H. Whitford of the Buffalo Young Men's Christian Association.

Very affectionately yours,

September 9th, 1905.

Mr. W. H. Hartshorn,

120 Boylston Street,

Boston, Mass.

My Dear Mr. Hartshorn:-

I return herewith the report of my Address at Toronto, having cut out a good deal of it, I hope enough to bring it down to the requested limits.

Very cordially yours,

September 12, 1905.

Mr. William Stahl,

372 So. Centre Street

Pottsville, Pa.

My dear Mr. Stahl:

I was glad to get last week your letter of September 6. I have not forgotten you, and shall be glad to mention you at any time., in connection with any need of which I hear, which I may think would interest you.

Please let me know if you move away from Pottsville, or if you hear of anything where a word from me would be of service to you.

Very cordially yours,

✓

September 9th, 1905.

Mr. J. W. Kindregan,

78 Abbott Avenue,

Waterbury, Conn.

My Dear Mr. Kindregan:-

Your very kind note of September 4th was received several days ago. We were very sorry not to see you to say good-by. After I found you were out, and had left the little book at your house, I took Margaret in the boat, and we started out to find you on the Pond, but it began to rain a bit, and as all the children's clothes had been sent off except those they had on, I took Margaret back to the landing. It was so good to see you and Mrs. Kindregan again this summer, and we shall look forward to next summer in the hope of being with you again. I trust you may have a pleasant winter, and that Mrs. Kindregan's health may be very much improved.

With kind regards from all of us to you both, I am,

Your sincere friend,

s/

September 12, 1905.

Invitation to a quiet day of conference and prayer:

Last year a little company of friends began the work of the Autumn and Winter by spending a quiet day together in New York City. The experience proved so helpful that it has seemed to some of those present that it would be very desirable to spend a similar day this Fall, and after conference with Mr. H. W. Frost and W. H. Grant, and at the suggestion of others who were present last year, I am sending out this invitation to the following men:

| | |
|------------------|-----------------|
| H. W. Frost | H. P. Beach |
| H. C. Coleman | W. R. Moody |
| C. R. Erdman | F. P. Turner |
| Walter Erdman | T. H. P. Sailer |
| James McConkey | W. H. Grant |
| J. B. Ely | H. E. House |
| C. A. R. Janvier | C. B. McAfee |
| J. R. Mott | J. D. Adam |
| H. W. Hicks | J. T. Stone |
| D. McConaughy | W. W. White |

Last year the meeting was held in New York. It has been felt that this year, both for the sake of more separation from interruption and also in order to meet at some more central place, and in view of the fact that so many of those mentioned above are from Philadelphia, it would be well to have the conference at Princeton, where it would be possible for us all to lunch together and if desired, take tea together

and where we can have a quiet place in the Seminary buildings.

It has been proposed in view of the fact that those who are mentioned would come from varying distances, with varying expenses of travel, to equalize the cost to each, by having the entire expense of travel lumped and divided; what would you think of this proposition?

It is very desirable in such a conference to have no interruption or withdrawals during the day. If those coming from New York could take the 8:25 A.M. train from West 23d Street, and leave Princeton at 5:48 P.M. returning; and if those coming from Philadelphia could take the 8:20 A.M. train from Broad Street and the 6:18 P.M. train from Princeton returning, we could have the whole day, from half past ten in the morning to half past five in the afternoon. The date proposed for the conference is Thursday, October 5.

Will you be able to be present? If you could not come to Princeton, could you be present at such a meeting if it were held in Philadelphia or in New York?

We do not get together enough in such conferences as these, where men who are working through different lines and yet are of common sympathies, give one another what help they can, and seek together the help of God.

Sincerely trusting that you may be able to come to the proposed meeting, I am,

Very sincerely yours,

This letter was sent to:

H. W. Frost
H. C. Coleman

C. R. Erdman
Walter Erdman

James McConkey
J. B. Ely
C. A. R. Janvier

J. R. Mott

H. W. Hicks

D. McConaughy

J. W. Beer

H. P. Beach

W. R. Moody

F. P. Turner

T. H. P. Sailer

W. H. Grant

H. E. House

C. B. McAfee

J. D. Adam

J. T. Stone

W. W. White

✓
September 28th, 1905.

Mr. James L. Houghterling,
164 Dearborn Street,
Chicago, Ills.

My Dear Mr. Houghterling:-

Your kind letter of the sixth was received yesterday
I am sorry that I shall not be able to get to the Chicago Convention. I should
like to come very much, in just the capacity you suggest, as a visitor to mingle
with the men in personal intercourse. But my work here will prevent my getting
away.

Trusting that the Convention may accomplish all that you have hoped,

I am,

Very sincerely yours,

September 9th, 1905.

Mr. Wellington M. Logan,
Young Men's Christian Association,
Detroit, Michigan.

My Dear Mr. Logan:-

I am sorry it will not be possible for me to speak at any of your men's meetings in Detroit this season. I have already all my Sundays full until spring, and on no one of them do I expect to be in or near Detroit.

Very cordially yours,

September 9th, 1905.

Mr. T. Ralston Grant,
123 Tremont Avenue,

Orange, N. J.

My Dear Ralph:-

I hope you got your trunk all right. We brought it in with our luggage last Monday on leaving Camp, and got from the baggage agent your check and attached it to your trunk.

I am sorry you had to leave Camp, and hope you found your brother improved, and that he is now well on the way to recovery.

Very cordially yours,

September 9th, 1905.

Mr. Dumont Clark, Jr.,

Tenafly, New Jersey.

My Dear Dumont:-

I am very sorry to have missed seeing you yesterday morning, but I was engaged all day in a conference over affairs in Japan. Still, Mr. Baer was not in his office yesterday, and will not be back until the 14th. If you should come in some time when he is in and I am not, do not hesitate to go straight to him. He will be delighted to see you, and I think you can count on his hearty acceptance of any invitation you can give him to come down to the College.

Thank you very much for the article on Senator Beveridge. It has a lot of good truth in it. I had not seen it, but I read it with very much interest going home last evening. I have the paper here, and can send it back to you, or give it to you when you come in.

Mrs. Speer and I were very glad to have you in our home the other evening, and hope you will come up whenever you can.

Very cordially yours,

September 12th, 1905.

"C. T."

Press Office,

Englewood, N. J.

Dear Sir:-

I noticed in the Englewood Press for September 9th, your advertisement with reference to a desirable residence in Englewood. The house in which I am living, on the corner of Chestnut and Brayton Streets, is a very comfortable house, and I expect to give it up some time this winter. My lease runs until the first of May, but I hope that my own house will be ready for occupancy in January, at the latest; and in that case, I should be glad to transfer my lease for the rest of the year. The house is owned by Mr. F. A. Parley, of Milburn, New Jersey. I have no word from him as to his desires, but I think he would be glad to have a tenant who would take the house for a three years' lease.

Very sincerely yours,

September 12th, 1905.

Mr. Gilbert Beaver,

Strawberry Hill House,

Bethlehem, N. H.

My Dear Gilbert:-

Thank you very much for your

note about the "Gordon anecdotes." Emma found them subsequently, and I was sorry to have troubled you; but I knew that if the book had been left at Camp you would find it, and it was important that I should have it at once.

I hope that you may all have a good concluding chapter to the summer at Bethlehem, and look forward with joy to seeing you back in the city.

Your affectionate friend,

September 12th, 1905.

Mr. Joseph E. Perry,

Williamstown, Mass.

My Dear Mr. Perry:-

I shall look forward with

pleasure to coming to Williamstown for Sunday, December third.

There are several men entering Williamstown in the Freshman Class this fall that I wish you would look out for, and see that they get into the right Christian associations from the beginning. They are all from the Hotchkiss School - Loomis, Roland and Horwell. Loomis and Roland are sons of missionaries in Japan. All three are, I think, straight Christian fellows, and ought to grow up into strong Christian influences in their college life.

Very sincerely yours,

September 13, 1905.

Mr. W. R. Moody,
East Northfield, Mass.

My dear Will:

I received last week your notification of the meeting of the Corporation and Trustees of the Mount Hermon School, the same day I got back from Diamond Pond.

We had a fine time this summer; I wish you might have been up there with us, but Wright tells me that you and he are starting off on a great junket to Labrador. I hope you may have a fine time, restful and healthful.

With warm regards to all of the family,

Very affectionately yours,

September 13, 1905.

Mr. Glen Wright,
2 Wall Street, New York.

My dear Mr. Wright:

Your kind note of yesterday, with its enclosed check covering the bonds I left with you for sale, is just received. I am very much obliged to you for your kindness.

I envy you the privilege of the trip you and Will are going to take, and trust you may have a thoroughly pleasant and healthful time. I shall look forward to seeing you after your return, and hearing your impressions and experiences.

Very cordially yours,

s/

September 13, 1905.

September 13, 1905.

Miss Christine P. Hammer,

Diamond Pond, N. H.

My dear Christine:

It was very good of you to remember my birthday, and send me the beautiful little picture of our Pond. It made me very home-sick to get back. I am looking at the picture now, and I can see where the trail strikes off to Nathan's Pond, and the outlines of the hills at the foot of which the Swift Diamond is running down to the Magalloway, and I remember that on Friday of this week it will be lawful to go out after partridge and deer. The feelings that I have when I think such thoughts almost make me ashamed of myself as an unchristianized heathen, for I should like nothing better than to descend to the kind of clothes you have seen me in sometimes, and go off into the woods to be a murderer of poor, innocent creatures that never did anyone any harm. If I do not hurt any more than we did on that terribly wet day at the beginning of the partridge season last September, I could persuade myself that I was a Christian after all.

I hope that you are all well, and having a happy time. We think of you daily, and rejoice that we had so long a stay this summer.

With kind regards to your mother and Helen,

Your very sincere friend,

s/

September 15, 1905.

Mr. W. H. Grant,

Diamond Pond, N. H.

My dear Harry:

You will be shocked and grieved to hear, as I was yesterday, of the tragic death of the Rev. A. G. Jones of Shantung. He was spending part of the summer on the slope of Taishan, one of the most sacred mountains in China, in old temple, finishing some literary work. On July 17 there was a cloud burst on the mountain, the flood rushed down on the temple in which Mr. Jones was staying, and the temple fell in upon him, probably killing him instantly. The servant who was sleeping in the same room with him was also buried, but some beams protected his body in such a way that the next morning he was dug out, comparatively uninjured.

Dr. Bergen has written a beautifully appreciative letter regarding him.

You will be sorry to hear also of the death of Mr. Russell, who, as you remember, rebuilt the Wei Hsien Station for us, and who was to return to Shantung to the English Baptist Mission.

I hope that you are well, and I envy you the privilege of being at camp the day after tomorrow.

Ever affectionately yours,

s/

September 13, 1905.

Miss Helen Temple Cooke,

Wellesley, Mass.

My dear Miss Cooke:

I was shocked and grieved to learn yesterday of the sudden death of Mr. Jones, about whose daughter I had written you. Mr. Jones was spending part of the summer on the slope of Taishan, one of the most sacred mountains in China, in an old temple, finishing some literary work. On July 17 there was a cloud burst on the mountain, the flood washed down on the temple in which Mr. Jones was staying, and the temple fell in upon him, probably killing him instantly. The servant who was sleeping in the same room with him was also buried, but some beams protected his body in such a way that the next morning he was dug out, comparatively uninjured.

I presume this will, of course, change all plans with reference to Miss Jones.

With kind regards,

Very cordially yours,

Oct

✓

September 13, 1915.

Mr. William Dulles, Jr.

Saranac Inn, Franklin Co. N. Y.

My dear Will:

It was a great pleasure to get yesterday afternoon your good letter of the day before. The Persian party was to travel from London Monday of this week, but we cabled Mr. Wilson on Saturday "Use discretion as to proceeding to Caucasus". Things may quiet down quickly. Mr. Esselstyn came through Baku this morning, and had no trouble there, although as you remember, there were earlier troubles there. His difficulty was in coming through Russia by rail; there were interminable delays and often the train would creep along its way, guarded by Cossacks from the threatened attacks of strikers. If Mr. Wilson and his family were alone involved, they could go on without going over the disturbed region about Baku; when we went to Urumia, we did not go anywhere near Baku, but the East Persia people would have to go through Baku, and of course the party would not be likely to separate. I hope they will stay in England until they have assurance that it would be in every way safe for them to go on. They are of course in a ^{better} position to get reliable information in London than we are here.

I was away from Englewood all of August, and so have not heard very much of municipal politics. I do not know what Watson's attitude will be on the license question. I am ashamed of myself for not knowing more about the political complexion of the ward, and I have been making some good resolutions. I have not seen Mr. Pierce this Fall and the only person with whom I have had any conversation on the question was with Rowland Vermilye.

I am so glad that you are having a good rest, but we miss you and the Bulkleys.

W.D.Jr.2.

Tell Sophie we had some good corn from your garden the other day, and that Chang has been to see us once. When he dies, I want you very much to have a canine alienist make an examination of his brain.

Powers Sailer and his family got home this morning, and it will be good to have you back again soon.

With much love from our family to yours,

Always affectionately yours,

September 9th, 1905.

Mr. S. E. Bridgman,

Northampton, Mass.

My Dear Mr. Bridgman:-

It was a pleasure to receive yesterday, your note about George Bowen. There is a uniform edition of Bowen's three books, - "Daily Meditations," "The Aims of Jesus," and "Love Revealed," published by a firm abroad. The first of these books is published here by the Presbyterian Board of Publication, but they say the other two are out of print.

There is no biography of Bowen, nor anything more than brief sketches, such as those to which you refer. But it is my purpose some day to publish a full biography. I have been gathering for several years the material for it. Bishop MacDonald of the Methodist Church in India, into whose hands Bowen's papers passed at his death, has turned over to me all that he had, together with a complete file of the Bombay Guardian, in which Bowen's autobiography appeared. I have also many of Bowen's letters to his Sister, which Dr. Atterbury got for me, and I have journals and papers of his of the greatest value. The material is still very incomplete. I have experienced the greatest difficulty in getting personal reminiscences from those still living who knew Bowen; and I have offered to send stenographers to some of them, to get their recollections, but thus far in vain. I shall be very grateful for any help that you can give. Could you not get the classmate, to whom you refer, to write down all his reminiscences and impressions?

With kind regards,

Very cordially yours,

September 13, 1905.

Mr. Angus C. Cameron,

University of Toronto, Canada.

My dear Dr. Cameron:

Your good letter of August 25 was acknowledged while I was still away from New York.

It is a very strong and cordial invitation which you have conveyed, and I wish that I could accept. My visits to Toronto have been most delightful, and I should be happy if it were possible to come back this year to your University. I have all my Sunday engagements, however, until April with the exception I think of one in February, and I have already a number of invitations from which I must select for that day. If at any time during the year duties which I do not now foresee, call me to or near to Toronto, I should be glad to be of help to you but there is no prospect of my coming for a Sunday.

Very cordially yours,

s/

September 13, 1905.

Mr. Eugene C. Foster,

1031 Walnut Street, Philadelphia.

My dear Mr. Foster:

I am very much obliged for the copy of Professor Brumbaugh's "The Character of a Teacher".

I shall try sometime to write a brief review for the "Record of Christian Work", and will see that a copy is sent you.

Very sincerely yours,

s/

September 13, 1905.

Mr. S. K. Dutta,

Medical College of Edinburgh University

Edinburgh, Scotland.

My dear Mr. Dutta:

I learned some weeks ago with keen sorrow, of the great loss sustained by your family and by the Christian cause in the Punjab, and indeed I may say, by all the women of the Punjab in the death of your mother. Our missionaries have naturally written expressing their high appreciation of all that she has been and done, and I have just been reading in the "Church Missionary Intelligencer" for September the sketch and memorial of her. I beg leave to offer you, and through you, to your sisters and aunts, the deep sympathy of our Board. Your mother's influence will never pass away from the Punjab and it is our hope and prayer that her example may draw many younger women to desire to be like her in her character and her devotion.

Two years ago, I had an extremely kind note from Dr. Ewing regarding you, written under the impression that I was soon to be in Scotland, and asking me to be sure and see you in Edinburgh. If I come to Edinburgh at any time during your stay I shall be sure to ask for you, and hope that before your return to India you may visit America.

Very sincerely yours,



✓

2/

September 13, 1905.

Mr. M. L. Judson,

516 Third Avenue, Upper Troy, N. Y.

Dear Sir:

I was very much interested in your good letter of September 2, regarding chain-letters. My opinion is that they are obtainable, I always find good letters, when they come to me, in the waste basket, regardless of the request that they contain, not to break the chain. I do not believe in any such mechanical way of promoting prayer. I think we need only to ask ourselves what we should think of an effort made to influence us by a number of people operating one of the chain systems, to understand a little of what God must think of them. To be sure, He has infinite patience and kindness in His judgments of our poor foolishnesses, but the whole spirit of such a mechanism seems to be alien to the free life, the simple love and veracity and veracity of the Christian spirit. I enclose herewith a little article handling the question in a much more charitable way than I have just done. It is clipped from the "Christian Intelligencer".

Thanking you for your letter and your own expression of feeling,

I am,

Sincerely yours,

September 13, 1905.

Mr. Egbert M. Hayes

Wooster, Ohio.

My dear Egbert:

I was very glad to get last week on returning to New York your letter of August 16, telling about your plans. I am sorry the project of going to Yale has fallen through but I confess I was a little dubious when you told me of it at Lakeside. I think it would have been a good thing to do if it could have been done, but you would have found it a much harder task than going through Wooster. Perhaps it would have been all the better for you on that account and I wish you might have found it possible to do it. At the same time Wooster is a good place and the Yale hope being out of the question, I trust you will not feel the least disappointment in going on with your course at Wooster.

Thank you very much for your kind invitation to come to Wooster sometime during the school year. I should like to do so and will do so if at any time the opportunity presents itself. I have not made any good visit to Wooster since the Fall of 1889, and I want to come again when I can, not only to see the College but also to see more thoroughly the life and work of the Homes.

Miss Dickey sent you the list of some missionaries who will be at home. There will be some strong men here this year and their presence ought to add greatly to your missionary interest at Wooster.

I found a good letter from your father written at Mohkanson waiting me here last week. I shall look forward to seeing father some time this Fall down at Princeton.

Very cordially yours,

✓
September 15th, 1905.

Mr. C. G. Trumbull,

1031 Walnut Street,

Philadelphia, Penna.

My Dear Charlie:-

Your kind note of the 13th was received yesterday. I shall be glad to continue the Young People's Prayer Meeting articles next year.

I enclose one of the editorials you wanted me to write. I am afraid it is perhaps too simple and untheological; and if you feel that it is not just adapted to the purpose, or runs too much along the line of the editorial printed some months ago on the Continuance of Personality in the Future, ^{Life} please do not hesitate to send it back to me.

Very affectionately yours,

s/

September 18th, 1905.

Miss Mary E. Woolley,

103 Dummit Street,

Pawtucket, R. I.

My Dear Miss Woolley:-

Your very kind note was

received on Friday, and I have delayed answering until I could show it to Mrs. Speer. I wish very much I could accept your invitation, but I have engagements for all the Sundays you mention, with the exception of April 15th, and I am unable to promise to come for that day, as I know that there will be other work which I shall have to do which will prevent my coming. I would gladly come if it were possible to do so.

Mr. Mott's address is, Mr. John P. Mott, 3

West 29th Street, New York City. And Bishop

McDonnell's, the Rev. W. P. McDonnell, D. D.,

97 Washington Street, Chicago, Ills.

With kind regards from Mrs. Speer and myself.

Very sincerely yours,

September 19, 1905.

Rev. C. B. McAfee, D. D.

Lafayette Avenue Church,

Brooklyn, New York.

My dear Dr. McAfee:

I have put Dr. Ibuke down for the morning of November 12, in the Lafayette Church.

Thanking you for your kind letter,

Very cordially yours,

September 18th, 1905.

Mr. J. H. Oldham,

22 Warwick Lane,

London, England.

My Dear Mr. Oldham:-

I enclose herewith the chapter which I promised to write for your proposed book. I hesitate very much to send it, fearing that it is not at all what you want, and that it will not match well with the other chapters. But you are welcome to it if you can use it, and if not, please do not hesitate to get something that will fit into the drift of the book better, and send this back to me.

Very cordially yours,

s/

September 20, 1905.

Mr. Dumont Clarke, Jr.

Murray-Dodge Hall, Princeton, N. J.

My dear Dumont:

I am getting up a little meeting at which fifteen or twenty men will be present for a quiet day together. They are men, some of whom have been accustomed to have such meetings before, and this year we want to meet in Princeton as a quiet, central place. We will want a room for a meeting place where we can shut ourselves in and be absolutely undisturbed, without any distracting influence. I thought it would be best in one of the class prayer-meeting rooms in Murray-Dodge Hall, or the study or parlor in the old Seminary building, over at the Theological Seminary.

Would it be troubling you too much to look up what there is and let me know your judgment? If one of the prayer-meeting rooms in Dodge Hall would be best, could we have the use of it for Tuesday, October 3? Perhaps things would be a little quieter over at the Seminary in the parlour in the old Seminary building, between the Seminary Chapel and Dr. Warfield's house.

Your sincere friend,

September 20, 1905.

Princeton Inn, N. J.

My dear Sir:

Could you furnish a private room
for lunch for 15 or 20 men for Tuesday, Octo-
ber 3, and if so, will you kindly let me
know what the cost per plate for a simple
lunch for this number will be?

Very sincerely yours,

September 20th, 1905.

The Rev. Boyd Andrews.

Mr. A. C. Moody,

Dear Sir,

My Dear Mr. Moody:-

I think you would have been as
pleased as you wish, at the evening session of the
Sunday School Convention at the City Hall.

I am gathering all the information I can regarding George Bowen of India. In
reply to your letter regarding him, Mr. S. F. Bridgman,
of Northampton, Mass. writes:

"I met a man, (I think Mr. Residue of India,
who has written a life of Bowen, and who is now in
England, a Colonel A. Rev. James Henry of
Glasgow) in Northfield, who personally knew the
subject, at any rate had written of him in a London
paper. I have not his address, but may be I could
get it. He registered at Northfield Hotel last
August."

Could you give me the full name and address of this

Mr. Residue?

Very respectfully,
Boyd Andrews.

September 30th, 1895.

Mr. S. S. Bridgman,

New Hampton, Conn.

My Dear Mr. Bridgman:-

I am glad to hear of the
Mr. Beattie of whom you write. I have never
heard of his Life of Bowen, but should like very
much to get on the track of it. I am writing to
the Northfield Hotel to ask for his full name and
address.

I have not heard from Mrs. Morris, but should
be glad if she could help me any.

I wonder if Professor Wood has any personal
recollections.

Very cordially yours,

September 21, 1905.

Miss Martha T. Fiske,

1676 Massachusetts Avenue,

Cambridge, Mass.

My dear Miss Fiske:

Your kind note is just received. I am very sorry it will not be possible for me to come up for the Missionary Institute next month. Mr. Oliver was here the other day, and I explained to him that I had other engagements which would make it impossible for me to come.

I trust that you may have a very profitable meeting.

Very sincerely yours,

September 21, 1905.

Mr. H. A. Hicks,

14 Beacon St., Boston.

My dear Hicks:

Your kind letter regarding the Institute in Boston was received some time ago. Mr. Oliver was in here the other day with reference to the matter; I was sorry to have to tell him I had other appointments which would make it impossible for me to go.

I hope your work is prospering, and with kind regards, I am,

Very cordially yours,

✓

September 22, 1905.

Miss Elizabeth V. Coan,

Coover College, Wooster, Ohio.

My dear Elizabeth:

I was glad to get yesterday your note enclosing your father's letter to the Morristown Sunday-school. I am forwarding it to Dr. Erdman the Pastor of the church, asking him to give it to the President of the school.

We are so glad to know of your father's recovery and I trust there may be no recurrence of his fever. This week's letters brought the report of Dr. Cochran's death and funeral, and spoke of your father as able at that time only to lie on the couch at the window at Mr. Shedd's house.

Your father wrote that Frank would be ready for college next year, and I hope that nothing may prevent his getting to Princeton; where would you like to go the following year?

With much love from Mrs. Speer and myself to you and Frank,

Your sincere friend,

September 22, 1905.

Mr. W. H. Grant,

Diamond Pond, N. H.

My dear Harry:

Your letters regarding Mr. Jones and the October 5th meeting, and enclosing Dr. White's contribution, have been received. I shall send Dr. White's generous gift on at once as a money order to Mr. Gould.

I have had a good number of replies regarding October 5th; in every case the invitation has been accepted, save that Sailer has to be in Detroit at that time and Will Moody is not sure that he will be back from Labrador. I will send you a note a little later, with reference to trains and place of assembling in Princeton.

I hope that you are having a fine time and getting some good hunting.

Very affectionately yours,

September 21st, 1905.

Mr. Harry O. Hill,

Young Men's Christian Association Building,

San Francisco, California.

My Dear Mr. Hill:-

I am sorry I did not see you when you were here the other day. And I am sorry to have to send an unfavorable reply to your kind letter. I should rejoice to go out to the Coast this winter, to be present at the Conferences, and also at the meetings arranged by the Young People's Movement, as well as to work among our own churches. But, as I have explained to Mr. Potter, I am already tied up to engagements here that will make it impossible for me to come. Perhaps I might be able to go out to work among our own churches next fall, but I see no prospect whatever of being able to go this winter. I trust that you may have a good work on the Coast during the year, and that the service of Christ may claim the lives of many of the students in your institutions.

Very cordially yours,

September 22, 1905.

Miss Edith H. Nicholls,

13 Main Street, Albany.

My dear Miss Nicholls:

I am sorry I shall not be able to go up to Albany for the proposed Missionary Institute the second week in November. I have already appointments for both the first and second week in November, which would make it impossible to go.

You could not do better than to get my associate, Dr. Halsey, if he could come.

Very cordially yours,

September 21, 1905.

Mr. F. D. Hopkins,

Pottstown, Pa.

My dear Mr. Hopkins:

I think nothing is likely to interfere with my appointment at the School for November 26, and shall, of course, be glad to be of any service to you in connection with the District Convention at that time. I am not sure what train I shall be able to go over on the preceding evening, but if you will let me know when and where the organization is to held, I shall be glad to be present if I can.

Very cordially yours,

September 22, 1905.

Mr. J. S. Robertson,
Toronto, Canada.

My dear Mr. Robertson:

I am very sorry it will not be possible for me to speak at any of the Massey Hall meetings this season; I have engagements for all ~~the~~ Sundays until next Spring, and not one of them takes me to Canada. I am sorry, as I should be glad to accept your invitation, and also to have the opportunity of speaking to the students of the University again.

Very sincerely yours,

September 21st, 1905.

Mr. Lemuel A. Maynard,
Bible House, New York.

My Dear Mr. Maynard:-

Would you care to use the enclosed article about Two Missionaries? If not, will you kindly return it to me for other use?

Very cordially yours,

September 22, 1905.

Dr. W. V White,

541 Lexington Ave., New York.

My dear Dr. White:

Mr. Grant, who is now in New Hampshire, has sent me your note of September 11, with your generous check for \$40, to be used for the support of K. C. Edoo as a native worker in India. I am sending the money out at once by special money order to Mr. Gould.

I am glad that we can have the hope of seeing you on October 5; the responses have been very encouraging, and I look forward to a good and helpful day.

Very cordially yours,

September 22, 1905.

Rev. Joseph Dennis,

Wellsboro, Pa.

My dear Mr. Dennis:

I cannot accept your kind invitation to speak at the Genesee Conference on either October 6 or 7; I have engagements for both those days.

Very sincerely yours,

✓

September 22nd, 1905.

Governor George R. Carter,

Honolulu, Hawaii.

My Dear George:-

I was delighted to get the other day your letter of September sixth, and to know that you had met Mr. Weidensall. He is one of the old war-horses of the Young Men's Christian Association work, and has lots of fire left in him. He is the kind of man which one wishes there were more of; unselfish, loving, hearty, earnest in his efforts to help others, and busy year in and year out in efforts to protect young men from the things that slay character, and to help them to become men of Christian faith and Christian life.

I am glad you like "The Knightly Soldier" and "The Life of Armstrong," and shall be only too happy to let you know of other such books from time to time. I am sending you a little one of my own by this mail, entitled "Young Men Who Overcome." It is only a simple little book, meant for boys; and if you are not interested in it, just give it to some young fellow of sixteen or seventeen who might read it.

You ought to read all the books you can lay your hands on about Chinese Gordon. Stanley said that he and Darwin were the two greatest men he had ever known. And he certainly was one of the most refreshing, powerful men of the last century. A very good little biography has just appeared by General Sir William Butler. And then you ought to read also, his volume of letters to his sister. Both these books are published by the Macmillan Company. There is a story of his life written by A. Egmont Baker, published by Remington and Co. of London, although this was written before his death. Then, there is a little book called "Gordon Anecdotes," by a man named Macmahay, which can be got from the Religious Tract Society, London.

Booker Washington's "Up from Slavery" is a good companion piece to the

Mr. Carter, 2.

"Life of Armstrong." But I am afraid if I suggest too many you will want to read any of them, and to know Chinese Gordon is as much as any man would want at a time.

You remember that you didn't think there were any interests lying around between Morgan and Miss Roosevelt. I enclose a clipping from the New York Times, of September 29th, which may interest you. Couldn't you tell the fair Alice like a Dutch Uncle when she comes through Hawaii?

I hope that my Uncle and Aunt may have seen you before this reaches you, but if not, trust that they have called, it has included a message on your time.

We were so glad to see you when you were here. I only wish that Mrs. Carter might have been with you; but Mrs. Spear told me that you told her, and I rejoice heartily with you. Some time when you have got through with your burdens of office, you will be taking a rest, and I hope we can have a little visit from you then.

I am glad to know of your proposition about the itineraries and good people passing through Hawaii. You can do a lot for them, and I think now and then you will meet someone who will be able to be of help to you, in his subordination of the best ideals of work and the truest spirit of loyalty to God and the kingdom of righteousness.

Your sincere friend,

September 23, 1906.

Rev. H. G. Buehler

Lakeville, Conn.

My dear Mr. Buehler:

If you are wanting any more preachers from outside this year, I would like to suggest the Rev. J. Douglas Adam, of the Reformed Church on the Heights, Brooklyn. Mr. Adam is a rare man; he was at the Hill School last year, and is to go back there again. I want him to give more of his time to this great field among students, and have pressed it upon him, and he has told me he would be willing to do so. He is a man of rarest spirit and unusual ability, of very fine grain, a man with a life of his own and a vision of the Eternal and the Infinite. I hope that he would take hold of the boys; at any rate, I think it would be a good experience to make, for to have such men get hold there and among students, it seems to me there is no field where they can accomplish more for the Kingdom of God or for the world.

With kind regards to Mrs. Buehler, and to you, and looking forward with pleasure to coming up for the 15th of next month,

I am,

Very affectionately yours,

September 22nd, 1905.

The Rev. C. L. Shearer, D. D.,

150 Nassau Street, N. Y. City.

My Dear Dr. Shearer:-

I thank you for your kind

note of September 21st, stating that you had added my name to the list of those to whom your new Bowman periodical was to be sent. I appreciate this very much, but if it would not be troubling you, I would suggest your sending the paper to the Foreign Missions Library, 156 Fifth Avenue, rather than to me personally. This would bring it before any one who might wish to see it in our library, which is open to the public.

Very sincerely yours,

September 22nd, 1905.

Mr. W. Sherlock,
25 Portland Avenue,
Toronto, Canada.

My Dear Mr. Sherlock:-

I have received through the publishers, your comments on the little book "Familiar Jesus Christ." I appreciate your interest and earnest purpose to correct what you think to be wrong in my views. I think I hold to the teaching of the New Testament, however. At any rate, I try to do so; but I have no doubt that there are many things I have written that to me nobody will be teaching, or that may conflict with what others think to be the teaching of the New Testament and that I have made many mistakes. This does not give me as much trouble of mind as I should want of had I thought my opinions perfect.

Very sincerely yours,

✓
September 22nd, 1905.

Mr. Charles F. Powlison,

316 West 57th Street,

New York City.

My Dear Mr. Powlison:--

I am sorry to have to say that I do not see any possibility of being able to speak at one of your West Side meetings this winter. The only Sunday of the fall or winter that I have an engagement here in the city, is on November 12th, and I do not expect to be in the city that afternoon, but only in the morning. I hope you may have a good season's work.

Very cordially yours,

202
September 22nd, 1905.

✓
President Henry S. Driker,

Lehigh University,

South Bethlehem, Penna.

Dear President Driker:--

Your kind note of September 19th has been received. I am sorry to have to say that I have engagements for all of my Sundays until next May, and shall not be able to accept your kind invitation to speak to the students at Lehigh University.

Very sincerely yours,

September 22nd, 1905.

Mr. H. E. Bateman,

Young Men's Christian Association,

Fifteenth and Chestnut Streets, Philadelphia.

My Dear Mr. Bateman:-

I am sorry that the change of date of the University makes it impossible for me to be of any help to you at any future meetings you would wish. I hope that you may have a good series. If you want a good man, I would suggest the Rev. J. Douglas Adam, D. D., of the Reformed Church on the Heights, Brooklyn, N. Y. You want to make the arrangement with Dr. Adam, if possible. If you would like to have him speak to the young men students, for the morning, and have your meeting in the evening. I think probably Evans knows about him.

Very sincerely yours,

September 22nd, 1905.

Mr. Harry K. Edmunds,

129 Lexington Avenue,

New York City.

My Dear Mr. Edmunds:-

Your kind letter was received yesterday, the same day with one from the President of the University. I am sorry to have to say that I have engagements for the next few days until next Spring, and cannot possibly get over to Lehigh. The fact that I cannot do so would be perhaps to get over for a meeting some time in the week, and even that will be difficult this year, as I shall be tied down to the office even lighter than last year, by the fact that I am to be done here.

Very cordially yours,

September 23, 1905.

My dear Mr. Mott:

I have just been writing to Mr. Frost with reference to the October 5 meeting, in which I think we shall have fifteen or twenty men. I cannot do better than just quote what I wrote to him; do you agree with what I have written?

"The plan for the day, as it has shaped itself in my mind, and as I am writing about it to you and Mr. Mott, would be to devote the morning to some such subject as the "Life of Faith and Service"--the Scriptural ideal, and our own experiences, alike of failure and success. This ought to be opened, it seems to me, by a Bible-reading, leaving the rest of the morning for conference and prayer; we should have two hours, or two hours and a half, in the morning session. In the afternoon, we should have at least two hours, and it seemed to me we might well break it in two, and devote half of it to the subject of "Hindrances", "Impedimenta" Dr. Adam calls the, and Mr. Grant uses the same word--and the other half to "Helps" including "Spiritual Habits". There should be ample time, of course, for prayer. Possibly the time in the afternoon might seem ampler and less constrained if we dealt with the two subjects together and had only one opening Bible-reading, or address.

Will not you or Mr. Erdman take the opening Bible-reading, in the morning? I am asking Mr. Mott to take the subject of "Hindrances" or "Impedimenta", and I think that Dr. Adam would be a good man to open the subject of "Helps" and "Spiritual Habits".

I note your suggestion that Dr. McAfee take the morning Bible-reading, and if you and Mr. Mott both think that his name should be substituted for some one of those I have proposed, I shall be glad to concur. If you do not both agree, shall we not consider my suggestion as conclusive?

The answers to my letter have all been most encouraging and I think that we shall meet with one mind. After hearing from you and Mr. Mott, I shall send out a little note to all who expect to be present, speaking more definitely about place of meeting and trains, and urging the matter of preparatory prayer."

Mr. Frost sent me the following suggestion for a program:

LIFE OF FAITH

"The just shall live by his faith".

1. As related to temptation.
2. As related to development in holiness.
3. As related to worship; prayer and praise.
4. As related to service; personal work, preaching.
5. As related to outward equipment; men and means.

J.R.M. 2.

But I am inclined to think that what I have suggested will make it a little easier for the men to take hold and to tie the conference into their actual lives.

Very affectionately yours,

103

✓

a/

September 25, 1905.

Rev. Henry S. Coffin,

13 West 57th Street, New York.

My dear Mr. Coffin:


I thank you very much for Dr. Thuka and the Madison Avenue Church; I will put him down

I had a nice talk with the young lady and then took her in to Dr. Halsey, who is to take her to the field for some years, and then have a perhaps the best preparation she could. real qualities of strength, but a great deal during her education.

Mrs. Speer wants me to invite you this evening and spend the night, if you care to come upon you, but if sometime you have a chance to go to the country, won't you come out with us? I will be glad to propose some particular evening.

Very cordially

s/


September 28, 1905.

Mr. S. Earl Taylor:

150 Fifth Avenue.

My dear Bishop:

I am very much obliged for the copy of your confidential report concerning your visit to England this summer. I was glad to read about it also in the "Church Missionary Intelligencer's" account of the Church of England Summer School. I am glad the summer was so profitable and rejoice that the progress of mission study and interest among young people gives such promise of better things in the missionary activities of the church in the next generation.

I shall take the liberty of showing your report to my associates here.

We are going to have at Princeton on October 5 a quiet day with fifteen or twenty men present, in spiritual preparation for the work of the Winter. Can't you arrange to be present?

Very cordially yours,

September 23, 1905.

Messing H. Revell Company,
158 Fifth Avenue.

Gentlemen:

Will you kindly get for me the book
described in the enclosed leaflet?

Very truly yours,

September 26, 1905.

Miss Frances R. Canterbury
Marshall College

Huntington, W. Va.
My dear Miss Canterbury:

I am sorry to have to say that
I see no prospect of being able to visit
Marshall College this year. I have no an-
gements this year in West Virginia that
would bring me near Huntington; if I had
and could accept your invitation, I should
be glad to do so.

Very cordially yours,

S,

September 23, 1905.

Mr. Dumont Clarke Jr.

Murray-Dodge Hall, Princeton.

My dear Dumont:

I thank you very much for your good letter; will you please reserve the Committee room, or one of the prayer-meeting rooms, whichever would be most suitable for, say, a party of fifteen or twenty men, for Thursday, October 12. Some of the men are coming from Philadelphia and Baltimore, and others from New York, and we shall expect to meet at 10:30 and stay until 5:30. Will you have whichever room which you think the best open for us. I shall hope to get down in time to meet any of the men coming over from Philadelphia, but if not, would somebody be on hand at Dodge Hall, where I shall direct them to go, to send them into the right room?

I don't remember whether you had on your list of speakers for the Philadelphia Society the name of the Rev. J. Douglas Adam of the Shuford Church on the Heights, Brooklyn. He is one of the best men I know and a good one to draw into the student work. I hope you will invite him down for one of the student evening meetings.

Your sincere friend,

✓

September 25, 1905.

Mr. Charles Reed,

234 Penn St., Huntington, Pa.

My dear Charlie;

I expect to go out to speak at the meetings of the Huntington Presbytery on the evening of October 4; I am afraid I can't go until the morning train, and shall have to come back on the Philadelphia Express. Have you shut up the house, or are you keeping bachelor's hall?

What is Margaret's address in Denver? I want to write to her and especially to thank her for the excellent picture of little Charles. Eleanor frequently calls attention to it as the picture of "Cousin Charles".

Very affectionately yours,

September 23, 1906,

Mr. H. W. Frost,

235 School Lane, Germantown, Pa.

My dear Mr. Frost:

Your two good letters of the 20th and 21st, the first with reference to our meeting on October 5 and the other with reference to Walter Erdman, are both received.

First, with reference to Walter Erdman; I would say that at the last meeting of our Board, it was voted to invite him to undertake for one year the work among our Sunday-schools, if provision of the budget that would be necessary should be especially provided. We estimated that for proper support and all the expenses of the work about \$3000 would be needed. One third of this had already been promised, and we think that the other two-thirds will be provided. Since Dr. Halsey has returned, all these questions have passed into his hands and I do not know, as he is away today, whether he has corresponded with Mr. Erdman or not, but I will give him your letter, and ask him to add any further word. We should, of course, want Mr. Erdman to do just the work which he felt was the work appointed him of God, and I am sure we should have no objection to your speaking to him about the matter which has been on your mind, either now or later.

I think from one of your earlier notes, that I never gave you a very clear idea as to what work we had in mind for Mr. Erdman. It was not merely going about and speaking in the Sunday-schools. It was a large effort to reach the church of the next generation while it is still plastic and responsive in the Sunday-school of today. We have more than a million scholars in our Presbyterian Sunday-schools, constituting, I feel, one of the finest and most promising fields of missionary work anywhere.

W. W. F. 96

If we could only attach all these hundreds of thousands of young people to the missionary cause, what a transformation it would work in the missionary activities of the church. I feel that the work which is contemplated is as worthy and important and serious a work as could be laid upon a man.

Thank you so much for the good suggestions of your letter of September 20. Mr. Grant has also made some suggestions and Dr. Adam of Brooklyn, who is to meet with us, has made some more, and it is wonderful how that they and you have thought of the same things.

The plan for the day, as it has shaped itself in my mind, and as I am writing about it to you and Mr. Mott, would be to devote the morning to some such subject as the "Life of Faith and Service"—the Scriptural ideal, and our own experiences, alike of failure and success. This ought to be opened, it seems to me, by a brief reading, leaving the rest of the morning for conference and prayer; we should have two hours, or two hours and a half, in the morning session. In the afternoon, we should have at least two hours, and it seemed to me we might well break it in two, and devote half of it to the subject of "Hindrances"—"Impediments". Dr. Adam calls them, and Mr. Grant used the same word, and the other half to "Helps", including "Spiritual Habits". There should be ample time, of course, for prayer. Possibly the time in the afternoon might seem ~~exuberant~~ and less constrained if we dealt with the two subjects together, and had only one opening Bible-reading, or address.

Will not you or Mr. Erdman take the opening Bible-reading in the morning? I am asking Mr. Mott to take the subject of "Hindrances" or "Impediments", and I think that Dr. Adam would be a good man to open the subject of "Helps" and "Spiritual Habits".

I note your suggestion that Dr. McAfee take the morning Bible-reading, and if you and Mr. Mott both think that his name should be substituted for some one of those I have proposed, I shall be glad to concur. If you do not both agree, shall

H. J. F. S.

we not consider my suggestion as conclusive?

The answers to my letter have all been most encouraging and I think that we shall meet with one mind. After hearing from you and Mr. Mott, I shall send out a little note to all who expect to be present, speaking more definitely about place of meeting and trains, and urging the matter of preparatory prayer.

I think that Elsa does not owe me anything; she and Anna Swartz both insisted on paying, and I think the conductor accepted their tickets from Coos Junction to Wing Road for the ride from Fabyans to Wing Road. It was only a pleasure to give any little help to Elsa; I wish we might have been of more.

Very sincerely yours,

September 23, 1905.



and Peaker,

Princeton Inn.

r:

Referring to your kind note of the all you please reserve the private or luncheon for fifteen or twenty men oober 5. I will let you know the g of that day, after reaching Prince- he exact number.

Very truly yours,

✓

6/

September 26, 1905.

Mr. H. G. Blatchley,

401 Chestnut Lane, Wayne, Pa.


My dear Mr. Blatchley:

I have delayed answering your letter of August 21 in the hope that I might be able to reply to your inquiries; but I am not yet able to do so. I have looked through Lowell's poetry, and cannot find there the lines which I quoted at Silver Bay. Dr. Canfield, the Librarian of Columbia University to whom I applied, had one of his best workers look through Lowell, line by line, and examine their books of quotations, but he could not find these lines in Lowell. I suppose it must be a mistake to attribute them to Lowell.

Nor have I been able to find yet the version containing the translation of the 37th Psalm which I quoted. I am writing to Mr. Gillette, the Librarian of Union Seminary, to find out whether he can help us, and if so will let you know. I have forgotten where I got the translation of that verse to which I referred.

Very cordially yours,

2/



September 23, 1905.

Mr. C. G. Trumbull

1031 Walnut Street, Philadelphia.

My dear Charlie:

Do you remember an article which I sent to the Sunday School Times a year or two ago, entitled, "Lessons from a little boy; by the little boy's father"? I don't know whether it was ever acknowledged, and so perhaps it never got to you. If it did not, or if it did and you could make no use of it, would you mind dropping me a line so that I could use it otherwise?

I have written another editorial entitled "The Snare of Sympathy", which I will send you soon, in case you should want to use it.

Very affectionately yours,

Since writing the above, your good letter of the 23d has come. I read last evening "Fighting for Life's Masie" with the deepest interest. I had not known Alden's story as you have put it there so vividly; what a time these soldiers are having now, in that land where people do know one another and where they talk together over the things that they have done and suffered. Your father and Alden's father, and your two boys, and how many others who were in their hearts, must now be living a life which almost lifts one from the ground even to dream about?

As for the editorials, I love to write them for the paper, and shall

C.G.T.2.

try to write some more of them as you suggest. But it is not easy to get done all the things that need doing, and my only hope of being able to do what you propose is to do some of it in a lump, no matter how much driving it takes, and then to seize the spare moments for the rest.

Very affectionately yours,

✓

September 26th 1905.

Mr. Charles R. Gillette,

700 Park Avenue, New York.

My dear Mr. Gillette;

Can you tell me whether there is any version of the seventh verse of the 57th Psalm reading "Be thou silent unto God and let Him mould thee". I have a recollection of seeing this somewhere in one of the prayerbooks, and have an inquiry from Mr. H. G. Blatchley, 427 Chestnut Lane, Wayne, Pa. I am wondering whether this translation occurs in any version of the Bible or the Psalms?

Very sincerely yours,

a/

September 25th, 1905.

Mr. J. H. Oldham,

22 Warwick Lane,

London, England.

My Dear Mr. Oldham:-

It has occurred to me

since sending the chapter on The Cultivation of the Spiritual life, that a little more distinct reference should be made to the Holy Spirit; and I enclose herewith a paragraph which might be numbered and inserted among the Helps to the cultivation of the spiritual life. Will you kindly put it in, in case you decide to use the chapter?

Very cordially yours,

September 28, 1905.

Miss Jean Mott,
Hallman, King Co., Washington.

My dear Jean:

I was very glad to receive, when I came back to New York some weeks ago, your letter of August 8, which had come in my absence. I am glad you are so well now, and trust that just the work which would be most useful to you will open before you.

I am rather afraid that you may be disappointed if you associate too closely the course which you expect to take in the business college in Seattle with success in literary work. If you could resume your regular college course, that would be better for you, although if you want to take up work soon that would help you financially, perhaps the course which you plan is the wise one.

I am not sure about Mrs. Mott's street address in Montclair, but a letter addressed just "Montclair", without it would be sure to reach her; or you could always reach her through Mr. Mott, 6 West 29th Street, New York.

I thought for a little while that the way might open for me to visit the Pacific Coast this Winter, but I do not think it is at all likely. I hope to be able to go out there sometime in the not distant future though, and perhaps I can see you then.

With kind regards from Mrs. Speer and myself,

Your sincere friend,

s/

September 23, 1905.

Rev. C. M. R. Janvier,

Philadelphia.

My dear Janvier:

I am so glad that you can come to the meeting at Princeton on October 5.

I hope you will follow up the case of Holmes; did we not have him before us in the early days of our search?

Agg was at Schenectady and then was compelled to leave because of the necessity of supporting his family. I wrote to him strongly urging him not to give up the matter, and asking him to see whether he could not secure release from any home obligations. The enclosed is my last letter from him; will you please return it?

Avey, of whom he writes, is now at Schenectady, and we will follow him up soon.

I have several recent letters from Bing; since you wrote me you have heard from him also? He sent you did he not, some letters? Your note came after Dr. Newton had left the office, but we sent it down to the ship, which sailed the next morning early.

Are you quite through with my India Census? I am in no special hurry for it, but I should like to get at it, when you are through with it.

Very affectionately yours,

My dear Mr. Smith:

During the summer

in your family as have you such anxiety

that you may be no such illness this year

for all that is laid upon you to do, and

this year that you may be given strength

I hope your work is opening up well

Your family of July 28.

It is our desire to have in connection with

quitting August prevented my attending to

I am sorry my absence from the city

My dear Mr. Smith:

I have seen Street

Mr. Fred B. Smith

September 26, 1902

21

My dear Mr. Smith:

I am

Regretting that I cannot come

office

apart of the other days I hope

not too early, and I expect to be well

probably at the end of the month, and I can

attend the Convention in Nashville

and to spend in home. I have to go to the

Chicago Convention, but I am sorry to have to

come instead of my being able to go to the

August 26 in the hope that that night be

I have delayed answering your letter of

My dear Mr. Smith:

Respectfully

Yours truly

Mr. A. V. Brown

September 26, 1902

21

September 26, 1905.

Mrs. James Boyd,
Harrisburg, Pa.

My dear Mrs. Boyd:

Dr. Halsey asked me to send you the names of a few good books for the Sunday-school library. If the following are not there, I think it would be well to put them in:

- Trumbull's "Knightly Soldier"
- Talbot's "Life of S. G. Armstrong".
- Hick's "Life of H. W. Rose"
- Drummond's "Ideal Life"
- Walsh's "Heroes of the Mission Field".
- Walsh's "Modern Heroes of the Mission Field".
- Dawson's "Hannington, the Lion-Hearted".
- Pyle's "Men of Iron".
- Ollivant's "Bob, Son of Battle".
- "Jesus, the Carpenter", by a Layman.
- Hodge's "When the King Came".

I shall be glad to suggest others if you wish them. "Men of Iron" and "Bob Son of Battle" are not professedly religious books, but one is the tale of a Christian boy, and the other is a story of a Christian dog, if there ever was one, a dog and a gentleman.

With warm regards from Emma and myself,

Your sincere friend.



September 26, 1905.

Miss Margaret Bailey,

Saybrook, Conn.

My dear Miss Bailey:

I have delayed answering your letter until I could report definitely on what engagements I might have. I am sorry to have to say that I can not speak at Barnard anyone of the three days you mention, having other engagements for each of them. Perhaps you could get either Dr. Sailer, or Mr. Millikin of our Educational Department, or Dr. Halsey, one of my associates, who is recently returned from Africa.

Very cordially yours,



B/

September 26, 1905.

Col. J. J. McGook,

120 Broadway.

My dear Col. McGook:

I find among some papers here a copy of a second letter I wrote to Dr. Booth about Princeton Seminary, and venture to enclose it herewith.

Very cordially yours,

September 27, 1905.

Regarding a Quiet Day at Princeton,

Thursday, October fifth.

This is to confirm the arrangement for a quiet day at Princeton, Thursday, October 5. The arrangements regarding the day have been made nearly and favorably, and so it is on the presence of persons who will meet then to seek for better preparation for the work of the day and dinner.

The meeting will be held in the Committee Room of Congress, and we will take lunch together in a private room at the Princeton Inn.

Those going from Philadelphia should take the train leaving Market Street at 8:30²⁰ A. M., arriving at Princeton 9:33; returning, leave Princeton 5:15 P. M. and arriving at Philadelphia 6:07. Those going from New York should take the train leaving West Twenty-third Street at 8:25, arriving at Princeton 10:15; returning, leave Princeton 5:46, arriving in New York 7:30. It is especially to be hoped that ^{will} all/combine to devote the whole day, and that it may not be necessary for any to arrive by any later trains, or leave by earlier.

On arriving at Princeton, please go directly to Lodge Hall, where we shall hope all to be gathered at half past ten.

The various suggestions as to the best use of the day are in urging that we consider together in silence, and prayer the hindrances that we meet and the helps by which we may hope to overcome. Let us remember that the thing is our prayers, and come with open hearts to give and to receive.

Very sincerely yours,

Robert E. Speer.

September 27th, 1905.

Mr. F. H. Andrews,

Plainfield, New Jersey.

My Dear Fred:-

I have delayed answering your letters about Crane until I could make some more inquiries about him. I am afraid he will not do. Mr. Whitford's letter to you indicates that he is not a good presbyterian. I have been reminded that perhaps in some of his personal habits his views might not be much stiffer than some other people's views have been. He spent a year in Germany, and sees no harm in beer drinking or theatre going, or at least that was his attitude a little while ago. So I suppose we shall have to look further still.

If General Miles really likes Herron, and if he will see the importance of being stiff in his own personal habits without being bigoted in his criticism of others, perhaps he would do. But West Point is not a good place to make a total abstainer out of a man who believes in taking a little, and I would like to see someone got there who is absolutely clean and white in his own principles and practices.

I return herewith Whitford's letter.

Very affectionately yours,

s/

September 27, 1905.

Rev. James A. Beattie,
25 East 22d Street, New York.

My dear Mr. Beattie:

I have been greatly interested for some years in George Bowen, in India, and at the request of some of Bowen's friends, and on my own desire, have been gathering for several years the material for a biography of Bowen. Dr. Atterbury has given me a great deal of material, including Bowen's letters to his sister, and also to Mr. McDonald of India, into whose hands all Bowen's papers passed after his death, has given me all the material he had. Mr. Bridgman, of Northampton, Mass, in sending some notes a few days ago, wrote: "I met a man (I think the Rev. Mr. Beattie of India, who has written a life of Bowen and edited "Bowen's Meditations", a friend of Rev. James Denney of Glasgow) in Northfield, who personally knew the saint, at any rate had written of him in a London paper. I have not his address, but maybe I could get it. He registered at Northfield hotel on August."

I did not know of any biography of Bowen, and write at once to ask whether Mr. Bridgman is correct, and if so, would you tell me who published the biography, and where it could be procured? If Mr. Bowen is mistaken, would you be willing, in case you have never written down your reminiscences of Mr. Bowen, to come here some time and dictate to someone of the stenographers in our office all you can remember?

Very cordially yours,

✓
September 25th, 1905.

Mr. Harry W. Gladwin,

Box 96, Amherst, Mass.

My Dear Mr. Gladwin:-

I am sorry it will not be possible for me to come up to Amherst for Saturday, October 7th, or to stay over for Monday the 9th. I shall only be able to get up Saturday evening, and must get away from Northampton on the early train Monday morning. I shall be glad to do anything I can in the way of meeting men personally who may want to come on Sunday. I think they expect me to speak at the Vesper Service over at Smith in the afternoon. If they do not, I would have the afternoon at Amherst; and even if they do, I should be at Amherst in the evening in case you are counting on me for the Young Men's Christian Association Meeting.

Very cordially yours,



September 25th, 1905.

Mr. Henry W. Rankin,

119 Macon Street,

Brooklyn, N. Y.

My Dear Mr. Rankin:-

I thank you very much for your letter of Saturday, and your card of yesterday, with its very striking quotation from Emerson. I wish I had known more of Fryer. I asked some men who were in college with him about him, but they could not tell me much. They did not carry with them the picture of Fryer which has been left with you. And probably they did not have the eye to see what you could see. Of course I read Supplée, but there was not very much there that one could take hold and make use of; and as I think I told you, one long letter which I did quote, I found afterwards was a deliberate plagiarism from Dr. Trumbull's "Life of Henry Ward Camp."

Thank you very much for the reference to a third volume of Philopha Ultima, including Professor Sloan's sketch. I shall hope to read the volume when I can.

Very cordially yours,

329
September 27th, 1905.

Mr. Thomas S. Evans,
Houston Hall,
Philadelphia, Penna.

My Dear Tom:-

As far as I can now see, I shall
come over for the 11th. of February. I have had
some urgent invitations from the University of
Virginia for that Sunday, but it takes longer to
go and come from there, and I may be able to get
down there later.

Very cordially yours,

Robert E. Sherr.
D.

September 27th, 1905.

The Rev. D. Brewster Eddy,

Orange, New Jersey.

My Dear Brewster:-

I think you will have to let me off from that meeting on October 26th, about which we spoke when you were here with Miss Thompson. I have already some fifteen appointments for October, and they run out a big section of the day time and the night time of the month.

I hope that this cool fall weather is bringing you special strength, and not simply keeping you up to more nervous strain.

Your sincere friend,

Robert E. Speer.

1
September 30th, 1905.

Mr. H. W. Frost,

Germantown, Penna.

My Dear Mr. Frost:-

I have been away in Detroit the last two days, and have just returned. I have written to Mr. Erdman as you suggest, for the opening Bible reading. I am so glad that you will be ready to take up any one of these conferences in case others fail.

I have to be out in Pennsylvania the evening before, and shall hope to take the 8-20 train from Philadelphia, and shall look forward to seeing you on the train.

I am very glad you have invited Mr. Hodge. Please do not hesitate to invite anyone you wish. I have taken the liberty of inviting Gilbert Seaver. I am sending Mr. Hodge a note telling him that we shall be very glad to see him.

I have not had opportunity to say anything to Dr. Halsey about your letter regarding Walter Erdman. When I do so, I shall show him also your later letter.

Very affectionately yours,

✓

September 30th, 1905.

Mr. John R. Mott,

Cardillac Hotel,

Detroit, Michigan.

My Dear Mott:-

I wrote you some days ago about the quiet Day next Thursday, but am afraid it has not reached you, so I send this note to you at Detroit.

In correspondence with Mr. Frost, it has seemed best to suggest that our line of conference should be, first, with reference to the Scriptural ideal of a life of Christian faith and service; then, with the hindrances or the impedimenta; and lastly, with the helps or spiritual habits, each subject to be opened with a little Bible reading or talk which would prepare the way for free intercourse and conference afterwards. I have written to Erdman asking him to take the opening Bible reading or talk on the proper ideal of the Christian life. Will you not take Hindrances or impedimenta as the first subject of the afternoon? I am asking Dr. Adam, of Brooklyn, to take the other subject, of Helps.

I feel very keenly the responsibility of calling this little meeting, and am sure that you will help to share it and to lighten it in this way.

Very affectionately yours,

Frederick

September 30th, 1906.

The Rev. J. Douglas Adam, D. D.,
Reformed Church on the Heights,
Brooklyn, N. Y.

My Dear Adam:--

In correspondence with Mr. Frost, it has seemed best to suggest that our line of conference next Thursday should be, first, with reference to the Scriptural ideal of a life of Christian faith and service; then, with the hindrances or the impedimenta; and lastly, with the helps or spiritual habits, each subject to be opened with a little Bible reading or talk which would prepare the way for free intercourse and conference afterwards. I have written to Erdman asking him to take the opening Bible reading or talk on The Proper Ideal of the Christian Life, and have asked Mr. Mott to take Hindrances or Impedimenta as the first subject of the afternoon. Will you take the third subject - Helps, or spiritual habits? Please do not refuse. It was you who suggested this subject; and indeed, you suggested the scheme for the day which I have proposed. You can deal with the subject of course just as you please. The deeper you cut in the better.

Your sincere friend,

✓
September 30th, 1905.

The Rev. Charles R. Erdman,
Germantown, Penna.

My Dear Charlie:-

In correspondence with Mr. Frost, it has seemed best to suggest that our line of conference next Thursday, should be, first, with reference to the Scriptural ideal of a life of Christian faith and service; then, with the hindrances or the impediments, and lastly, with the helps or spiritual habits, each subject to be opened with a little Bible Reading or talk which would prepare the way for free intercourse and conference afterwards. We are agreed in desiring you to take the opening Bible Reading on the first subject, namely, the true Scriptural ideal of the life of Christian faith and service, dealing with what it includes and what it excludes, although not trenching upon the other subjects of hindrances and helps. Wherein by the grace of God any man has succeeded in experiencing any attainment, or wherein he has failed, we should hope to have brought out in personal testimonies; and the opening address ought to lead up to this. Please do not say that you will not do this. Last year God used you to open just right the little conference we had together.

I feel very keenly the responsibility of calling this little meeting, and am sure that you will help to share it, and to lighten it in this way.

As the note you have already received stated, we will meet at Dodge Hall promptly at half past ten o'clock.

Very affectionately yours,

September 30th, 1905.

The Rev. A. E. Funk,

690 Eighth Avenue,

New York City.

Dear Mr. Funk:-

Your note of the 26th came day before yesterday, but I have been out of the city until this morning, and I write at once to say that it will not be possible for me to speak at the Convention on October fifth, as I have an engagement of long standing for the whole of that day at Princeton. As I told you I thought would be the case, I have engagements for every other day of that week, and cannot come for any other afternoon.

Trusting you may have a good Convention,

I am,

Very cordially yours,

September 30th, 1905.

Mr. Thomas L. Hodge, Esq.,

444 Clifford Street,

Camden, N. J.

My Dear Mr. Hodge:-

I think that Mr. Frost has told you of the quiet day we expect to have at Princeton on Thursday, October fifth. We shall be very glad if you find it possible to come. You can leave Philadelphia on the 8-30 train, 1000 Broad Street, and be back the same evening. I hope that nothing will prevent your coming, and that you will not forget to remember especially in prayer the day and the purpose that draws us together.

Very cordially yours,

2
September 27, 1905.

Mr. Clifford W. Barnes,

104 Dearborn Street, Chicago.

My dear Barnes.

I was interested to hear of the action of your Executive Board. I hope that both you and it may be guided aright in all the measures you take toward it, and in enlarging the quantity and improving the quality of religious education.

Very sincerely yours,

s/

September 30, 1905.

Mr. J. T. Walker,

East Northfield, Mass.

My dear Mr. Walker:

Thank you very much for your kindness in sending me Mrs. Ladden's letter. Sometimes I wish I were as little acquainted with the subject of her inquiry as she is.

Very cordially yours,

s/

a/.



September 30, 1905.

Mr. Charles L. Reed,
Huntingdon, Pa.

My dear Charlie:

Thank you very much for your note, which crossed mine. I am not sure whether I can go out on the night train reaching Huntingdon the morning of the fourth, or whether I shall have to take the day train, getting up in the evening. Very probably it will be the latter, and I shall have to come back to the city the same night.

I had a good letter from Mary yesterday from Denver, and am glad to have her address. I hope that this year may do everything we could wish for Margaret.

Very affectionately yours,

Yr. labr.

I have been out on the day train
about 11 o'clock, but for some reason
I have not been able to

October 8, 1900.

The Rev. Henry S. Goffin,

15 West 57th Street,

New York City.

My Dear Mr. Goffin:-

We are delighted that you can come and spend a night with us in Englewood. Would it be possible for you to come next Monday night, October ninth? I leave the office usually about a quarter of five, and take the train leaving West 23rd Street on the Erie Road at seven minutes past five. Could you join me either here or at the Ferry.

Very cordially yours,

Robert E. Peck.

October second, 1905.

The Rev. William B. Hunt,
Ottawa, Illinois.

My Dear Mr. Hunt:-

Your note of the 30th of September, with its letter from Mr. Potter, was received this morning. Mr. Potter gets his mail here, and was in this morning to receive your letter. Of course we know him well here, and I have known Miss Lewis even better. She has often been in our home.

It was a pleasure to see you and to hear from you, and we shall be looking forward to seeing you when you are in the East. We send you of our keen sympathy with you in your great sorrow - the greatest sorrow, surely, that could have come to you.

Your sincere friend,

Robert E. Speer

Mr. Harry W. Glavin,

Amherst College,

Amherst, Mass.

My Dear Mr. Glavin:-

I received a note from

Smith indicating that they are expecting me to speak at the vesper service Sunday afternoon there. So I presume about the only time for interview at Amherst would be Sunday evening after the Association meeting.

Very cordially yours,

Robert E. Speer

October second, 1905.

October second, 1905.

Mr. Edward C. Wood,

Howard Houston Hall,,

West Philadelphia, Penna.

My Dear Friend-

Would you like a job as tutor of an unbroken young colt, eighteen years old, with enough money, but needing a lot of good, friendly, Christian guidance? The father is dead, and the mother is an earnest Christian woman. They live in St. Louis, and the tutor would be expected to come and live in the family. I have a letter from the mother from England, and I understand they will expect to come home soon. I am not sure that the place will be open, as she may make some arrangement for it; but I wondered whether you would be willing to undertake such a job this year. I imagine there would be plenty of outside work to it, in addition to the tutoring. I judge the boy will not enlarge the amount of tutoring beyond the necessities of the case and the constraining influence of his tutor.

Very cordially yours,

Robert C. Speer,

443
L
Mr. C. S. Trumbull,

1031 Walnut Street,

Philadelphia, Penna.

My Dear Charlie:-

Thank you very much for your good letter of September 28th. Please do not feel that you need ever to consult me as to when you may use or anything I write for you. Deal with it just as freely as you would with anything of your own. I had forgotten that you had acknowledged the receipt of "Lessons from a Little Boy," or I should not have mentioned it again; but I came across the manuscript in clearing up a pigeon hole, and it reminded me of the article. You will publish that anonymously, will you not?

Thank you very much for the note you enclosed. What faith but ours makes such things possible?

Very affectionately yours,

Robert E. Speer.

October Second, 1905.

Rev. E. F. Hallenbeck, D. D.,

Binghamton, New York.

My Dear Dr. Hallenbeck:-

I am sorry it will not

be possible for me to come to the Convention of Christian Workers in Binghamton the end of October and the first of November. My other engagements will prevent my joining with you.

Very cordially yours,

Wm. E. Shear.

October third, 1905.

Mr. R. D. Carter,

Newark Advertiser,

Newark, N. J.

Dear Sir:-

I am sorry that it will not be possible for me to send you a photograph for use in the Advertiser in connection with the First Town Convention.

Very truly yours,

Wm. E. Shear.

October 6th, 1905.

Mr. C. J. Hicks,

3 West 28th Street,

New York City.

My dear Hicks:-

My expenses in the Detroit
trip are enclosed. This includes the hotel
and the railroad fare. I paid, as instructed
by one of your men in Detroit, in view of your
acquaintance with the hotel people. I was glad to be
able to do so. I am sorry I could not
do more for you.

Yours,

Wm. Brewster

October 6th, 1905.

Miss J. J. Mayes,

Birmingham, Tenn.

Dear Miss Mayes:-

I was very sorry I could not
come up to Birmingham. I was called
only in time for the evening meeting, and I
could not get away.

Wm. Brewster

✓

President George Washington,

Annapolis, Md.

My Dear General Washington,

Your kind note has been

received. I shall be up tomorrow evening, and shall

come direct to the house.

to get a better view of it.

Richard E. Lee

✓

Miss Ruth M. Wells,

9 Belmont Avenue,

My Dear Miss Wells:-

Your kind note, I shall be glad to receive.

I shall be up in the afternoon to speak at the

Temple, Sec. 100 at 3 P.M.

Very cordially yours,

Richard E. Lee

The Rev. J. R. Miller, D. D.,

Witherspoon Building,

Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Miller:-

I have not forgotten your good letter of August 4th, received and acknowledged while I was away from the city. I have not been forgetting Forward, either. I have written quite a good deal of material for it, but it has not been copied off yet. I will send you some as soon as it is ready, and I should be glad to try to write one or two long editorials.

With reference to a series for next year, several suggestions have occurred to me. (1) The great Missions, such as the China Inland Mission, Society, the Society for the Propagation of the Gospel, the American Board, the American Board, the Basle Society, the China Inland Mission, etc., etc.

(2) A series on our Colleges, - Yale, Harvard, Princeton, Williams, etc.,

(3) A series on school and college life, dealing with the different stages of a student's life, his problems of various sorts.

(4) A series of biographies, dealing with different aspects of the missionary work in connection with the lives of some great men; like George P. Fox, Raymond Lull, Alexander Duff, William Carey, Thomas Chalmers, Walter Lowrie, Chinese Gordon, John Lawrence, etc.

Perhaps some other suggestion may come which would be better than any of these.

Robert E. Miller

October seventh, 1905.

The Rev. J. R. Miller, D. D.,
Witherspoon Building,
Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Miller:-

I enclose herewith some material for Forward. I have
a good deal more, including one or two longer editorials, which I shall send soon.

I am not sure whether the biographical missionary article relating to
Mr. Broadhead and Mr. Jones is just what you would wish for Forward, but I know
that if it is not, or the other material is not just what you could use now, you
will not hesitate to let me have it back.

Very affectionately yours,



2

October seventh, 1905.

Mr. Charles C. Trumbull,
1031 Walnut Street,
Philadelphia, Penna.

My Dear Charles:-

Your kind note of yesterday is just received. I was sending you this morning, an article, entitled "The Snare of Sincerity," which you are welcome for an editorial if you wish it; and I send also some paragraphs, from which you can pick anything that may be of use to you, if there happens to be anything among the paragraphs that you would wish. Please let me have back any that you do not want.

I hope you may have a good trip in Nova Scotia and New Brunswick.

Ever affectionately yours,

Robert H. Allen

Dear Sir,
I have the honor to acknowledge the receipt of your letter of the 10th inst. and in reply to inform you that I have the pleasure to accept your invitation to visit the Young Men's Christian Association, but I have engagements for both the 15th and 16th of the month, and also for all the other dates you mention. Indeed, I have all my Sundays filled for months ahead.

Your very kind telegram was received on Thursday, and letter yesterday. I am sorry it will not be possible for me to accept your cordial invitation, but I have engagements for both the 15th and 16th of the month, and also for all the other dates you mention. Indeed, I have all my Sundays filled for months ahead.

It would have been a pleasure to come to Louisville, for the sake of the Young Men's Christian Association, but even more in order to visit the theological Seminary.

Very cordially yours,

October seventh, 1895.

The Rev. D. R. Ireland,

Peekskill Military Academy,

Peekskill, New York.

My Dear Dean:-

I thank you very much for your kind letter, but it will be impossible for me to come. I have all my Sundays filled until the end of May. I like to visit the schools, but while every day will be Sunday by and by, it isn't so now, and I have all the Sundays there are tied up.

Very cordially yours,

Wm. L. ...

October seventh, 1905.

Mr. James H. Crockett, Treasurer,

Columbia University, New York.

My dear Mr. Crockett:

I have found the verses

of Lowell's "Quaker" which I wrote to you some
weeks ago. They are in the poem entitled
"Quakerism" the third line of which, how-
ever, would be -

"The Quaker soul could never be alone."

Very respectfully, yours,

October seventh, 1905.

Rev. J. C. Fitchley,

Old Testament House,

Ypsilanti, Mich.

Dear Mr. Fitchley:

I have found the lines in
your "Quakerism" which I inquired. They are in
the poem entitled, "Quakerism" and they read:

"If the Quaker soul could never be alone,
In deep silence, open-door'd to God,
No greatness had been dreamed of ever,
Along with us as a spiritual never ever.
The Quaker soul could never be alone."

Very respectfully, yours,

Walter Dill Scott, Treasurer.

Very respectfully, yours,

Walter Dill Scott.

October 12, 1906.

Mr. Henry T. Frost,

New Haven, Conn.

My Dear Mr. Frost:

Your great note of welcome to just received. Indeed, the tranquility of our quiet day does abide. It is true that there have been many varied demands since, still, the peace of the great lessons which were brought afresh to our hearts in our fellowship together. It surely was of God's own appointing that we were brought together as we were.

Hoping to see you soon again, and with warm love. I am,

Your sincere friend,

Robert H. Jones

October 24th, 1901.

President T. C. Vann,

Tulsa, Oklahoma.

Dear Sir:-

I appreciate your kind invitation to deliver the Missionary Address before your graduating class next May 20th, but it will not be possible for me to come. I shall have to be in attendance at our General Assembly at that time, and I regret that I cannot come.

*Respectfully,
J. W. A. Morse*

October 24th, 1901.

J. W. A. Morse,

Young Men's Christian Association,

Tulsa, Okla.

My Dear Mr. Morse:-

I am sorry it will not be possible for me to accept your invitation to spend in your Bible Institute course this winter or spring. I do not expect to be here I shall at any time that would make it possible for me to come.

Very sincerely yours,

*Respectfully,
J. W. A. Morse*

October seventh, 1901.

W. W. J. Morton,

356 West 23rd Street,

New York City.

My Dear Mr. Morton:-

I am sorry it will not be possible for me to accept the cordial invitation of the Hermon Association to be present at its dinner on October 27th.

Trusting that you may have a very pleasant dinner, and that the Association may be increasingly successful, I am,

Very truly yours,

October seventh, 1901.

Miss Eliza H. Kendrick,

45 Honeywell Avenue,

Newton, Mass.

My Dear Miss Kendrick:-

I shall be very glad to speak at the Vesper Service on the evening of the 20th, if the interests of the Hermon Association work.

Very cordially yours,

1

1871

1871

1871

1871

✓

Oct. 10th., 1905.

Mr. G. H. Gaffin,
Y. M. C. A.,
Madison, Wis.

My dear Mr. Gaffin:

I am sorry to have to say that I do not expect to be in Wisconsin this college year, and cannot hope to have the pleasure of visiting Madison and speaking at the University. I wish it were otherwise.

Trusting you may have a good year, I am,

Very sincerely yours,

[Signature]

✓

Oct. 10th., 1905.

Mr. E. M. Willis,
3 W. 29th St., City.

My dear Mr. Willis:

I enclose herewith the quotations which you sent me for verification. If you are going to use at all my addresses at Detroit, will you not let me revise the report of them.

Very cordially yours,

[Signature]

Oct. 10th., 1905.

Mr. James M. Gordon,
13 Tufts St.,
Malden, Mass.

My dear Mr. Gordon:

I have just received the beautiful picture of Miss Charlotte, and write at once to thank you for it.

We get such good letters from Miss Annie, and rejoice that she has been so upheld and strengthened in all this time of sorrow.

I trust that you and your brother and mother are well, and with kind regards, I am,

Very cordially yours,

Mr. Kenneth A. Bray,

214 West 44th Street,

New York City.

My Dear Mr. Bray--

I was very glad to receive

and I shall be happy to be of any service to you that I can. Just at present I do not know of any call for such work in the evenings as would fit in with your plan; but I may learn of something, and if I do, shall be very glad to let you know. Please do not hesitate to let me hear if there is any way in which I can be of service to you. If you are ever passing by our building, I should be glad if you would drop in.

Mr. Hugh A. Moran,

Madison College,

Oxford, England.

My Dear Mr. Moran--

Your kind letter and postal card have both been received. And I have had enough other invitations to come to the Pacific Coast to make me feel sure of the most generous welcome there. But I seem to have been unable to get there this winter. The Rev. Dr. W. Potter has been here, and I have explained to him the whole situation, and I think we see the importance of my going there. I shall hope to get out there some time in the future.

Very cordially yours,

October seventh, 1895.

A. A. Simon, Tr.,

Youg's Bible Conference Association,

Washington, D.C.

My Dear Mr. Simon:-

I am pleased to

promise at once the kind of article you want for

the Pilot, but I have been the recipient of two

articles made a couple of years ago, at the

Illinois State Convention, at Dixon, Ill.

and the trouble to use either one of these if

you wish. If you do not think either one of

them suitable for your purpose, will you please

Very sincerely yours,

October seventh, 1895.

The Rev. H. S. Buehler,

Lakeville, Conn.

My Dear Mr. Buehler:-

Mr. Spear is afraid

and Elliott will not be able to come up this time.

Elliott has started in his own school again, and

we have a good many things needing done at home.

Still, I should be glad if they can arrange to

come, and shall let you know in case they can

plan to do so. But if I do not send word, you

can send word to Mr. Buehler and

to Mr. Spear in the meantime.

Yours truly, H. S. Buehler and

For Mr. Buehler's use only - do not

1895

October seventh, 1905

Post Office Box 1000,

3rd Avenue,

New York City.

My dear friend -

Thank you very much for your note of September 24th, with its report on the Bible Study. I have no suggestions to make. I am a voice in what you are doing directly, in the indirect but powerful influences which you exerted that of Fred Smith and his colleagues and all kinds of the class.

Very aff. cordially,

Oct. 10th., 1905.

Mr. G. A. Warburton,
361 Madison Ave., City.

My dear George:

I enclose herewith a brief note on impressions regarding the Detroit Conference.

I hope you are very well and am only sorry we did not see more of one another.

Very affectionately yours,

✓
 October 10, 1901.

Mr. F. W. Smith,

3 West 29th Street,

New York City.

My Dear Mr. Smith:-

I think the work of the special Religious Departments of the Young Men's Christian Associations is of help to the general cause of Christ, and also to the special work of the Associations themselves, in two ways: It is a great help directly, in the conversion of men who have not been followers of Christ, and in the development of men who have been His followers in habits of thought and action, and in the desire to reach other men. And in the second place, indirectly, through the effect of the religious work department on the whole spirit of the Associations. It has created a new conception of the Association as a merely philanthropic or educational force. I trust that the department may be greatly strengthened. This is the vital work of the Young Men's Christian Associations.

Very cordially yours,

✓
October 2, 1906.

W. H. H. H. H.

W. H. H. H.

Chicago, Ills.

My Dear Mr. Foster:-

I am glad that you could use Mr. Clement's article. I hope that ultimately there may be an adequate biography of Dr. Cochran.

I appreciate very much your kind invitation to write something for the Interior, and I shall keep it in mind, and if anything comes to me that I think you would want, I shall be glad to send it to you.

I want to thank you for that address of yours at Geneva, which was published in a recent number of Association News. It was admirable.

I wish we met more frequently than we do, and hope some time when you are here you will save the luncheon hour or a night so that we can have it together.

Very cordially yours,

W. H. H. H.

October 10, 1905.

Mr. Paul H. Smith,

1012 Third Street,

Philadelphia, Penna.

My Dear Mr. Paul:-

I was very glad and grateful to receive the other day your note, written after reading "A Young Man's Questions." I do hope that you will come with your life to the Saviour, that He may be to you and do through you for others what by yourself you can never be or do.

The simple question for us to answer, it seems to me, is the question, Is it true? Is Jesus Christ what He claimed to be? Is the Christian life what those who have tried it declare that it is? These are questions which Christian men say can be answered in the affirmative, and that such an answer can be sustained by convincing and satisfactory evidence. If you would like to read one or two other little books on the subject, I would suggest Huxford's "Character of Jesus," Simpson's "The Fact of Christ," and Drummond's "The Ideal Life." It seems to me that these will make the truth alike of Christ's claim and lordship, and of the superior power of the Christian life absolutely convincing to you.

But the best evidence that one man can offer to another is simply the evidence of his own experience. He can say "I know," and that is what Christian men will say to you. We know what it is that we urge upon others, for we have tried it ourselves. And we know that it is real, and that Jesus Christ from whom it comes, is real.

I am sending you a copy of the little book entitled "Things That Make a Man," which was a part of "A Young Man's Questions;" and with the earnest prayer that you may now, when you lay this letter down, accept Jesus Christ as your personal Saviour and Lord, and give yourself to Him to be His faithful follower, I am,

Very sincerely yours,

October 11th, 1905.

Mr. E. M. Willis,

3 West 29th Street,

New York City.

My Dear Mr. Willis:-

I return herewith the extracts you sent. Your note will have crossed mine, in which I said that I would be glad to revise both addresses in case you intend to make any use of them.

Very cordially yours,

October seventh, 1905.

Mr. J. A. Melrose,

Hamilton College,

Clinton, New York.

My Dear Mr. Melrose:-

Your kind note of September 29th has been received. I wish very much I could accept your invitation to visit Hamilton, but there is no possibility of my coming. I have engagements for all my Sundays until the end of May. I remember a visit to Hamilton fifteen years ago. I have never been back to the College since, but have the most pleasant recollections of that early visit. I should be glad if some time it might be possible for me to come again. I hope you may have a good winter's work.

Very sincerely yours,

October 18th, 1905.

Mr. George W. Arms, Jr.,

176 Nassau Street,

Princeton, N. J.

My Dear Mr. Arms:-

It was a pleasure to receive
to-day your note of yesterday. I am sorry I
shall not be free on Monday. I have to be out of
town over Sunday, and shall not get back until
noon, and then we have a Committee meeting, and
immediately after that a meeting of the Board.
But I shall be here on Tuesday, and should be
very glad to see you any time that day. It will
be a great pleasure to meet your fiancée, too.
If I can be of any help to you in any way I shall
be very happy.

Very cordially yours,

Robert E. Steer,
D.

October 12th, 1905.

Miss Margaret M. Reeve,
Merion Hall, Bryn Mawr College,
Bryn Mawr, Pennsylvania.

My Dear Miss Reeve:--

I am sorry to have to say that I have engagements for every Sunday this winter, and cannot possibly come to spend a day in Bryn Mawr. I shall probably be at the University of Pennsylvania, however, for one Sunday, - February 11th. If I am there for that Sunday, and free for the afternoon, I shall be glad to come out then.

I expect to be over at Bryn Mawr next Wednesday evening for the chapel service.

Very cordially yours,

October 12th, 1905.

President M. Carey Thomas,

Bryn Mawr, Penna.

My Dear President Thomas:--

Your kind note of the ninth was received yesterday, and I telegraphed that I should be glad to come over for Wednesday evening, October 18th. I presume the service is at eight o'clock, and shall be at the chapel at that time. I am very sorry it will not be possible for me to spend the night, and I am afraid I cannot even get over in time for dinner before the service.

With kind regards from Mrs. Speer and myself,

Very sincerely yours,

October 12th 1905.

Miss Laura B. McComb,

2231 Thompson Street,

Philadelphia, Penna.

My Dear Mr. McComb:-

I think the only time that I might be able to speak at the Woman's Medical would be Saturday evening, February 10th. I expect to be in Philadelphia for the following day. If that evening would be suitable, I should be glad to come then.

Very cordially yours,

October 12th, 1905.

Miss Badd,

29 East 29th Street,

New York City.

Dear Madam:-

It will not be possible for me to be present at the Recital at the Martha Washington Hotel, for the benefit of Miss Sorajbi's schools. Perhaps you could get Mr. Lemuel Joshi, an earnest Christian man from Bombay, who is studying medicine in this city, to say a few words. His address is care the Cornell Medical School, First Avenue.

Very truly yours,

October 12th, 1905.

Mr. George K. Cummings,

114 Pierce Street, Station H.,

Washington, D. C.

My Dear Cummings:-

I thank you very much for your kind note of yesterday, but I shall have to come back to New York on the night train, after the meeting on the seventh.

Very cordially yours,

October 12th, 1905.

Mr. Arnold Smith,

Auburn Theological Seminary,

Auburn, New York.

My Dear Mr. Smith:-

I am sorry to have been delayed in answering your kind note of September 27th, and I regret exceedingly that it will not be possible for me to be at the Volunteer Convention on November 4th and 5th. I have engagements for both those days, and the following days, which would prevent my coming. I hope you may have a good convention, and I wish it were possible for me to be present.

Very cordially yours,

October 12th, 1905.

Professor A. R. Simpson,
52 Queen Street,
Edinburgh, Scotland.

My Dear Professor Simpson:-

Mr. Henry Coffin spent a night at my house a few days ago, and told me of your Valedictory Address on laying down your Professorship. He was greatly impressed with the declaration of Christian faith in the Address, and what he said interested me so much, that I am venturing to write to ask if the Address is in print, and if so, whether I could get a copy of it.

I remember with great pleasure your visit to this country with Professor Drummond and Dr. Smith, in 1887, and with special pleasure my visit in your home in Edinburgh in January, 1900. I hope that you and Mrs. Simpson are both well, and that you may be spared for many years to use your great influence, as you have used it in the past, in the extension of the Kingdom of Christ among young men.

With sincere regard.

Very faithfully yours,

Let

October 12th, 1905.

The Rev. J. R. Miller, D. D.,
Witherspoon Building,
Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Miller:-

Your good letter came yesterday. I had not means to overlook your invitation to speak at St. Paul's in case I should have a Sunday evening free while in Philadelphia some Sunday. Dr. Dana has been writing for some time inviting me to speak in his church also on any such Sunday evening. I shall be very glad to try to do both if I have two Sundays in Philadelphia this year. If I find that there is an evening on which I can come, I shall be very glad to let you know.

I shall try to send soon some article that will do for the last in the regular series.

I quite agree with your judgment regarding the article on Mr. Brodhead and Mr. Jones.

Very affectionately yours,

Oct. 14th., 1905.

Rev. Henry H. Jackson,
Redlands, Calif.

My dear Jackson:

I am sorry that I did not have time to answer your letter regarding the Redlands church before you went West, but I was away a great deal and swamped when I was here, and moreover I had no knowledge whatever about the church. Mr. Marquis I know. He is a good, clean-cut man of temperate and reliable judgments. What he says of the church is certainly very attractive, and of course you know, having opportunity to examine the field for yourself.

In case you decide not to go to Redlands, what would you think of such a place as the chaplaincy of West Point. They want an Episcopalian there, but they have not yet found the right man, and I think that if just the right Presbyterian offered himself, they might perhaps be willing to take him.

Of course I have no standing in the matter at all, but I have friends who are very much interested in the work and who might be able to put in an influential word if they felt sure that they had the right man to recommend. I do not know whether you would feel yourself to be the right man, or not, but if you do not accept the work at Redlands, I wish when you come back I might introduce you to one of these friends that you might talk it over with him.

Very cordially yours,

Oct. 18th., 1905.

Prof. W. W. White,
541 Lexington Ave., City.

My dear Dr. White:

I do not know the Rev. Wm. Reed at all, and cannot give you any opinion regarding him.

As to books on personal work, I suppose the following are the best-known: - Trumbull's "Individual Work for Individuals" - Dyson Hague's "Personal Work" - Sayford's "Personal Work" - Torrey's "How to Save Souls" - Hicks' "Life of Horace W. Rose", and the little books of Mott, Ober and James Mc Conaughy on personal work and Christ as a personal worker.

Perhaps Smith's "Magnetism of Christ" might be included, and Bruce's "Training of the Twelve".

Very cordially yours,

I can not answer the question as to whether I met him when he was one of the Trustees of the Board. As subsequent contact has been by correspondence. He later had letters and

Oct. 14th., 1905.

Rev. L. B. Crane,
Woodtsock, Conn.

My dear Bert:

I had already heard of the plan that you should go to Scranton, and rejoice in it. It is a fine field of work, and it will put you in the way of opportunities for work after Mr. Odell's return. I know that it would please Dr. McLeod if you might be called to stay right on in Scranton with the church which he is leaving.

I know you will not spoil my reputation for good judgment in Scranton, and I wish you this winter and always, God's best blessing in your work.

Very cordially yours,

Oct. 13th., 1905.

Mr. C. V. Vickery,
156 Fifth Ave., City.

My dear Vickery:

I am very much obliged for the copy of Naylor's book - "Daybreak in the Dark Continent". I am glad to see the circular of the African Reference Library. It seems to be an extraordinarily good offer.

Very cordially yours,

Oct. 14th., 1905.

Mr. Hugh M. Mc Ilhany, Jr.,
University of Virginia,
Virginia.

My dear Mc Ilhany:

The only two Sundays that I have that could be given to the University of Virginia, and the University of Pennsylvania, are Feb. 11th. and May 20th. It would not be very convenient for me to be so far away as the University of Virginia, Feb. 11th, and there are other appointments that ought to be combined with that day in Philadelphia, so that I am afraid I cannot come down to you then.

If May 20th is not too late, and I do not have to go to our General Assembly, I might be able to arrange to come down that day, though I cannot definitely promise.

This year is fuller than any preceding year has ever been and it costs more to be away from the office for things pile up terribly, but I want to be a help to you if I can.

Dr. Lloyd was telling me to-day of his visit and how finely Madison Hall is working.

Very cordially yours,

✓

Oct. 14th., 1905.

Mr. Thomas S. Evans,
Houston Hall,
W. Phila., Pa.

My dear Tom:

I have not yet seen Mac Cracken. If he thinks he cannot go to China, how would he do for Persia to take Dr. Cochran's place in Urumia? We need there the highest and most effective type of man, a capable surgeon, ingenious, influential. We are looking all around for such a man. I have asked Dr. R. M. Wilson to help us find one, and have written to two doctors in Philadelphia, Lyfe and Hodge, both of whom declined. Can you get hold of any man for us.

With reference to the University of Virginia, I would say, that the only Sundays I have for you and for the University of Virginia, are Feb. 11th and May 20th. I am afraid May 20th. is a little late for either place, and it would suit me really better to be nearer at hand for Feb. 11th. so I think we had better count that a fixture.

I am writing to Mc Ilhany telling him that I might be able to come down there for the 20th of May.

Will you want me for the evening of Feb. 11th? If not, I have two other invitations for that evening, and they also want me to speak at Bryn Mawr at five o'clock in the afternoon. That would not interfere with any meeting at the University, would it?

Very cordially yours,

Oct. 14th., 1905.

Prof. Geo. L. Robinson, D. D.,
1080 N. Halsted St.,
Chicago, Ill.

My dear George:

Your good letter of the 28th was received some time ago. I had heard from Mrs. Jackson, and had to write to her that there was no possibility of my coming to Winfield next June. If I can get away at all then, I will go as I have been going for years, to the Summer Student Conferences.

I had not heard of Kerswell's death until I got your letter. I confess I do not read the church papers very closely. He never was a strong man, and I rejoice that we have had him in the service of the Church as long as we have.

I wish I could see your dear old face again.

Very affectionately yours,



Oct. 14th., 1905.

Miss Edith H. Nichols,
13 Main Ave.,
Albany, N. Y.

My dear Miss Nichols:

I am sorry that it will not be possible for me to come for the Institute, Nov. 18th, 14th and 15th. I have engagements for each of those evenings. and indeed my time is so filled up for weeks ahead that I do not see any possibility of my getting up for the Institute at any other time in the near future.

I think that Dr. Halsey will be available however, the second week in November, and you could not, of course, get any better one than he

Very cordially yours,

Oct. 13th., 1905.

Rev. W. V. Jeffries,
Morrison, Ill.

My dear Jeffries:

I wish I could be of some help to you in placing in your library the books on "Missions and Modern History", but I am not in a position to present the books to you. If the Publisher is willing however, I would gladly relinquish any royalty on one set, and am sure that he would give you the wholesale price, so that you would get the books for perhaps two-thirds of their advertised cost. The books are published by the Fleming H. Revell Co. who have an office in Chicago as well as in New York.

Very cordially yours,

✓
October fifteenth, 1909.

Mr. J. H. Oldham,

22 Warwick Lane,

London, England.

My Dear Mr. Oldham:-

Your kind letter of October fifth is just received. I am very glad indeed that the paper proves suitable for use in your book. You are at perfect liberty to reduce it by such omissions as you think best, rather like your idea of omitting the concluding section on "angers," especially if that aspect of the question is covered in other chapters. I am quite willing, however, to trust you to omit what you think best.

I shall be glad if you will send me back the manuscript when you are through with it, as I have no extra copy.

I trust you received the paragraph I sent regarding the Holy Spirit. That might be added as a numbered paragraph at the close of the section on "Helps." I have forgotten what number it would be, but I think 11 or 12. The manuscript will show. I trust the little book may prove a real service to young men, and with best wishes and kind regards, I am,

Very sincerely yours,

✓
October 17th, 1905.

The Rev. H. G. Buehler,

Lakeville, Conn.

My Dear Mr. Buehler:--

I find on looking up the letters this morning, that the amount asked for by Dr. Lewis for his medical work in China, was \$132. Mexicans, not \$187. The latter amount had been by clerical error substituted for the other on the list of needs. \$132. Mexicans, accordingly, is the amount needed, and that in our money would be about \$60. It is very good indeed of you to have this taken by the school.

It was a delightful visit anyway,

except the flying out of it. That was hardly-ly unsatisfactory to me.

yourself.

Your sincere friend,

October 17th, 1905.

Mr. H. C. Coleman,

Horriestown, Penna.

My Dear Horace:--

Your note of yesterday is just received. I telegraphed at once to your office in Philadelphia, stating that Dr. Halsey would be here to-day, but that after today he would not be here until the morning of the 31st of this month. I suppose you will not be able ~~on~~ such short notice to get off; but we shall look forward with pleasure to seeing you on the 31st, if you can come then.

With warm regards from us all.

Your affectionate friend,

282

October 17th, 1905.

W. C. C. Trumbull,
1031 Walnut Street,
Philadelphia, Penna.

My Dear Charlie:-

I enclose herewith a few paragraphs from which you may be able to select some for the first page of the paper. Please let me have back any that you do not want.

Very affectionately yours,

W. C. C.

October 17th, 1905.

The Rev. J. R. Miller, D. D.,
Witherspoon Building,

Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Miller:-

I enclose herewith some more material for Forward. I have tried to spare a little bit for my negligence in the past few months.

Very lovingly yours,

W. C. C.

October 17th, 1905.

The Rev. John McDowell,
Park Presbyterian Church,
Newark, New Jersey.

My Dear McDowell:-

You will remember Gillespie who was in my class in college, and who is now pastor of the Presbyterian Church in Coatesville, Penna, where he has been doing admirable work, as he did in his previous field in Port Jarvis. He is a good, capable man, and I think you would get the highest commendation of him from his people in Coatesville. I am writing to ask whether you could not get his name in the best way before the Second Church people, if that church is in such shape as will not ruin the next man who comes to it. I do not know its condition, and I do not know now who are the leading men in it. But you will know the situation and through whom to work. Gillespie is a man who works, who believes in the real gospel, and who has grown steadily. If there is any way in which a word from me could be of help in the matter, I wish you would let me know.

Your sincere friend,

Robert E. Spurr

If they want a supply at the 2^d Church until they get a pastor
they can do better than get the Rev. James Robinson, D.D., formerly of
Nashua, N.H. at Pullman Mass. He has retired but does to
the best of his ability to help the church.

October 17th, 1905.

Mr. A. A. Simon, Jr.,
Young Men's Christian Association,
Pensling, Pennsylvania.

My Dear Mr. Simon:-

I never furnish my picture for publication. I do not know where the Illinois people got it for that report, or where the Y. M. C. A. people got theirs. A villain of a photographer took a picture of Mr. Hicks and me on the street in Detroit, and perhaps that is what they used in the Detroit papers. I would rather you would just print my article without any picture.

Very cordially yours,

October 17th, 1905.

The Rev. Boyd Edwards,
22 McGraw Street,
Brooklyn, N. Y.

My Dear Boy:-

There will be no expense in connection with my speaking at your Convention in Brooklyn, November 16th. You will let me know, will you not, the hour and place of meeting? I understand it is to be in Brooklyn, so that I can get home the same night.

Very cordially yours,

October 17th, 1905.

Mr. Graham C. Porter,
Yale College,
New Haven, Conn.

My Dear Graham:--

I was very glad to get your letter, and to know your feeling at the end of the summer. Mr. Bates and Mr. Carter have both spoken to me in the warmest terms of your work and the way you won the affection of the people. It must have been a very good experience, and the fact that you wanted to take it, and that you did your work so sensibly and efficiently, increases my regard for you.

It will always be a pleasure to hear from you, and I shall hope to see you some time this year when I am up at Yale.

Very cordially yours,

October 17th, 1905.

Mr. S. Earl Taylor,

150 Fifth Avenue, N. Y. City.

Your Grace:--

I am under deep obligation to your lordship for the interesting literature sent me. I trust I may profit by it. I am grateful for the condescending thought of your Episcopal Highness, and I am,

Your obedient servant,

October 17th, 1905

Mr. Dumont Clark, Jr.,

Princeton, New Jersey.

My Dear Dumont:-

Your two good notes of the fourteenth have been received. Thank you very much for your kind thoughtfulness. I was glad to see so many men out at the meeting, and rejoiced at the opportunity of speaking to them about Christ. I shall look forward with pleasure to my next visit on December 14th.

I am sorry I cannot come down for the advisory Committee meeting in the afternoon of the 24th. I have an engagement in East Bridgport, Conn. that evening.

Very cordially yours,

October 17th, 1905.

Mr. S. C. Smith,

Record of Christian Work,

East Northfield, Mass.

My Dear Mr. Smith:-

I should be very glad to review the books which I have checked on the enclosed list, sent in your kind note of the 13th.

Very sincerely yours,

October 17th, 1905.

Mr. A. J. Abbott,

124 Essex Avenue,

Orange, N. J.

My Dear Mr. Abbott:-

I enclose herewith the receipt for my expenses to the Morristown Convention. It was a great pleasure to attend the Convention, and I trust it may have left an abiding influence for good.

Very cordially yours,

Robert H. Bowen

October 17th, 1905.

Mrs. Hanscom,

Northampton, Mass.

My Dear Mrs. Hanscom:-

It was a great pleasure to meet you after the Vesper Service at the College, and I was delighted with what you said about Bowen and your generous readiness to help in the gathering of the material for a biography. I shall look forward with much expectation to your recollections, to the photograph of Bowen, and to any letters if there are any such written by him to Captain Hanscom.

Thanking you heartily for your kind readiness to help, I am,

Very cordially yours,

Robert H. Bowen

October 17th, 1905.

The Rev. George E. Gillispie,
Coatesville, Penna.

My Dear George:-

I am delighted to hear of the great advance in your missionary offerings. It will surely be a great spiritual blessing to the church.

I have spoken in the Second Church of Newark, which Dr. Bridges has left, but I do not know anything about its spirit and character. I am writing to McDowell, however, who has just gone to the Park Church there, asking him to look into things, and if it is the right sort of field, to put your name before the proper people. Anything I can do of course, I will be happy to do.

Very affectionately yours,

✓
October 17th, 1905.

Mr. S. E. Bridgman,

108 Main Street,

Northampton, Mass.

My Dear Mr. Bridgman:-

Thank you very much for your good note which came yesterday. Mr. Beattie came to see me last week, and said that there must be some mistake, as he had never written anything of any sort regarding Bowen. He was going to see Mr. Dornay, and find out what he said that had created an impression that he had written anything.

I would have been delighted to come to see you when I was speaking at the Yeager Service at Smith Sunday a week ago, but I was over at Amherst, and had to get back to Amherst College afterwards. I was there long enough, however, to find a new Bowen clue. Miss Hanscom introduced me to her father, who has a picture of Bowen which I have never seen, and also recollections of him, and perhaps some recollections of her husband's regarding him.

With warm regards.

Your sincere friend,
Lucy

M.

October 17, 1905.

Mr. J. M. Groves,

Phillips Brooks House,

Cambridge, Mass.

My dear Mr. Groves:

I have delayed replying to your note of October 4th. until I could send some definite answer. I shall be glad to come up to Cambridge Friday evening, October 27th. to speak at a meeting that evening. If I come up on the one o'clock train, reaching Boston at 6.10, that will be in ample time, will it not? As for Sunday afternoon, I am afraid I cannot come then, as I have to be in Wellesley that Sunday and speak there in the morning and evening, and would rather not come across to Cambridge for the afternoon. Beside, there will be work that afternoon that I ought to be doing, doubtless, at Wellesley or at Dana Hall, where I shall be staying. I have heard from Mr. Gates and have written to him that I could not come up for Friday afternoon, but would be glad to do anything on Saturday, if that would be worth while.

Very cordially yours,

M.

October 17, 1905.

Mr. Don S. Gates,

491 Boylston Street,

Boston, Mass.

My dear Gates:

I have delayed answering your note of October 5th. until I could reply definitely. I am sorry to have to say that I cannot possibly get away from here in time to speak at Technology on the afternoon of the 27th. If a meeting any time on Saturday, October 28th. would be satisfactory, I should be very glad to come for that. I expect to go up to Cambridge in time for a meeting at Harvard Friday evening.

Very cordially yours,

M.

October 17, 1905.

Professor D. Emmert,

Huntingdon, Pa.

My dear Professor Emmert:

Your kind letter

of October 11th. was received last week. I have delayed answering, in view of your reference to a little booklet which you were sending me under separate cover. This has miscarried somehow, however, and I will not delay thanking you for your very kind note. It was a pleasure to be back in Huntingdon again and to speak to so many whom I knew what are surely the best ideals of life and its principles.

I have many boyhood recollections of you and appreciate verily your kindness in writing.

Very cordially yours,

October 10th, 1915.

Professor R. V. Robbins,

Princeton, New Jersey.

My Dear Robbie:-

I beg leave to introduce here-
with, Mr. and Mrs. John C. James, who are neighbors
of mine in Englewood, and who are going to Princeton
with their son Capen, whom they expect to send there.
Mr. James is President of the John Claflin Company.
I believe, and I have known them as good friends
and neighbors for some years. I am delighted
that they are going to send their boy to Princeton.

I know you will be glad to nourish a good
enthusiasm in the boy.

Ever your sincere friend,

Robert E. Speer, D.

October 10th, 1915.

Mr. Durent Charles, Jr.,

Princeton, N. J.

My Dear Durent:-

I beg leave to introduce here-
with, Mr. and Mrs. John C. James, who are neighbors of
mine in Englewood, and who are going to Princeton with
their son Capen, whom they expect to send there. Mr.
James is President of the John Claflin Company, I believe,
and I have known them as good friends and neighbors
for some years. I am delighted that they are going
to send their boy to Princeton.

I know you will be glad to show Mr. and Mrs.
James as much as they would care to see of the College,
and to fill Capen with the proper enthusiasms.
Very cordially yours,

Robert E. Speer, D.

October 13th, 1905.

Mr. John C. Barnes,
Hotel St. Andrew,
72nd Street and Broadway,
New York City.

Dear Mrs. Barnes:-

Mrs. Spear gave me your kind
a Tuesday evening, when I got home, and I should
have answered it yesterday if it had been possible.
I have great pleasure in sending herewith two
notes of introduction, one to Professor Henry B.
Fine, the Dean of the University, and the other to
Professor E. V. Rabinow, who was a classmate of
mine, and who I know will be interested to be of
help to you and Mr. Barnes. I send a note also
to Dunmont Clark, the Secretary of the Philadelphia
Society, whom I know you will like, and who will
glad to show him the College.

I am delighted to know that you are expecting
to send Capen there, and trust you will let me
know of any service that I can do to you.
With kind regards to Mr. Barnes and yourself.

Very sincerely yours,

October 13th, 1905.

Professor Henry B. Fine,
Princeton, New Jersey.

My Dear Professor Fine:-

I beg leave to introduce
herewith, Mr. and Mrs. John C. Barnes, who are
neighbors of mine in Englewood, and who are going
to Princeton with their son Capen, whom they
expect to send there. Mr. Barnes is President of
the John Chaplin Company, I believe, and I have
known them as good friends and neighbors for
some years. I am delighted that they are going
to send their boy to Princeton.

Very sincerely yours,

H. B. Fine

October 17th, 1905.

Mr. A. G. Moody,

East Northfield, Mass.

My Dear Mr. Moody:-

I am very much obliged
for the copy of the annual report of the Treasury of Mt. Hermon. I have not had time to examine it carefully, but am glad to note that there is such a good surplus.

With kind regards.

Very sincerely yours,

October 17th, 1905.

Mr. Richard C. Morse, Jr.,

Yale University,

New Haven, Conn.

My Dear Mr. Morse:-

It was kind of you to send me the complimentary Membership Card of the Yale Young Men's Christian Association. I hope you may have a good year, and trust that there may be real results in uplifted and strengthened lives.

Very cordially yours,

October 19th, 1905.

Dr. William J. Stewart,

Lancaster County Home and Insane Asylum,

Lancaster, Pennsylvania.

My Dear Dr. Stewart:-

The lines for which you ask
are from a little book of poems by George Arnold,
a Southerner, who was a newspaper reporter in New
York during the Civil War, I believe. They run:

"I have had my will
Tasted every pleasure;
I have drunk my fill
Of the purple measure;
Life has lost its zest,
Sorrow is my guest,
Oh, the lees are bitter, bitter,
Give me rest.

"Love once filled the bowl,
Punning o'er with blisses,
Made my very soul
Drunk with crimson kisses;
But I drank it dry,
Love has passed me by;
Oh, the lees are bitter, bitter,
Let me die."

Very sincerely yours,

Robert C. [Signature]

✓
October 19th, 1905.

President Henry Hopkins,

Williamstown, Mass.

My Dear President Hopkins:-

I have delayed

answering your kind note of October 14th, until I could correspond with reference to one of my appointments in March, which I hoped to be able to transfer to December third. I find that this cannot be done, however, so that I shall have to give up the pleasure of coming to Williams this winter. If I do not have to go to our General Assembly, I might be able to come for May 27th, but that is the first Sunday until the middle of June which I have now free.

With kind regards.

Very sincerely yours,

Robert E. Speer

✓
October 19th, 1905.

Miss Pauline Sage,

Wellesley College,

Wellesley, Mass.

My Dear Miss Sage:-

I shall be very glad to speak on Bible Study the Sunday afternoon I am at Wellesley. You will let me know in the morning, will you not, at what hour the afternoon meeting will be?

I am afraid Mrs. Speer will not feel able to come up with me, as I think she expects to have visitors home at the time.

Very cordially yours,

Robert E. Speer

✓
September 15th, 1905.

Mr. Will R. Moody,

East Northfield, Mass.

My Dear Will:-

Your letter of September 13th, regarding the wisdom of having Dr. Gordon among the speakers at the next Student Conference, was received yesterday. I delayed answering it until to-day, in order that I might look again at the only one of Dr. Gordon's books which I have read carefully, "The Christ of To-day." That is a great and useful book. It would be difficult to put more strongly in the language and conceptions of our own day the Christian conviction of the unique deity of Jesus Christ. If you have the book, turn again to Pages 117 - 121; 126-130; 169. It is true that the whole book casts the Christian faith in a somewhat new form; but the real faith is there, powerfully put. I was reading some of these pages standing up in the train this morning, and they almost lift one off his feet. If Dr. Gordon came to Northfield and spoke as he writes in this book, he would be a powerful influence for good among the students. It is true, probably, that he holds views of the Bible and of various Christian doctrines far removed from those of Dr. Torrey; but the book to which I refer

October 12th, 1905.

I was interrupted at this point in writing this letter, and have not been in any haste to take it up again, as I knew you would not be back from Labrador for some time. I was going on to say that "The Christ of To-day" is a message which might be uttered, as it were to us, with perfect propriety from the Northfield platform. I have never heard Dr. Gordon speak, however; and some time ago, when I was on the railroad train with Mrs. Gamble, and showed her this book of Gordon's, she exclaimed with surprise at the difference in tone between it and some addresses of his which she had heard which lacked altogether

Mr. Moody, 2.

the inspiration, positiveness and uplifting vision of the book. On the other hand, I have heard Amos Phelps Stokes at Yale speak enthusiastically of Dr. Gordon's sermons there.

If it were to judge by the book alone, I should answer your question affirmatively; but I believe Dr. Gordon is in favor of slurring over the division between the Unitarians and the Congregationalists. And I think the admission of the present Unitarian Church, so uninspiring, so uninfluential in living power, so negative and lifeless, so separate from the vital understanding of Christianity and from the perception of the spiritual necessities of our time, would be simply folly. They would bring absolutely nothing with them, and they would constitute a dead load. They have drifted far away from William E. Channing, and they have no place among the living interpreters of the living Christ and the apostolic Gospel. I understand that Dr. Gordon, also, was the one Congregational minister in Boston who would have nothing to do with the evangelistic attempts made in connection with Dr. Dawson's visit. I think he might have taken both of these positions, and still be a man of strong and positive message, whom the students ought to hear, and might hear properly at Northfield. But if he is accustomed at times to strike the negative and uninspiring note, he might be on that level at Northfield.

In reply to your questions, I have no doubt that Dr. Gordon is not evangelical, judged by the standards of the Princeton theology. He would doubtless state in terms of the Incarnation what most of the Northfield speakers would state in terms of the Atonement; but he would probably believe that he was including in his view the truth of theirs. I have no doubt that he is as evangelical as Drummond was on his last visit to Northfield.

As to whether it is wise to invite one whose presence might be disapproved by many true friends of Northfield, I think it would depend largely on what he said there. If he could be counted upon to speak as he writes in

Mr. Moody, J

"The Christ of To-day," I would say, Yes. If, however, his message was to be a toning down of the Gospel, I would say, No. Now, Mott is thoroughly evangelical, and if he can give bonds on Gordon in these regards, I should be in favor of his coming.

Looking forward to the far future, I think that you can tie Northfield safely to an unswerving devotion to evangelical conception of the Person and work of Jesus Christ. But you will have to allow for some free play here. You cannot tie it to any particular theory of the Atonement. The most that you can hope to do is to hold it to a simple fidelity to the conviction that Jesus Christ is God, and the only Saviour, Redeemer and Lord.

I hope you have had a good time in Labrador. We missed you down at Princeton, where we had a splendid day.

Very affectionately yours,



M.

October 20, 1905.

Rev. Robert Bonner Jack,

Hazleton, Pa.

My dear Mr. Jack:

Your kind note was received yesterday. I am sorry it will not be possible for me to come to Hazleton to speak to your Men's Club some Monday evening. It would require a whole extra day away from New York and days are almost priceless now. The increase of the work here and the decrease of the force for it, in view of Dr. Ellinwood's advancing years, make it increasingly difficult to get away for working weekdays. I would gladly come if I could.

Very sincerely yours,

106
M.

October 20, 1905.

Miss Una M. Saunders,

3 West 29th Street,

New York City.

My dear Miss Saunders:

It was a great pleasure to receive your note from Oberlin. Mrs. Speer and I have often spoken together of your presence here, and are looking forward with pleasure to having you sometime in our own home.

I am glad to answer your questions and hope you will write at any time that I can be of any service to you.

I think that perhaps the best thing for the volunteer in Wooster, who is doubtful as to his health qualifications, would be a talk with Dr. Hunter Corbett, one of our missionaries from China, who is now at home and making his headquarters in Wooster. Dr. Corbett is not a physician but he is one of our most experienced and sensible men and could soon diagnose this young man's case, psychologically. We do have various medical advisers. The chief, of course, is here in New York, but we are accustomed to get medical certificates regarding young men and women from Dr. Spink, I think, of Wooster, and I am sure that he would be glad to overhaul this young man. If he is in any doubt as to the matter, his report can be submitted to our adviser here.

We are very glad to have an opportunity to advise candidates early in their career, so as to make sure of their taking wise courses of preparation. We have, especially in the western states, such a host of students studying cows and sheep and corn-fields, that we are glad to come in contact with them early in their course, in order to advise them to take up something else beside agricultural training. in one of the state universities.

Miss U.M.Saunders,p.2.

We have a Candidates' Department here of which my associate, Dr.Halsey, is the head.

Our Board has no rigid requirements as to age, although we prefer our missionary candidates to be under thirty and nearer twenty-five, but now and then in an exceptional case, we send out men and women of older years. Two years ago, we sent an experienced woman Sloyd teacher from the Boston public schools to some of our orphanages in India, and she was fifty years old. That of course was an exceptional case. We should not, as a rule, appoint a woman of thirty-six, but we might do so as an exception.

I am sending , as you request, a copy of Counsel to New Missionaries to Mr. S.G.Luckett, Wooster College, Wooster, O. We have not published this little book for general distribution, but only for the use of our missionaries. Wherever it is useful to others, however, we should be glad to sell it for the cost of publication, approximately ten cents.

I hope you are having a good time among our colleges. I was at Smith college the other day and spoke to President Seely about his having you there. Mr. Turner will have no trouble in arranging it if he desires to do so.

Very cordially yours,

Oct. 14th., 1905.

Mr. Andrew Stevenson,
418 Railway Exchange,
Chicago, Ill.

My dear Mr. Stevenson:

I am very, very grateful for your kind letter ~~written~~ on your return from Detroit. It was a real pleasure to see you there as it has been a pleasure to me to meet you, and I am very ~~thank-~~ful that anything I have ever said or said then, has helped to make the highest duty clear, or to kindle the eagerness and fulfil it.

It is a great privilege just to live one's life in the will of God, but it makes it very much easier and richer when this privilege brings with it as it does, the truest and best friendships. I am thankful that that feeling has sprung up between us, and shall look forward with pleasure to the times which I hope may be many when we shall meet in days to come.

Mrs. Speer and I were very glad to get your wedding cards, and send our heartiest congratulations to you and Mrs. Stevenson. We have been married more than 12 years now, so that we seem like very ~~again~~ married people.

About this and all of life, I believe ever more and more in the truth of Browning's line in Rabbi Ben Ezra - "The best is yet to be." The fine thing about the life of men in Christ, is the certainty that it can never deteriorate, but must go from strength to strength, and beauty to beauty.

Yours sincerely,

October 21st, 1905.

Dr. Edward Sylvester Smith,

351 Park Avenue,

Bridgeport, Conn.

Dear Dr. Smith:-

I appreciate very much your kind note of yesterday. I think some time perhaps I shall put that address, to which you refer, into the form of a little booklet. I have not done so yet. It has been printed, however, in the reports of two Conventions, although in somewhat different form. It is in the report of the State Convention of the Young Men's Christian Association held at Saratoga a year or two ago, and in the report of the Railroad Young Men's Christian Association Convention held in Detroit last month.

Very sincerely yours,

October 21st, 1905.

Mr. Arthur L. Thayer,

Barnes Hall,

Utica, N. Y.

My Dear Mr. Thayer:-

Your kind note of the 18th is just received. I am sorry to have to say that I have engagements for every Sunday until next June, and cannot possibly get up to Cornell. For week days, the work here in the offices is so heavy that I have had to cut down the time that I spend away, and it would take at least two full days to go up to Cornell for two evening meetings.

Very cordially yours,

October 25th, 1905.

Principal Alfred E. Stearns,
Andover, Mass.

My Dear Principal Stearns:-

Your kind reply to my telegram is just received. I was sorry to suggest the transfer, because I know that such changes cannot usually be made without inconvenience. But I asked in this case because the first Convention of the Federation of Christian Churches is to be held here in November, and there is to be an important meeting in Carnegie Hall on Sunday afternoon, November 19th, at which I have been asked to be present and speak, and I felt that I ought to accept the invitation if possible. I am very grateful to you for your kind response.

Your sincere friend,



October 25th, 1905.

Mr. George A. Warburton,

561 Madison Avenue, New York.

My Dear George:-

I was very glad to get the other day your letter regarding your brother-in-law, Mr. Sweet. We frequently have requests for suggestions from churches looking for men, and I shall be very glad to have your letter at hand for any such inquiry. And I shall be glad to be on the watch for any such.

Your sincere friend,

October 25th, 1905.

Mr. Thomas S. Evans,

Howard Houston Hall,

West Philadelphia.

My Dear Tom:-

Thank you very much for your note. I shall arrange, accordingly, to speak at Bryn Mawr that afternoon, and at one of the churches in the city in the evening. I shall be glad to come over for the Saturday evening meeting if you decide to have one.

Very cordially yours,

✓
October 27th, 1905.

The Rev. George C. Lenington,

Virginia, Illinois.

My Dear Mr. Lenington:--

I was greatly pleased to receive your kind letter of October 24th, regarding "Missions and Modern History." I have no doubt there is a great deal that is unsatisfactory in the Roman Catholic Church in America, deserving of open and sweeping condemnation. On the other hand, if we put ourselves in the place of a devout Catholic, we can easily see how much there is in our Protestant churches that he can justifiably condemn. And so, while holding fast to essential principles, it seems to me the wise thing to do is to be as charitable and generous as possible in one's judgment.

I had heard just a word from Brazil from Mr. Kolb, of the large additions to the churches there, but have no full information. I earnestly hope you will write the article you suggest for the Missionary Review. I am sure it will be glad to have anything of that kind, and I should like very much to see all the facts that have come to you.

With kind regards.

Very sincerely yours,

Robert E. Speer,
D.

October 27th, 1905.

Miss Helen Temple Cooke,

Wellesley, Mass.

My Dear Miss Cooke:-

I am sorry I cannot tell you at what hour I shall get to Dana Hall Saturday evening. I have to speak in Boston at a meeting that evening, and shall come out as soon as possible after the meeting.

Looking forward with great pleasure to Sunday, and regretting that Mrs. Spear cannot come along, I am,

Very cordially yours,

Robert E. Spear.

✓

October 10, 1911.

The Rev. C. B. McAfee, D. D.,

Lafayette Avenue, Presbyterian Church,

Brooklyn, New York.

My Dear Dr. McAfee:-

I am sorry to have been
slow in sending you the names and addresses of the
men who were at Princeton on October 5th, but I
enclose herewith the list.

Very cordially yours,

Robert E. Spang

✓
The Rev. W. C. Beecher, D. D.,

Auburn, New York.

My Dear Dr. Beecher:-

I received the other day
a copy of "The Prophets and the Promise," with
compliments. I am very much obliged indeed
for the little book, which I have already clipped
into, and which I am sure is just the book many
have been waiting for. I shall read it with the
greatest interest, and I shall be glad to
recommend it.

Very respectfully,

Wm. L. G. S. S.

Wm. L. G. S. S.

Oct. 27th, 1863.

✓
Dearest Sir, Mrs.

The Rev. Miss M. Stanford, D. D.,

90 Bible House, New York City.

Dear Sir:-

In reply to your invitation of
yesterday, Mr. Spear is not sure whether he
will be able to be present at the Luncheon
on November second at one o'clock, at the
St. Denis Hotel, but will come if it is pos-
sible for him to do so.

Very truly yours,

Wm. L. G. S. S.

October 31st, 1905.

Miss Laura A. Knott,
Bradford, Mass.

My Dear Miss Knott:-

I was very glad to get yesterday your kind note of the 26th. I had hoped to get up to Phillips Academy for November 19th, but have had to postpone that visit until February 4th, and am afraid it will not be possible for me to get up in time to speak at Bradford the preceding evening. If I find that I can do so, I shall be very glad to let you know. When I was expecting to go up to Andover for November 19th, I had a kind invitation from Abbott Academy to speak at a meeting there Saturday evening, but was unable to accept, as I was not expecting to get up to Andover until late in the evening. I have never had the pleasure of visiting Bradford Academy, and should be happy to come some time if I could.

Very sincerely yours,

Robert E. Spear,
D.

October 31st, 1905.

Mr. Thomas S. Evans,

Howard Houston Hall,

West Philadelphia, Penna.

My Dear Tom:-

I have very much pleasure in introducing herewith, two students from Cambridge University, England - Mr. Gilbert A Barclay and Mr. A. Claude Felty. They are on their way out to visit China, and are desirous of seeing as much as possible of the Christian work in and out of our Missions while they are here. I know that you will be very glad to meet them, and to help them to see anything they might be of interest to them at the University. I shall appreciate very much any courtesy that you may be able to show them.

Very cordially yours,

Wm. S. Evans.

October 31st, 1905.

Mr. Gilbert A. Barclay,

Arlington Hotel,

Washington, D. C.

My Dear Mr. Barclay:-

I have pleasure in enclosing herewith, notes of introduction to men in Columbia University, New York City, the University of Pennsylvania, Philadelphia, and Yale and Harvard. You must let me know if I can be of any help to you at any time during your visit here.

Very cordially yours,

Wm. S. Evans.

October 31st, 1905.

The Rev. F. S. Myrick, D. D.,

2047 Broadway, N. Y. City.

My Dear Dr. Myrick:-

Your kind note of yesterday

is just received. I shall look forward with pleasure to being present at the luncheon at the Marlborough Hotel, at one o'clock next Monday.

I have to be back in my office by three o'clock for a meeting of our Board, but I spoke of this at the time you gave me the kind invitation to come. And I am glad it will be possible for me

to have the pleasure of being present at the luncheon and yet getting back in time for my duties here.

Very sincerely yours,

Robert E. Speer

October 31st, 1905.

The Rev. John Timothy Stone,

Baltimore, Md.

My Dear John:-

I am sorry I did not see you

yesterday. I was over at a conference in the Dulles Reformed Board Rooms all the afternoon. Mr. Colverton dropped in in the middle of the afternoon, and went home with me, and I left him in Englewood this morning to come in on a later train. Please be sure to keep any night when you are to be here for us.

Very affectionately yours,

Robert E. Speer

October 31st, 1905.

The Rev. C. F. McDonald,
Windsboro, South Carolina.

My Dear Mr. McDonald:-

I am very much obliged indeed, for your kind letter and the little poems which you sent. I do appreciate thoroughly your kindness. I send herewith a few little bits that I happen to have at hand, and which I am sure you will like.

Very cordially yours,

W. B. Ruckelshaus

October 31st, 1905.

Mr. E. F. Ruckelshaus,
Caldier Building,
Harrisburgh, Penna.

My Dear Mr. Ruckelshaus:-

Your kind note is received. I am sorry it will not be possible for me to accept the invitation from New Kensington. I have already all my Sundays filled, and my other days much more filled up than they ought to be, if the work here in the offices is to be properly done.

Very cordially yours,

W. B. Ruckelshaus

October 27th, 1905.

The Rev. H. C. Buehler,
Halesville, Conn.

My Dear Mr. Buehler:-

Your kind note of October 16th, with its generous enclosures, crossed my note to you in which I explained that, through an error here, I had mentioned the amount needed for the medical work at Minan, as eighty dollars, about, instead of sixty. I sent it with our Treasurer's receipt for \$64.68, and this check for \$15.32, representing the excess of the kind contribution of the school.

It was a great pleasure to have the day at the school, and I very much enjoyed my little walk with you after the morning service. I was at Pottstown the following Sunday, and spoke again to Professor and Mrs. Maigs of your grateful appreciation of what they had done to help you, and they were both of them deeply touched by it. I had a nice talk with Mr. Creelman, also, in the evening. I look forward with great pleasure to my next visit to Hotchkiss.

Mrs. Speer wanted me to find out where those little cherries, with twelve dozen solid silver tea spoons, could be obtained. I think she wanted to get a couple for Christmas presents. Do you know where they can be got?

With kind regards to Mrs. Buehler and yourself.

Your sincere friend,

Robert E. Speer

✓
October 11st, 1905.

Mr. Murray Williams,

59 Wall Street, N. Y. City.

My Dear Mr. Williams:-

I have just taken great interest in a letter of October 27th, enclosing a copy of Mr. Hillis's letter to you. I have noted questions asked in the Board meetings as to the expenditures from capital upon the maintenance account, but have not heard any criticism. I should be very glad to hear the whole question discussed, however, at some Board meeting if you think well.

I am very sorry I haven't been able to get an afternoon off to go up to the Village, but hope to be able to run up some day this coming month. I shall telephone to you some time in advance, in the hope which you encouraged the last time we met, that you might be free to go up at the same time.

Very cordially yours,

h. m. m.

November second, 1905.

The Rev. John Acworth,
67 East 89th Street,
New York City.

My Dear Mr. Acworth:-

Your very kind note

with reference to the meeting of the Churchmen's
Association next Monday, has been received. I
am looking forward with much pleasure to meeting
with the Association then at Luncheon.

Very sincerely yours,

John T. C. Ho

November second, 1905.

Miss Pauline Sage,
Wellesley College,
Wellesley, Mass.

My Dear Miss Sage:-

Your kind note of October

31st, with its enclosed check, has been received.
It was a great pleasure to speak to the meeting
Sunday afternoon, and I shall be very glad indeed
if that meeting helps in the Bible Study of the
year. It was a very pleasant day in every way,
and I appreciated the privilege of speaking, both
at the Chapel service in the morning, and at the
other meetings. I hope you may have a good year
in all the departments of your work.

Very cordially yours,

John T. C. Ho

✓
October second, 1905.

The Rev. E. E. Strong, D. D.,

14 Beacon Street,

Boston, Mass.

My Dear Dr. Strong:-

I am very much obliged to you for your kind thoughtfulness in sending me the copy of your Report on your visit to Africa. It was a great pleasure to see you and Mrs. Strong the other evening, and to have those few moments' chat with you.

Very sincerely yours,

✓
November second, 1905.

The J. W. Pense Furnace Co.,

Syracuse, New York.

Dear Sir:-

Will you kindly send me catalogues, descriptive circulars and price lists of your furnaces, especially furnaces combining hot air and steam heat, or hot air and hot water heating?

Very truly yours,

November second, 1905.

Mr. Henry N. Tift,

11 William Street,

New York City.

My Dear Mr. Tift:-

I am very sorry that I shall not be able to be present at the meeting of the Board of Directors of the Juvenile Asylum, next Tuesday evening. I have an engagement in Washington for that evening. Will you kindly present my excuse for absence?

Very sincerely yours,

November second, 1905.

Miss Elizabeth North,

1409 N. Street, N. W.,

Washington, D. C.

My Dear Boss:-

Your kind note came yesterday. I wish very much that I were to be in Washington a little while and could accept your invitation, but I shall get down only in time for the evening meeting, and shall have to return the same night.

I am very sorry to hear that Margaret has not been so well, and will send a note at once to Aunt Lizzie, and shall try to see her if I am in Philadelphia soon.

With much love from us all,

Very affectionately yours,

✓
November second, 1905.

Mrs. Horace T. Pitkin,
328 Grant Street,
Troy, Ohio.

My Dear Mrs. Pitkin:-

It was a great pleasure to receive the other day, your letter of October 26th? We are expecting Mr. and Mrs. Luce home about December, as they were planning to arrive in San Francisco about December 4th. They are intending to make their headquarters in Scranton, Penna.

I was very glad to hear of Horace, and wish he might have been with us yesterday. It was Elliott's birthday, and Mrs. Speer and I took him and Margaret to the Zoological Gardens in the Bronx, and had a fine day. I wish that you and Horace might have been with us. I hope that surely you and he can come and make us a little visit some time.

I rejoice with you in the influence which the story of Horace's life is exerting, and earnestly pray that that influence may widen as the years go on.

Our hearts are turned afresh this morning toward China and the cost of its evangelization, by a cable message just received from Canton, stating that our Station at Hienchow has been attacked, and Mrs. Machle and my, Dr. Eleanor Chesnut, and Mr. and Mrs. Peale, two new missionaries, have all been killed. Dr. Machle and Miss Patterson have escaped, but the buildings have been destroyed. Of course we can only speculate as to the cause of this most unexpected outrage.

With kind regards from Mrs. Speer and myself.

Your sincere friend,

W. S. November third.

You will be interested in a second cable received from Canton, this morning, since the above was dictated.

"Unrest, heathen festival encroaches mission premises, fled cave, discovered, killed, bodies recovered, apply State Department."

November second, 1905.

Mrs. John Meigs,

Pottstown, Penna.

My Dear Mrs. John:-

Your kind note was received at the end of last week, just as I was leaving for Boston, and I had no time to read the letter from Law Watkins until on the train. Mr. Odell, his pastor, had been in only a few days before, and had spoken of Law, of his hope that he could have gone into the ministry, but of his present purpose to take up sociological work.

I have read his letter with very much interest, and return it herewith. It seems to me that the first thing is not so much the question as to what work he will do, but the question as to the dominating principle and guiding spirit of his life. If he joyfully accepts the will of God as his rule, and opens up his heart to discover it and his own will to obey it, other things will take care of themselves; but if he takes up some such philanthropic work as he proposes as a sort of half-way measure between an animated surrender of his will and life to God and a purely selfish use of it, I do not think that it will amount to much. Perhaps that is putting it strong, because a man even with such a tepid consecration, so to speak, is a valuable man and would count for a good deal in a generation of money seekers. But he would count so much less than a man with a prophet heart in him and a living will. It pains one to read such a letter as Law's, to see how near he can come to the thing without catching fire. I wish he could read some good heroic biographies; or that some humble Christian worker, like Mr. Hadley of the Water Street Mission, might be used to reveal to him the possibilities of glorious service in a life that pays no attention to glory, that is not timid about itself, but that does fling itself with rational and yet with whole-souled and resolute devotion into the only entirely satisfactory and reasonable and triumphant cause - the Cause of Christ.

So far as the argument as between such work as he proposes and the

Mrs. Maigs, 2.

ministry is concerned, it seems to me hardly worth while to make it to a man, who would not carry with him the heroic spirit into the ministry if he went, and if the heroic spirit could once be aroused in him, he would decide the other ^{and} ^{way} ^{decide} question naturally enough, in whichever ^{way} he does he would make a life work of reality and achievement.

If the heroic spirit were once aroused, then I should believe in urgently pressing on him the claims of the ministry as a field in which he can do his philanthropic work and his sociological study in closest relationship to human need, and the pressure of direct and immediate application of principles to life. I think a man like Dr. Elsing who is working down in Rivington Street, and a work like Mr. Bates is doing in the Spring Street Church, are making larger and most positive and fruitful contributions to the social problem of the day than the theorists or the money philanthropists are making. They have their place and their work is a useful work; but I believe in a man with life, whose tool is his soul and whose working staff is the souls of his fellows.

I had a delightful visit at Cambridge and Wellesley. I saw Arthur Cable and some of the other Hill fellows at Cambridge. I think Arthur Cable is making a mistake in not throwing himself in with the Association; but I can understand his feeling. I do think that is the worst hodge-podge and unhappy religious situation that I know of among our colleges. I believe I would rather send a boy to Lehigh than to Harvard. I believe that a university does wrong that treats the religious life of the students as it is treated at Harvard. I had a good meeting at Technology the next morning, with an unusually good crowd, and meetings all day at Wellesley. It was nice to see Margaret looking so well, and to have the hours in between at Dana Hall.

With much love from Emma and me.

Very affectionately yours,

November second, 1905.

Mr. Nolan R. Best,

LeGrange, Illinois.

My Dear Mr. Best:-

I was delighted to receive this morning, Evelyn's card, and hasten to send my heartiest welcome to her, and my happiest congratulations to you and Mrs. Best.

Your sincere friend,

November second, 1905.

Professor Alfred L. P. Dennis,

13 Kirkland Street,

Cambridge, Mass.

My Dear Mr. Dennis:-

I was very sorry not to be able to get over to spend the night with you in Cambridge last Friday, but I was up late talking with men, and by the time we were through, it was too late to come over to trouble you. I had to go back to Boston between seven and eight o'clock the next morning, in order to get to a meeting in the Institute of Technology. I wish I might have had the pleasure of accepting your invitation. I saw your father on Monday, and told him of your kindness.

Very cordially yours,

November second, 1905.

The Rev. O. H. Bronson,

Simsbury, Conn.

My Dear Bronson:--

What was the inscription which President Eliot suggested for the Pitkin Tablet which was not adopted? and what is the Bible verse that was so appropriately put on the Tablet instead? I had these things in my mind, but I have forgotten them, and I want to recall them.

I had a nice note from Mrs. Pitkin this week, saying that they were expecting to start for California soon with her parents.

Very cordially yours,

Nolan

November second, 1905.

The Rev. John R. Vance,

Columbus Junction, Iowa.

My Dear Vance:--

I was glad to hear from you, and do not wonder at your concern for Brownlee. I have not seen him, I think, since our last Class Reunion in Princeton, where he was present. I shall send your letter to Dr. Bevard, who, I believe, has seen him since I have. Perhaps we may be able to see him. I am afraid when a man makes the associations which I judge Brownlee has, it will be a hard thing for him to break away from the habits which those associations entail.

With kind regards,

Very sincerely yours,

Nolan

November third, 1905,

Mr. Robert P. Wilder,

22 Warwick Lane,

London, E. C., England.

My Dear Wilder:-

Mr. Barclay and Mr. Felly called the other day and presented your note of introduction. I was very glad to meet them, and have given them letters to Princeton, Columbia, Harvard, Yale and the University of Pennsylvania.

I was glad to get the card giving your appointments for the fall and winter. I shall be glad to think of you. I often remember with gratitude all that you and Forman have meant to me. And I know that God is using you wherever you are.

Very affectionately yours,

Robert P. Wilder

November 4th, 1905.

The Rev. J. R. Miller, D. D.,
Witherspoon Building,
Philadelphia, Penna.

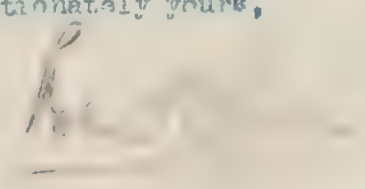
My Dear Dr. Miller:-

I have heard from Mr. Evans that I would be free on the evening of February 11th, when I have promised to speak at the University of Pennsylvania, and I should be glad to come and speak for you at St. Paul's Church that evening. Dr. Dana and Dr. Lee have both written cordially, inviting me to speak for them, but I have replied that for several years I had been hoping to have an evening for your church, and was expecting to take advantage of this opportunity and have the pleasure of going with you.

I enclose herewith some more material for Forward.

With reference to the series of articles for next year, did any of the suggestions which I made seem to you worth while?

Very affectionately yours,



November third, 1905.

Clarence N. Conway, Ensign U. S. Navy,
U. S. S. Colorado,
Care Department of Navy,
Washington, D. C.

Dear Mr. Conway:-

Mrs. Nevius of Chefoo, China, who is a very dear friend of mine, in a recent note to Mrs. Speer, told of her great interest in you, and asked me to send you a copy of a little book on the character of Christ. I have very much pleasure in sending the little book by this mail, and enclose with it, a little booklet entitled, "Things That Make a Man," that may be of interest to you, and that you may find some boy who might be helped by it. And if your ship is ever in New York, I should be very glad to have the pleasure of seeing you. I hope if you are ever back in Chefoo again, you will be sure to remember me warmly to Mrs. Nevius.

Very sincerely yours,

✓

November 6th, 1905.

Rev. C. B. McAfee,

Lafayette Ave. Presbyterian Church,

Brooklyn, New York.

My dear Doctor McAfee:--

Your kind note regarding the Chicago invitation, and enclosing the list of names of the little company which met at Princeton, received on Saturday, and I have telegraphed to Chicago that I will go. The little list of names I carry in my pocket with my prayer list.

Very cordially yours,

✓
November 6th, 1905.

Mr. Andrew Stevenson,
615 Monadnock Building,
Chicago, Ills.

My dear Mr. Stevenson:--

Your kind note was received on Saturday. Dr. McAfee wrote in the same vein supporting Mr. Sadler's cordial invitation, and I telegraphed to Mr. Sadler on Saturday that I would plan to go. I am afraid that I could not have arranged this if it had not been for some special circumstances which have just arisen making it practicable for me to go.

Looking forward with pleasure to seeing you, and counting on your earnest prayers in preparation for the meeting, I am

Your sincere friend,

✓ November 6th, 1905.

Mr. J. G. Turnbull,

1033 Walnut St., Philadelphia, Pa.

My dear Charlie:--

I enclose herewith a few more notes. If you want any of them for the Times will you please select them and let me have the others back.

I hope you have had a good trip in Canada
Very affectionately yours,

November 6th, 1905.

Rev. John Timothy Stone,
Baltimore, Maryland.

My dear John:--

Thank you very much for your note of sympathy. I am sending you copies of the statements giving all the information we have, and will put your name on our list to receive anything else that is issued. Surely, God means that out of such sacrifice of life, life shall spring.

Thank you for the little bit on "humility" on the calendar for October 22nd. I shall keep that.

With much love to Mrs. Stone and the children,

Very affectionately yours,

✓ →
November 6th, 1905.

Mr. F. H. Andrews,

Plainfield, New Jersey.

My dear Fred:--

I received a telegram on Saturday from Rev. Henry E. Jackson of Swathmore, Pennsylvania, dated at Readlands, California, in which he says that your suggestion about West Point greatly attracts him, "see letter". I think I wrote to you about Jackson. He is an unusually active, energetic man, and he has been in Readlands to consider a call to the church there. Before he went he asked me my opinion, and I told him that my impression of the church was good, but I had no knowledge of it, and I mentioned to him the work at West Point. It seems to me that it will be well worth while for you to arrange to see him if you can do so after he returns. He will be glad to come over here, I know, to meet you. I wish we could arrange for him to go up to visit the Point in case he strikes you as being the right man. If you think well of the idea after you have seen him, or before, if you prefer, we could probably write to a few people in or about Philadelphia and get their opinions.

Did you have a good Sunday up there?

Ever affectionately yours,

November 9th, 1965.

Rev. A. H. Witter,

Present "Lexile, Boston, Mass."

My dear Mr. Witter:--

I thank you heartily

For I would like to see you again. I
I could accept the invitation. I
can't wait for you. The 2nd of Dec. I
shall be away in Northern New Hampshire
the time of the meeting, or if I am not, others
will be away from the office and I

I appreciate very much your kind letter.

With cordial regards, I am,

1900 January 30.15.

November 25, 1905.

三子

Tremont Temple, Boston, Mass.

My dear Dr. Hain:-

I have received through
Mr. Witter your very kind invitation to ad-
dress the Annual Convention meeting at
Cottage City on the 28th. I feel very much that
I could go, and I would rejoice to do so if
I could, but I shall either be away in
Northern New Hampshire at that time, or shall
be detained here because of the absence of
others. Thanking you heartily for the invi-
tation, I am

Test also with

November 5th, 1905.

Rev. W. C. Robinson,

302 Walnut Place, Syracuse, N. Y.

My dear Cort:--

Thank you very much for your kind note and the trouble you have taken.

Very cordially yours,

November 8th, 1905.

Mr. D. W. Hull,

51 Kensington Avenue,

Jersey City, N. J.

Dear Mr. Hull:--

Your very kind and encouraging letter of Monday is just received. I am grateful if what I have written in Forward has been helpful to you, and am glad that it has resulted in your nephew's getting the books which I mentioned there. I want to thank you and Mrs. Hull for the helpfulness and the friendliness of your note.

Very cordially yours,

✓

November 8th, 1905.

Mr. Delavan L. Pierson,

44 East 23rd Street,

New York City.

My Dear Del:-

I hope to be able to send you within a few days, the article on Missionary Progress. There are some exceedingly interesting facts in it, and far more encouraging than I had anticipated. It is a job getting all the figures together, however, and I have just had to write eight or ten letters this morning to fill up blanks. Even if I do not get all the figures in, I shall send you the copy this week, and can fill in what few blanks there will be in the proofs. If you are over this way at all and in the building, just step in, and I will give it to you to save postage.

I have a batch of material from Oscar Peberts, who used to be one of our missionaries in Africa, and who is now working there as an engineer, which was his profession before we sent him out. He said I might send the material to you if you wanted to use any of it. If you do not care for it, he says to send it to Mr. Samuel Purviance, Smithfield, Ohio, for his "Evangelical Friend."

Very affectionately yours,

November 8th, 1905.

The Rev. John Hopkins Dennison,
8 Newbury Street,
Boston, Mass.

My Dear Dennison:-

I am very much obliged for your kind note regarding Dr. Gordon, and the influence he might exert as a speaker at Northfield. If he preaches as he writes in "The Christ of To-day," he would be a very valuable man there; but if he preaches as some of those who have heard him preach at times, I do not think he would.

Our hearts are all heavy at the great loss in China, but it is beautiful to see the spirit in which the Church is meeting it. The congregation that supported Mr. Pease offered to take two of his place, and one of his seminary friends has already offered himself as a replacement. Undoubtedly, there is a great deal of feeling in China about the Boxer Scandal, but we are earnestly hoping that there may be no further tragic expressions of it. And we have no reason to fear that there will be.

With kind regards from Mrs. Speer and myself.

November 9th, 1905.

Dr. E. Hitchcock,
Amherst, Mass.

My dear Dr. Hitchcock:--

I have been reading with the greatest interest and pleasure the syllabus of your Health Lectures which you so kindly sent. It is a perfect treasure house, and I shall borrow from it without restraint, and try to pass on to young men and boys the priceless counsel of your lectures. I wish that every student in the country could hear them, or, failing that, could read the syllabus.

With warm regard and admiration,

Very faithfully yours,

November 9th, 1905.

Rev. Isaac Pierson,
Wellesley Hills, Mass.

Dear Sir:--

I should be very glad to add my name to Dr. Mabie's. His statement is entirely satisfactory, and you can, if you wish, use my name with his under the endorsement which he has given.

Very sincerely yours,

November 9th, 1905.

Rev. Robert E. Farrier,

125 Park Place, Passaic, N. J.

My dear Mr. Farrier:--

I appreciate very much your kind letter of November first, but I think the prospect of my being able to accept your invitation is so dim, that it would be wrong to cherish the hope that I could do so. For years I have spent the last two or three weeks in June visiting the summer Student Conferences, and if I do not go on that tour next year it will probably be simply because obligations here prevent my going; and in that event, they would prevent also my having the pleasure of making the address for the Educational Society. I appreciate very much your cordial invitation, and am sorry that I cannot accept it.

Very faithfully yours.

✓
November 9th, 1905.

Mr. W. R. Moody,

East Northfield, Mass.

My dear Will:--

Your notes of the 1st, 2nd and 3rd have been received. After writing to you about Dr. Gordon, I was in Boston and made some inquiries about him which drew out judgments rather conflicting. One man told me that he was not at all evangelical. John Hopkins Dennison, whom I think you know, who was doubtful whether he would be the man for Northfield, said he was admirable for young men whose opinions were unsettled, and who needed to adjust themselves intellectually, but he doubted whether he would have a message for the Northfield company. To-day, however, I have a note from Dennison in which he says:

"Since speaking with you, I have talked with several persons and am inclined to change my opinion in reference to Dr. Gordon. Those who have heard him think he is extremely inspiring to young men, and that he would appeal to a large number of those who go to Northfield. From what they say I should not think you could get anyone who would do better."

I am glad that after reading my letter about Dr. Gordon you still found that you would have to form your own judgment. As soon as I begin giving you advice which renders that unnecessary, I shall realize that my advice is no use and I had better go out of the business.

I have received several nice letters regarding the Dayton Commencement, but have not yet replied. I hesitate very much to undertake the thing, even if I find that I am able to give the time to it.

I do not know the Day Dawn book. The letter which you sent and which I return seems like a sensible letter. I wish I were able to give you some information that would help you in answering.

I know Dr. Boyd who writes the China letter very well. He was formerly one of our missionaries, and the Refuge for the Insane, in which he is, is indirectly connected with our work. I think, if I were you, I would suggest his having a conference with Dr. Howard Agnew Johnston when he passes through Canton, as he will be doing next spring. I do not believe that there are any English text books which could be wisely translated into Chinese without modification. Books ought to be prepared more adapted to the Chinese mind. I do not like to see these people being fed with our Western intellectual food. They need the truth put in their own ways. Some of the books that I would suggest to Dr. Boyd are, Dr. Johnston's Studies for Personal Workers, Dr. Bosworth's Studies in the Life of Christ, and Studies in the Teaching of Christ and His Apostles.

I am glad to know that you are coming down soon. Mr. Buckley spoke to me the other evening of the plan of having an evening meeting of the Trustees. You must come out to Englewood and tell us all about your Labrador trip.

Very affectionately yours,

November 9th, 1905.

Mr. C. B. Goodwin,
Cor. 5th and Chestnut Sts.,
Philadelphia, Penn.

Dear Sir:--

I am entirely unwilling to accept
the proposition in your note of November 9th.
I do not believe in the morality of receiving
a gift of books on condition that the recip-
ient gives a personal endorsement of them.

Very truly yours,

953
1
November 9th, 1903.

Mrs. L. D. Hanscom,

32 Bedford Terrace, North Hampton, Mass.

My dear Mrs. Hanscom:--

I am very grateful for your kind note of the 27th, with the accompanying photograph of Mr. Bowen. Can you tell me the approximate date of the photograph, so I might know how old Mr. Bowen was at the time that it was taken.

I am very much obliged for the recollections of Mr. Bowen contained in your letter, and trust that others may come to you and that you may be willing to write them down; and I shall live in the hope that the invaluable letters which Mr. Bowen wrote to your husband may still be found. Is there not a possibility that they may not be destroyed?

Do you know of anyone else who would have recollections of Mr. Bowen and who might have letters from him?

Thanking you very much for your kindness, and with sincere regards to Miss Hanscom, I am

Very sincerely yours,

2
November 9th, 1905.

Rev. Frank J. ...

... ..

My dear Mr. Eckerason:--

Your very kind note of September 23rd, with the most striking poem by Mr. Bissonnette, is just received to-day. I had never seen it and am very grateful to you for it. Some of the lines are very strong.

I appreciate your kindness in thinking of me as much as I appreciate the poem.

Perhaps you would like to see some of the enclosed bits, of which I happen to have copies in my desk now.

We are very much interested in all of the work of your Board, almost as much as we are in our own work, and I trust some day within our lifetimes, that the relationships between our two churches may become even more intimate.

With kind regards,

Very sincerely yours,

(1 enclosure)

November 10th, 1905.

Mr. Chas. H. Anderson,
Huntington, Penn.

My dear Mr. Anderson:--

I greatly enjoyed your good letter of August 7th. I had hoped to have an opportunity of seeing you when I was at Huntington in October, but was there only for the evening and had no time to make any calls. In the absence of Mary and Margaret, I went down to take dinner with Mrs. Simpson, and then I had to come right back to New York on the train after the meeting of the Presbytery at which I spoke. It always does me good to get back to Huntington, although it seems less and less familiar as the years go by. So many of the old faces are gone.

With reference to my little loan, if you could arrange to pay it soon it would be a great convenience to me. I am altering and repairing my house and need to gather together every dollar assets in order to provide for it. I should be very much obliged, accordingly if you could send me back a check now.

I hope that you and Mrs. Anderson are both well, and with kind regards, I am

Your sincere friend,

November 8th, 1908.

Miss Esther L. Anderson,

145 Dearborn Street,

Chicago, Ills.

My Dear Miss Anderson:-

Your kind letter of September 27th has not been alone in being shoved under in my letter baskets. I am sorry I have been unable to reply before. Perhaps the following paragraph will serve your purpose:

One encouraging indication of the intelligent study of the Bible among young men and women is found in the great increase in such study. When I entered college twenty years ago, there were one thousand students enrolled in voluntary Bible Classes in connection with the college Associations. Ten years ago this number had grown to six thousand; and last year it was thirty thousand. These are the figures for the young men alone. Outside the colleges, the growth has been almost as striking, especially among boys and railroad men. I believe there never was a time when as many young men were studying the Bible as to-day. And this study is not theoretical or literary, but practical. Young men and young women are turning to the Bible now, not because they want to examine its literary structure, but because they feel it to be the great book of life. It tells them what they want to know about God and about their own lives, and it stimulates the spiritual imagination. It erects right standards of spiritual character. It furnishes the incentives and the restraints which they require in the struggle for character. It nourishes the prayer life. It supplies a body of noble and constant thought. It brings them into living contact with Jesus Christ, and thus furnishes them not only with the principles of the right life, but also with its power. I believe that these are the reasons why young men and young women are turning to the Bible. And that they are moved by these reasons shows the character of their own interest in the Bible. And this

Miss Anderson, Z.

movement has only begun, we may be sure, and is to grow to proportions far beyond our firmest faith.

Very cordially yours,

V

November 10th, 1905.

Rev. John R. Peters, D.D.,

225 West 99th St., New York City.

My dear Dr. Peters:--

I was very much pleased to receive this morning your kind note of yesterday, and would accept your invitation at once and with delight, if it were not that I have already other engagements for every Sunday from now until the middle of June. If I were free for December 10th I should be glad to go then.

Thanking you for your invitation and your kind words regarding the last meeting of the Churchman's Association, I am

Very sincerely yours,

November 10th, 1905.

Miss Helen K. Strain,

215 South 17th St., Philadelphia.

My dear Miss Strain:--

Your good letter in reply to mine of October 19th was received some days ago. I already knew the facts about the misunderstanding over Mr. Erdman, although I did not know that his sermons had made such a poor impression.

Since receiving your letter, I had a call from a business man in Kobe, Mr. Fraser, and had a long talk with him about the conditions there. He says that it will probably be well to wait a year or so before sending anyone there, in order to let the bad impression made by Mr. Wicher's leaving the church before the end of his agreement die away. He thinks by that time that the church will be ready and able to support a man, and earnestly hopes that there may be a committee representing the various Boards here which would cooperate in selecting the man, which would not, I am sure, underwrite his support, and I hope by that time there may be such a permanent Committee responsibly representing some of the leading denominations.

In a letter just received from Mr. Loomis yesterday, he says that the Union Church in Yokohama has voted to extend a hearty and unanimous call to the Rev. Walter Erdman, a cousin of the Mr. Erdman to whom you refer, to become the pastor for six months. Mr. Erdman is now with us here, having accepted, for the present at least, a position in our Home Department work, having in charge the development of missionary interest among the Sunday Schools. I do not know yet whether he has

heard yet from Yokohama.

Hoping to see you sometime during your stay at home, I am

Very cordially yours,

November 8th, 1905.

Mr. R. W. Frost,

Georgetown, Penna.

My dear Mr. Frost:--

Your very kind letter was received on Monday, and I gave it to Dr. Brown, that he might report it to the Board with some kind letters from some of the other Missionary Societies. We have been saddened at the loss to the work, and yet we firmly believe with you, that all such loss is gain; that lives so spent is not waste, but are like the seed which falls into the ground and dies, that it may not abide alone.

With warm regards.

Very affectionately yours,

November 10th, 1905.

Mr. A. Lee Wilson,

411 Hodge Hall,

Princeton, N. J.

My dear Mr. Wilson:--

I will be glad to go down for January 17th instead of January 10th.

I am glad to hear of the Memorial Service last Sunday. I wish I might have been present. We are getting many evidences of the deepened interest aroused by the sacrifice at Lien Chow.

Very cordially yours,

November 10th, 1905.

Rev. Jas. Ross, D. D.,

St. Andrews Manse, London, Ont.

My dear Dr. Ross:--

Your very kind letter of November 6th was received . I remember with great pleasure the Sunday in the American Presbyterian Church in Montreal, of which you were in charge at the time of my visit in 1903. I would gladly accept your invitation for some one of the Sundays next February if I could, but I have engagements for every Sunday in the month---at Andover, Mass., for the 4th, at Philadelphia, for the 11th, and Pottstown, Pa., for the 18th; and, indeed, I have engagements for all of my Sundays now until next June.

Very much regretting that I cannot go, I am

Very cordially yours,

2
November 12th, 1908.

Mr. G. F. F. F.

New Kensington, Penn.

My dear Mr. Fought:--

Your kind letter of November second has been received, and I appreciate your cordiality in renewing the invitation, but cannot hope to be able to go. My work here and my present engagements interfere as much as I can hope to do.

Very cordially yours,

November 10th, 1908.

Rev. Henry Pierce (Rev. H. P.),

18 West 122nd St., N.Y.C.

My dear Mr. Fought:--

I am very heartily for your address in so discharging the duty of the Holy Trinity Church record, with reference to "The Young Men's Association", and I would be very heartily for your association. I very much enjoyed the privilege of meeting you and speaking to the Association and it was a pleasure to see you.

Very cordially yours,

November 13th, 1905.

The
Rev. W. E. Richards, D. D.,

14 East 57th St., City.

My dear Dr. Richards:-

It was good of you to send me the kind note about the offering. I see that... Ward's report credits the church with an offering last year of \$6,525, and I am glad that there has been an advance. I hope that you may be further gifts and that either this year or next the offerings may total \$20,000.

It was so nice to be with you, both in the chapel and in your home. With much love I am, dear Dr. Richards, I am

Very affectionately yours,

November 14th, 1905.

The Rev. Tunis S. Hamlin, D. D.,

Washington, D. C.

My Dear Dr. Hamlin:-

I am glad to hear that the acknowledgment of the Draft to cover my travel expenses, and am very much obliged to you for your thoughtful kindness in the matter. I was very glad to hear of you, and was very glad to hear of the good attendance at the meeting.

With kind regards.

Very cordially yours,

✓
November third, 1905.

Mrs. John I. Nevius,

Chefoo, China.

My Dear Mrs. Nevius:-

Your good letter of May 25th was received at the close of June, also your kind note of the 30th, referring to "The Man Christ Jesus." I was very grateful for your kind and appreciative words. Your comments on the sentences in "The Man Christ Jesus" which were helpful to you, were I am sure as helpful to me as the original sentences could have been to you. But all that you write to Mrs. Speer and me is only a delight and a help to us.

Your letter of May 25th with reference to so many things in the work and conditions at Chefoo and at other locations in the Mission, was very suggestive, and I appreciated very much your kind thinking about our over-working. I have been writing to some of the missionaries on that very subject, and sent them a copy of something that Dr. Hayland wrote in his paper some weeks ago about Dr. Trumbull. Dr. Hayland was one of the best people, and one of the best ministers in the country. - a man of very brilliant and effective humor. Some years ago, a joke which he made at the New England Convention, spread all round the world. He was pouring reproach on the poverty and the attitude of the descendants of the "Mayflower" people, because, as he had come to the dinner, he had seen painted on rocks and fences all around the land, - "Plymouth Rock wants for Three Dollars!" I think he either took up a collection on the spot, or proposed to do so, making a fervent appeal to the sons of New England people to stop the punting of Plymouth Rock for a penny. He and Dr. Trumbull were very dear friends, and he used to exhort Dr. Trumbull to stop killing himself by overwork. As a matter of fact, Dr. Trumbull survived his wife a little while, and he greatly enjoyed the whimsical good sense of Dr. Hayland, expressed in the article in the Examiner, a copy of which I enclose for you.

Mrs. Nevius, 2.

We have been very much at a loss to know how to find out for whom your letter to Miss Burling was intended. Mrs. Speer gave it to me in the hope that I could find out about Miss Burling here. There is no person of that name known either to the Home or the Foreign Board. There is no one of that name known in the building here. We have sent out postal cards to all the Burlings in New York and Brooklyn, whose names are given in the City Directories, and the only Sara Burling we can hear of is a child, at 56 Brew Avenue, Union Course, Brooklyn, N. Y. Could there be any mistake about the address? We shall hold your letter to Miss Burling until we hear from you again.

I hope you will have received before this, a copy of the little book "Counsel to New Missionaries," in which your admirable paper is printed. We got the book up cheaply, so that we could give copies to the missionaries, and especially to all the new missionaries as they are appointed. But it is printed clearly, and is worth its weight in some valuable coin. I do not know where as much good counsel is packed into as small a space.

I have sent a copy of "The Man Christ Jesus" to the young man on the S. S. Colorado, whom you mentioned in one of your letters to Mrs. Speer. I am sending a little to him with it, to tell him that it is sent at your suggestion.

Mr. Guy, of the West Shantung Mission, has just been in, looking quite well, although he says he was afraid at Honolulu, that he was not going to live to reach the United States. We have word that Mr. Hicks is on his way home, with incipient tuberculosis; and now, to-day, our hearts are all burdened at the word from Canton, regarding the destruction of the Hanchow Station and the murder of all the missionaries there, except Mr. Backle and Miss Patterson. We shall await with intense interest the fuller information which will come by mail.

I have read recently a very interesting book by Professor Ramsay of Aberdeen, on "The Letters to the Seven Churches." I was almost startled when I read the Preface, and saw the expression there of a truth of which we who are in the missionary work are always thinking, namely, the relation of Christianity and its extension over the world to the great problem of history. The Preface begins:

Mrs. Nevius, 3.

"In the contact of East and West originates the movement of history. The historical position of Christianity cannot be rightly understood, except in its relation to this immemorial meeting and conflict. The present book is based on the view that Christianity is the religion which associates East and East in a higher range of thought than either can reach alone, and tends to substitute a peaceful union for the war into which the essential difference of Asiatic and European character too often leads the two continents. So profound is the difference, that in their meeting either war must result, or each of them must modify itself. There is no power except religion strong enough to modify both sufficiently to make a peaceful union possible; and there is no religion but Christianity which is wholly penetrated both with the European and with the Asiatic spirit - so penetrated that many are sensitive only to one or the other. Only a divine origin is competent to explain the perfect union of Eastern and Western thought in this religion."

Professor Ramsay then goes on to suggest that the only true bond between the East and the West will be found in a common acceptance of Christianity. That is one of the great thoughts in Professor Seelye's "Expansion of England," in the section on India. And it is one of the great thoughts in Meredith Townsend's "Asia and Europe," which deals, because of Mr. Townsend's long residence in India, largely with the relations of the West to the East as illustrated in India. Professor Seelye's outlook is hopeful, and Mr. Townsend's gloomy. It is a line of thought which it is fascinating to follow, and which furnishes, as it seems to me, one of the missionary arguments best adapted to appeal to the mind of our day. This new and complete alliance between Japan and Great Britain just consummated, which binds them together in the closest way, leads one to think very carefully over this great problem. There can be no real union between Great Britain and Japan except as they come to share the same ideals, not a social institution and political principle alone. There never yet has been a great wolding of nations without the fusing element of a common religious faith. And I like to think of our enterprise as constituting in this way the most vital and essential movement in the world - a movement indispensable to the fulfilment by the secular movement of its ends to the realization of any commercial brotherhood or "parliament of man." It is true that the noisy movements of the world ignore or sneer at us, but we know that we are doing the real work, and that all these other movements are as little eddies - mere incidental influences in comparison with ours.

I hope you are quite well, and had a restful summer. With much love from Mrs. Spear and myself.

Your sincere friend,

Mrs. Nevins, 4.

P. S.

I almost forgot to say what was foremost in my mind, namely, that I should welcome any further comments or criticisms or suggestions regarding "The Man Christ Jesus," or any of my books. I should value your judgment greatly, and if in any points they might be corrected or strengthened, I wish very much you would with unreserved freedom write about any such points as you may have noticed.

I am delighted that you have taken such an interest in the books.

We have had a beautiful fall, one of the most remarkably clear and pleasant seasons I think we have ever had. For six weeks now it has been almost perfect, with scarcely a rainy day. I have been truly glad of it, because I have been moving a house in Englewood, and fair weather was essential.

R. E. S.

November 13th, 1905.

The Board of Directors of the

New York Juvenile Asylum,

Cornison Bldg., New York City.

Gentlemen:—

I am very sorry that other engagements for the 17th, including the meeting of the Federation of Christian Churches, will make it impossible for me to get out of town that day to visit the Colony at Dobb's

Ferry.

Very sincerely yours,

✓
November 13th, 1905.

Mrs. S. J. Life,

Rye, New York.

My dear Mrs. Life:--

I had a call this morning from an old boyhood friend, Mr. John M. Holme, now connected with the Aspell Wholesale Grocery Company. He told me that he had called on you and that you had given him an order. I was very glad to hear this, because I am very much interested in seeing him succeed and I believe that he is a thoroughly honest man and that his customers will find it to their advantage to deal with him. I hope very much that his work for you may prove so satisfactory that you can use him and his firm even more largely.

Very cordially yours,

November 11th, 1905.

Mr. Henry R. Rosevear,

Young Men's Christian Association,

Louisville, Kentucky.

My dear Mr. Rosevear:--

I am late in answering your good letter received last month regarding the late Convention at Lexington in February. I am sorry to say that it will not be possible for me to accept your invitation. I cannot get away from New York before Monday, arriving at Nashville on Tuesday. If it were practicable I would be glad to come for the Sunday at your Convention. I hope you may have a good meeting, and be able to get some of the other delegates to the Student Volunteer Convention.

Very cordially yours,

✓
November 11th, 1905.

Mr. Fred H. Andrews,

Plainfield, N. J.

My Dear Fred:-

I have just received this morning the enclosed letter from Mr. Jackson. The more I think about him, the more I am inclined to believe that he would be a fine man for the Chaplaincy. Would you write to him, telling him when you could see him? I shall be away from New York on the 23rd and 24th and 25th, but shall be here the following week, on the 28th and 29th, which he mentions.

I have not yet answered my letter from Manier with reference to coming down to Annapolis, and I do not see how I am going to be able to work that in. I was sorry to see that story of the death of one of the cadets as the result of a fight. They need some Christianity in a mediaeval atmosphere like that.

Very affectionately yours,

November 11th, 1905.

Mr. F. H. Lougee,

3 West 29th St., City.

My dear Mr. Lougee:-

I am sorry that I cannot respond now to the call for aid for the Railroad work. I have got on my shoulders just now all that I can possibly carry.

I very much enjoyed the Detroit Conference, and wrote a little paragraph of impressions regarding it for George Herbert too. I do not know what he was going to print it in.

Very cordially yours,

November 11th, 1905.

The Rev. Henry R. Jackson,
Swarthmore, Penna.

My Dear Mr. Jackson:-

I received your telegram from Redlands, and this morning your letter. I was glad to hear from you and to know how the matter lay in your mind. I shall be away from New York on the 23rd and 24th, but shall be here on the 28th and 29th. I have sent your letter to Mr. Fred H. Andrews, who is as closely in touch with the students at Annapolis and West Point, as anyone, and have asked him to communicate with you as to when he could see you.

I do not know whether things have gone too far yet in the selection of a chaplain to make any suggestion practicable; but Mr. Andrews could easily find out; and through certain friends in Washington could bring the matter before the Secretary of War, and suggest it directly to General Mills of the Academy.

I return Barr's letter herewith. I do not know the Pacific Coast at all, but I believe it is a good and needy field. The Church has made a great mistake in not striking in at the outset in California, planting Christian institutions there, and laying the Christian spirit upon foundations of life on the Coast. I would not want to assent now to any views that depreciated the supreme importance of our molding the Coast in the strongest way, and carrying on the most aggressive kind of a spiritual movement there.

At the same time, I think that West Point is an almost unique field, and any man might well seize the opportunity which it presents of shaping lives which have the ordinary claim of human lives upon us, and also molding the United States Army and trying to turn its officers into a missionary force.

Very cordially yours,

November 11th, 1905.

The Rev. Sidney S. Conger,
Cooperstown, N. Y.

My Dear Shag:-

Your good letter of November 1st came some days ago. I was glad to hear of the Missionary Institute you had at Cooperstown, and to see the excellent report of work printed on the leaflet you enclosed.

I expect to speak in the Second Church of Newark, the last Sunday in the year, and I will have an opportunity then to size up the situation there. McDowell, whom you will remember at Princeton, a one-armed man, who did a strong work in Detroit, and is now at the West End of Newark, tells me that J. M. Cory is the leading man in the Second Church. I do not know the situation there well, but I understand it is a church that has a good endowment, so that it is care-free financially, but that it does not seem to adapt itself to the changed situation in which it finds itself; that it wishes to hold on to the old social prestige, while at the same time the only life of the church is to be found in reaching out after the people around it. This may not be a correct representation, but I have heard the situation described so. But I will know more after I have been there.

I do not think I know any of the men down there very well, but I know some of the men down there very well, and I am writing down to Stone, mentioning your name.

Do not hesitate to write at any time about any place or thing.

Very affectionately yours,

W. L.

November 11th, 1905.

The Rev. John Timothy Stone,

Brown Memorial House,

Baltimore, Md.

My Dear John:-

I have a friend who is pastor of the Presbyterian Church at Cooperstown, New York, who writes regarding the Second Church in Baltimore, asking whether I think he would be a good man for the church, and if so, what I could do anything on the matter. I do not know the church at all, but I know the man very well, and I am wondering whether he might not be a thoroughly good man for the Second Church. I have not seen him since he came to Baltimore. I do not know whether you know him or not, - the Rev. Sidney L. Conger. He is a straight, fine man; on that side I know him well. On the preaching side, of course, I do not know him at all. On that side, my knowledge of everybody is just hearsay. But I know people of the Second Church are looking for someone to preach. They might get Conger here as a supply, and ride him up. Or perhaps you may know him yourself.

Very affectionately yours,

7
November 11th, 1905.

The Rev. T. P. Stevenson, D. D.,

1211 South 47th Street,

Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Stevenson:-

I am very much obliged
for your kindness in sending me a copy of your
leaflet on the proposed anti-slavery ordinance.
I shall read it with interest, and shall be glad
to see any of the other publications which you
may think would be useful for me to read.

Very cordially yours,

November 17th, 1905.

The Rev. F. D. Wright,

Monticello, N. Y.

My Dear Mr. Wright:-

823
Thinking a very long time
of your note of the 11th. I am glad that
other appointments will prevent my coming
up for the meeting on Thursday, but I shall
be glad to make some use of the leaflet and
hope that there may be a good effect.
Thank you very much also for the statement
of the work done by your Committee, and I am
rejoiced that you have succeeded so well.

Very cordially yours,

November 11th, 1905.

The Rev. H. E. Bridgman,
14 Beacon Street,
Boston, Mass.

My Dear Mr. Bridgman:-

Your cordial note, with
its over-generous and over-kind clipping from the
Transcript, was received early this week. I am
very glad to hear of your address at the meeting in Boston
was of any service to the cause. I think whoever
had charge of the meeting did remarkably well in
gathering together so many young people on Satur-

day.

With warm regards,

Very sincerely yours,

My Dear Sir,

I enclose herewith the article for the Review. There are
some blanks in it, but these can be filled out in the next edition.
to send me the proof sheets when they are ready, that I may look them
and insert these figures that are now lacking.

2
November 11th, 1905.

Mr. Fleming H. Revell,

158 Fifth Avenue,

New York City.

My Dear Mr. Revell:-

Your note, enclosing Mr.

Gordon's letter, is received. I shall write
to Mr. McDowell, reporting the whole case to
him, and asking him for any information he
may have or be able to give, and I shall then
report it through you to Mr. Gordon.

Very sincerely yours,

2

November 15th, 1905.

Wm. A. Siler,

21000' New Jersey.

Dear Sir:-

Mr. Fischen may have spoken to you regarding an estimate for a heating plant for my house on the corner of Thurst and Brighton Sts., which is the house which I moved from Mr. Jones' property. I wish you could give me an estimate on each of the following:

1. The cost of putting in a Thatcher furnace, the largest size, with an extension of some of the flues to the third floor which at present has no heat, so as to heat four rooms there.

2. Or a hot water plant for heating the whole house, running the pipes as far as possible in the present flue spaces in the walls.

3. A combination Pease hot water and-hot air system, using all the present flues for hot air, and putting in radiators on the third floor, five rooms on the second floor, and in the hall, study and dining room on the first floor. It would require the largest size, No. 320, I believe, the furnace alone costing \$350 and agent's commission.

If you would prefer to go over the house with me before making estimates, I shall be glad to do so this ^{coming} Saturday afternoon.

Very sincerely yours,

November 14th, 1905

Mr. John L. Cole,

310 Ashland Block,

Chicago, Ills.

Dear Mr. Cole:-

I thank you and Mrs. Cole

heartily for your kind invitation to me to

stay with you when I am in Chicago next week.

I shall be in Chicago only for the night of the

23rd, and hesitate to make any appointments without

consulting Mr. Gaudier, through whom the invitation

came, and who may be making other plans for me. I

am writing to him telling him of your kind invita-

tion.

Very sincerely yours,

138

November 14th, 1905.

Mrs. J. S. Katzenbach,

138 North Clinton Avenue,

Trenton, N. J.

My Dear Mrs. Katzenbach:-

I am sending you by this mail, some of our Syria
bulletins and a copy of Dr. Brown's Report on his visit to the Syria Mission. I
think these will give you a good deal of material for the meeting on December
1st, but if you would like any more, or would like information on any other
points, please let me know.

I am delighted to hear of Frank's daughter. Would you please give him
my heartiest congratulations?

With warm regards to Mr. Katzenbach and yourself.

Your sincere friend,

2
November 11, 1901.

Mr. J. H. Groves,

Phillips Brooks House,

Cambridge, Mass.

My dear Mr. Groves:--

I was glad to get your kind letter this morning with the copy of the late Harvard Missionary report. I am very much obliged for this. I should rejoice if you would put my name on your mailing list to receive any bulletins or papers that you send out from the mission.

I was glad to see the list of missionaries. I did not know there were so many Harvard men on the foreign field. R. P. Allen is not one of our missionaries, so that I am afraid we do not have a Harvard man on our staff. The Syrian Protestant College is affiliated with us in a way, so that perhaps we might claim an interest in Dornan.

R. P. Alexander is a Methodist missionary in Japan, and H. P. Bennett a Congregational missionary there. Bennett just married one of our finest young women in Japan.

I appreciate very much your kind invitation to come back to Harvard some time this year, and I should be glad to do so if it proves practicable, but it is not possible for me to promise now to go.

Very cordially yours,

2

Nov 10, 1901.

Mr. T. Augustine Dwyer,
541 Lexington Ave., New York City.

My dear Mr. Dwyer:--

Your very kind and encouraging letter of Monday is just received. I am very grateful if the meeting at the Young Men's Christian Association on Sunday afternoon brought you any help and strength and I should be glad to see you at any time and be of any service to you that I could. I am in my office usually from a little after nine A. M. until a little before five in the evening. I have to be away part of next week to Chicago, but after that shall be here continuously.

Very cordially yours,

Nov. 10,

Mr. Daniel Miller,
Reading, Penn.

Dear Sir:--

I have not written any book of the title "Jesus Only", and do not remember ever having made an address with that title. Possibly the reference is to "The New Christ Jesus", or "Remember Jesus Christ", two other books published by Revell.

Very truly yours,

October 14-1, 1905.

Mr. C. W. Sadler,

433 Dearborn Building,

Chicago, Ills.

My Dear Mr. Sadler:-

Your kind note, and a similar kind word of welcome from Mr. Stevenson, has been received. I am looking forward with much pleasure to the proposed meetings.

I have a kind letter from Mr. John A. Cole, whose offices are at 310 Ashland Block, Chicago, inviting me to stay at his house while I am in Chicago. He says the meetings are to be held at the Hyde Park Church, which is nearby. I could not feel I could accept any invitation without consulting you, as I did not know what your plans might be. I shall be in Chicago, of course, only for the one night, and there will be very little time to be in anyone's home. But I should be glad to go to Mr. Cole's or to some hotel, just as you think best.

Very cordially yours,

November 16th, 1905.

Mr. Ralph Wells,

1642 Connecticut Ave., Washington, D. C.

My dear Mr. Wells:--

I hasten to reply with gladness to your kind note of yesterday. I rejoice in the privilege of being able to help you. I have thought very much about your letter since it came this morning, and I think I know just the needs for which you would like to have the five thousand dollars applied.

1. To work ~~in~~ among the Kurdish Mountains for the Nestorians and Kurds -- \$1,000. I have a friend there who I think is one of the great missionary heroes. He blows no trumpets and works in obscurity, but year in and year out he goes up and down among the mountains, carrying his life in his hands, and persuading the people to give their hearts to the Savior. He has had remarkable success in the little snow bound, dirty mountain villages in the winter, where all the villagers crowd in around him and their hearts melt before his loving preaching of the Lord Jesus. There is no man on the mission field to whom my heart goes out more than to Mr. McDowell, and if I were in your place I would want no greater privilege than to help him in this work. He has a number of native preachers and teachers working with him.

2. For work in the interior of Brazil, to the west of Bahia, and far up into the inland state of Goyaz -- \$1,000. I have another friend working in this field who has just come back to the coast after a long journey alone lasting for months through the interior. He is another man with a heart of love who travels up and down rivers and across the wide prairies alone, and yet not alone. There are associated with him

3.

I hope very much that I have thought of the things that will meet with your approval. If not, I will be glad to hear of others and I can readily suggest others.

There is a great need for help now, and the Board will have to have an increase of receipts between now and May first. There should be \$120,000 over the receipts for the corresponding period last year in order to enable them to go through the year without deficit.

I am sending you a little book made up of letters by some of our older missionaries, in which I think you will be interested.

Looking forward with great pleasure to hearing from you again,

I am

Your sincere friend,

Wm. L. Schuyler

(Enclosures)

71

November 16th, 1905.

The Rev. Charles R. Erdman,
Germantown, Penn.

My dear Charlie:--

Stone told me yesterday of his conversation or correspondence with you regarding Adam of Brooklyn as a good man for your church in view of your removal to Princeton. First of all, I want to wish you God-speed in your new work. You know how fervently some of us have been hoping that things might be advanced at Princeton, and now we shall pray that God may richly use you there. I can appreciate the regret of the church in giving you up, but I think there is a greater need and a stronger call at Princeton.

As I told Stone, I thought his suggestion of Adam for your church was just about ideal. I do not know a man whom I would commend with more heartiness for just this field; or a field for which I think he would be better fitted. As a man, he is a son of men and specially intellectual gifts, thoroughly theological, with supreme devotion to Christ and his cross, and of the most delightful personal qualities. Stone and I know him well through having spent a summer with him up in Northern New Hampshire, and I have been more or less acquainted with him ever since he came to the High School some years ago. I think it would be a fine thing if the church should call him. He is genuine through and through with no self seeking, with no unreality or frivolity, but with a true mind and a true heart. I have been the liberty of writing to Mr. Sheppard and Mr. Pierce expressing this conviction as strongly as I can.

Very affectionately,
W. L. G.

✓

November 16th, 1905.

Dr. Catharine B. C. Scott,

The Mutual Savings Bank Bldg.,

San Francisco, California.

My dear Dr. Scott:--

I was delighted to get yesterday your good letter of November 10th with its invaluable incidents and suggestions. I have seen Dr. Plumb and had some correspondence with him, and have received through him a fine letter from Dr. David Cochran. He is a son of the family, and was born at Ashurst and his work in Munta Academy, where he is still remembered. I wonder if it would be possible to find any people up there who would recall him and would be able to give me some information. Dr. Cochran says that when your father returned to arrange for the education of his children, he temporarily filled a pulpit with such satisfaction that he was called to the pastorate. Do you remember where this was, and could we get information from any of the people there who would remember him? I should like to know something of the family history on your father's side. Dr. Plumb, of course, will be able to help on your mother's side, and I am asking him for everything that he can give.

Mr. Clement of Buffalo was here just a few days ago. You know, doubtless, of his earnest desire to have little Joseph come to live in his home. He desires to give him the best education that can be provided. I wrote to Clement in regard to this. He is a very kind man, and I trust the hope that they might feel surprised to accept of Mr. Clement's most generous offer. I presume that Mrs. Cochran will either or

1.

and in London, and that the family home is New York, so that the family should be able to take care of Joseph and Lilly should they be in need of it. The fact that Joseph is a student at the University of Chicago, and the fact that he has four fine boys of his own, are all good reasons, it seems to me, for letting him take Joseph, unless Cleamant has strong reasons for the contrary.

Will you not keep the biography constantly in mind, and whenever, from time to time, any other recollections come to you, write them down and send them to me.

With kind regards,

Very cordially yours,

P. S.--Could you fill out at all, with more fulness, facts regarding your father's ancestry? What was the ship on which Mrs. Samuel Cochran's mother was coming to New York and what was the date? Could we get any facts regarding your father's college life? What do you remember of your childhood in Virginia and of your father and mother, and won't you tell me as much as possible of the history of the family? What were the movements of the family thereafter?

Mr. Fred H. Andrews,
Plainfield, N. J.

Dear Sir:--

I enclose another note from Jackson. I have told him that I have to go to Chicago next week, but should be here on the 21st and 22nd. Could you and he come and lunch with me either of those days? If you could, won't you just drop Jay a note so that he may have word as soon as possible, fixing the day and saving me word. If you cannot do this, you could see Jackson any time next week yourself, just ask him to come over and see you. What

Very respectfully,
J. H. ...

(Enclosure.)

November 1903.

Mr. John Bower,

42 Atlantic St., Jersey City, N. J.

Dear Sir:--

Your letter of the 27th inst. has been received. I have been sorry to hear that you have been so long in the hospital. I was sorry it was not possible for me to make any contribution to your address. I was sorry it was not possible for me to make any contribution

Very respectfully,
J. H. ...

✓
November 16th, 1905.

Dr. Albert F. Plumb, D. D.,

56 Townsend St., Roxbury, Mass.

My dear Dr. Plumb:--

... in addition to Mr. David ... sketch of Dr. ... Father. Dr. Catharine Scott, of San Francisco, ... note regarding Mr. Joseph Plumb:

"Mr Joseph Plumb, father of Mrs. Joseph Gallay Cochran, was a direct descendant of a Plumb ... 'the yellow flower' ... Joseph G. Cochran, was a ... lived in Fredonia, New York, near Utica, then in Gowanda (called Lodi in earlier years). He died at Cattaraugus, N. Y.

He was always a member in the Presbyterian Church, a strong and ... cause of temperance. He owned much land, ... was always imposed upon the purchaser, ... asking or selling any spirituous liquor ... would be forfeited to the wife, so that the man could not ... it or sell it.

One man named ... carried on a brewery on his land, ... Joseph Plumb, directly opposite Mr. ... was contested in the courts, and after a long ... the case was won by Mr. Joseph Plumb."

... incidents regarding your father and your sister ... not some account of the family ... life and work we shall have a great deal of information in the letters and reports. But I am anxious to get ... incidents, both of those years and of his earlier years, and ... regarding his ancestry which will throw light on his character.

Dr. Scott says that Mrs. Joseph Plumb was of Welsh origin.

I would like to know the dates of Mr. Joseph Plumb's birth and death, and the same facts regarding your mother.

✓
Mrs. S. J. Life,

Rye, New York.

My dear Mrs. Life:--

Your very kind note has just come. I would not think of asking for anything more in the case of Holmes than that he be given an opportunity to bid on your supplies.

I appreciate thoroughly your kind and considerate judgment of Miss Miller. I had several talks with her, and the impression she has made on me exactly accords with the judgment you have expressed. She seems to me to be a good and kind hearted woman, lacking in happy adaptability and cheerful activity. She is a person who is not bent definitely upon some result above the elements of difficulty and discord which abound sufficiently in the world to fill all the thought of anyone who is not bent definitely upon some result.

With kind regards from Mrs. Spear and myself,

Very cordially yours,

Mr. William R. Stocking,

100 North 1st St.,

St. Louis, Mo.

Your very kind note is just received. I appreciate your cordial invitation, but am sorry to have to say that there was a misunderstanding as to the date for my visit to Williamstown and I shall not be there on December 5th. I think Dr. Gilbert Hall is to preach that day. I am not sure that I will be able to go at all this year, but if I do it will be next spring.

With kind regards to you and your family,

Very sincerely yours,

Mr. Raymond S. Rogers,

Jefferson University,

St. Louis, Mo.

Mr. Rogers:--

I am sorry to have been

unable to answer your letter more promptly.

I am sorry to hear that you are not

able to come to Williamstown this year.

I shall be glad to hear of your return next spring.

I am, very respectfully,

Yours very truly,

Wm. R. Stocking.

Very of

✓
November 15th, 1907.

The Rev. James M. Gray, D. D.,

The Moody Bible Institute, Chicago, Ills.

My dear Dr. Gray:--

Your kind note of the 14th is just received. I expect to be in Chicago next Thursday evening and all day Friday, but I am already down to speak three or four times on Friday afternoon and evening, and I shall not be able to stay over Saturday, as I have to leave late Friday night in order to keep appointments in the east on Sunday. If I find on reaching Chicago on Thursday that I could come to the Institute for some hour Friday morning, I will telephone to you.

Very cordially yours,

Wm. A. Rorer

✓

My dear Mr. Jackson:

My dear Mr. Jackson:

My dear Jackson:--

Our Board meets on Monday the 20th, and I shall be crowded up on the 21st; the following day I leave to leave for Chicago. But I could easily make time on the 21st or 22nd for a little talk, in case you come over then. It is much more important, however, that you should see Mr. Andrews, to whom I sent your previous letter and to whom I am sending this letter suggesting that perhaps we might lunch together on the 21st or 22nd. In case he can do this I will ask him to send word directly to you.

Very cordially yours,

W. D. Howells

November 17th, 1905.

Mrs. J. W. Cushman,

39 East 27th Street,

New York City.

My Dear Vera:-

I have tried to telephone to you, but the wires have all been busy. Emma gave me your very kind invitation and Jim's, to come and dine with you on Sunday at one o'clock.

I shall not be in town, however, until the afternoon meeting, and shall be at home in Anglemood for dinner. If I were to be in town I would come with delight.

Thanking you and Jim heartily, and hoping soon to see you again,

Ever your sincere friend,

Robert E. Speer

November 14th, 1905.

The Rev. George Grenville Merrill,

214 Porter Avenue,

Buffalo, N. Y.

My Dear George:-

I was very glad to get your letter of the 8th, and rejoice that you are coming down in December. By all means you must come out and spend at least one night with us. I hope that Mrs. Merrill will be with you.

I see that my younger brother has been appointed Secretary to the Mayor, and was glad to read the very kindly references to him in the Buffalo papers.

It will be a great joy to see you again, and with a great deal of love, I am,

Ever your friend,

Robert E. Speer

November 14th, 1905.

The Rev. J. Ross Stevenson, D. D.,
19 East 66th Street,
New York City.

My Dear Dr. Stevenson:-

Your kind note of yesterday is just received. We shall be so eager to dip into that apple barrel that we won't be able to pay any attention to freight charges. I got the bill of shipment the other day. It was very good of you, indeed, to think of us so generously.

I am glad that Elliott will have a new barrel to get into now; the last barrel was filled with tar. He and Dr. Sailer's small boy went off on Sunday afternoon, in their best clothes, and painted themselves all over out of the tar barrel, and also decorated the house.

I hope you found the material on Church Union and Comity, which I gave you, the sort of think that was helpful.

Very cordially yours,

Robert D. Sailer
D.

✓
November 14th, 1905.

The Rev. Arthur Cleveland Clark,
Manlius, New York.

My Dear Mr. Clark:-

I appreciate very much your kind invitation which is just received. I should rejoice to come to Manlius if I could, but there is no possibility of my coming in the near future. I have no present engagements in or near Syracuse, and I have so many other appointments elsewhere that I fear there is little prospect of my being in Syracuse again this winter. If some time in the future I find I can come to Manlius, it will be a real pleasure to do so.

Very sincerely yours,

H. F. Spemann

✓
Herrn Franz Spemann,

Stuttgart, Germany.

My Dear Herrn Spemann:-

I appreciated very much your kindness in sending me the announcement of your betrothal. I rejoice with you, and hasten to send my heartiest congratulations.

I hope you will come over to our country some time. Looking forward with pleasure to meeting you in the future, either here or in your own land, I am,

Very cordially yours,

November 14th, 1905.

✓
November 14th, 1905.

The Registrar,

Union Theological Seminary,

700 Park Avenue, N. Y. City.

Dear Sir:-

Can you tell me whether any of the classmates of the Rev. George Bowen, who was graduated I think in the Class of 1847 from the Seminary, are still living?

May I ask whether there is any material of any sort in the archives of the Seminary regarding Mr. Bowen, either in his student days or later life? Could there be any letters from him or regarding him?

I ask because I am gathering all the biographical material, and have in send now all that passed into the possession of Mr. Bowen's illustrated newspaper in India, and all that was in the possession of the family here at home.

Very sincerely yours,

W. B. E. D.

✓
November 18th, 1905.

Mr. Louis A. Bowman,
153 LaSalle Street,
Chicago, Ills.

My Dear Mr. Bowman:-

Your kind letter of the 15th is just received. I shall be very glad to try to carry out my part in your program.

I like the subjects you have suggested very much, although one or two I think I should have phrased a little differently; but as you probably are working out a scheme for the whole time, I shall be very happy to fit in with just the subjects you have suggested.

I shall come out on the Lake Shore train leaving New York at 5-30, reaching Chicago at four o'clock the next afternoon, if this will be satisfactory. I had hoped when I got Mr. Sudler's letter and he spoke of my being able to get back for Sunday, that there was some train by which I could leave Chicago in the evening after the meeting, and get to Philadelphia the next evening. I regret very much that this seems impossible, so far as I can make out. The best I can do is to leave Chicago on the Pennsylvania at 9-30, and get to Philadelphia Sunday morning. I do not like to do this, preferring not to travel on Sunday at all; and if there is any way by which I can get back to Philadelphia Saturday evening of which you know, I wish you would let me know. In case there is not, it will be possible, will it not, for me to get from the church where the meeting is held, to the station, after my address in time for the 9-30 train?

Earnestly trusting and praying that we may have meetings filled with the spirit of pray and of God, I am,

Frederick

2

November 20th, 1905.

The Rev. H. P. Beach,

3 West 29th St., City.

My dear Mr. Beach:--

I am sorry to have been slow in sending you the article on "Why send Delegations", but I have simply been unable to write it. This morning, however, I dictated the enclosed which you are at liberty to use if you wish. Do not hesitate, however, to write something yourself to take its place, or otherwise to cover the ground.

Very cordially yours,

Robert K. F. Jones

✓ November 24th, 1905.

Rev. G. B. Bartholomew,

Chicago, Ill.

Dear Mr. Bartholomew:

Your kind invitation

of the 17th is just received. I wish I could accept your invitation, but there is no possibility of my being able to go to Oberlin for the Day of Prayer. I trust that you may have a good winter's work, and that it may be fruitful in the calling of many men to Christ.

Very sincerely yours,

✓ November 20th, 1905.

Rev. G. B. Robinson,

10 Warren's Block, Chicago, Ill.

My dear Mr. Robinson:

Your kind note

inviting me to come to the meeting of the Board of the Northwest next Friday morning received. I will be glad to go, but that will not interfere with your meeting, and I shall look forward with great pleasure to going.

Very cordially yours,

✓
November 20th, 1905.

Mr. Andrew Stevenson,
950 First National Bank Bldg.,
Chicago, Illinois.

My dear Mr. Stevenson:--

Your very kind note is just received. I had a good letter from Mr. Bauman the other day, and I have written him telling him that his suggestions are entirely acceptable and that I would be glad to do whatever I could to fill my part in the program.

I am sorry to have to say that I got a little confused over the Railroad arrangements, assuming from Mr. Sudler's first letter that it would be possible for me to get back here Saturday evening, and if there is any way by which I could get off from Chicago in order to reach Philadelphia Saturday night, I should like to do it. I do not see any, though, in the time tables that I have consulted. I have to spend Sunday in Pottstown, Penn., and I, of course, want to try to get there Saturday night. If I could get to Philadelphia at 10 or 11 o'clock in the evening, that would enable me to do it. But, as far as I can make out, the best I can do is to catch the 9.30 train Friday evening on the Pennsylvania.

With warm regards,

Your sincere friend,

✓
November 25th, 1905

Mr. F. B. Hopkins,
Pottstown, Penn.

My dear Mr. Hopkins:--

I have just received the programme of the district Convention at Pottstown at the end of this week. I am sorry it will not be possible for me to be present Saturday evening. I have to be in Chicago this week and cannot possibly get back in time for the Saturday evening meeting. I did not have in mind, when I made the Chicago arrangement, that I was to do more than to speak at the Sunday afternoon meeting, and on looking up the correspondence I see that the matter was not definitely settled as to just what I could do. I earnestly trust that my failure to be present Saturday evening will not inconvenience you at all. I hope you will have a thoroughly good meeting.

Very cordially yours,

November 20th, 1876.

The Rev. W. R. Reynolds,
Chatfield, Minn.

My dear Mr. Reynolds:--

Your kind note of the 17th is just received. I do expect to be in Chicago this week for one or two days, but shall have to come back to New York immediately, and cannot have the pleasure of going up to Chatfield as I should be glad to do if it were possible.

Very cordially yours,

November 18th, 1905.

The Rev. S. M. Zwemer, D. D.,
Holland, Michigan.

My Dear Sir:-

I am sorry I shall not be able to

give any help on Monday afternoon, December 14th.
We have a Board meeting that day. I could give
some time in the morning, but it would suit me
better to meet with you and Fott on Saturday
morning, December second, though I will come
Monday morning ~~evening~~ to your Rooms, or be
able to see you here in my office, if that will
suit you and Fott best.

Very respectfully yours,

✓

November 24th, 1905.

Mr. Charles C. Trumbull,
1007 Talm 15 St., Philadelphia, Penn.

My dear Sir:-

Your letter of the 14th has been received.

I am sorry I could not answer it
that day, but I am glad to hear of your opportunity to say that of course I shall be happy
to try to write the article you wish, although
to do it according to the plan you suggest.
I think.

I am glad to hear that you are so busy,
and hope that you will keep the brakes in
working operation.

Very affectionately yours,

✓

November 21st, 1905.

Mr. Frank White,

184 LaSalle Street,

Chicago, Ills.

My Dear Mr. White:-

Your very kind note of the 18th is just received. I
expect to reach Chicago on Thursday at four o'clock on the Lake Shore ^{Road}, and shall
be very glad to make use of the room which you have reserved for me at the
Chicago Beach Hotel.

Looking forward with great pleasure to seeing you, I am,

Very cordially yours,

W. D. Howells

Englewood, New Jersey.

November 22nd, 1905.

Mr. J. F. Fitschen,

Englewood, New Jersey.

Dear Mr. Fitschen:--

I have to go to Chicago to-day and shall not be back until Monday.

Graham is figuring upon a hot air system, and in case I decide to put that in, there will be no need of a cold air box. In that case, the space which would be consumed by the hot air box in the foundation ought to be filled in. Could Mr. Pappin leave that to the last in finishing the foundation?

Has Mr. Brucker taken over enough of the stone from the old foundation to make gate posts and posts for the outside corners of the property? You remember I asked to have the stone taken out before selling the rest to Mr. Pappin.

By the time I get back next Monday I hope to have all the heating estimates in and to be able to decide that matter at once. I hope that Bloomer will have his plumbing estimate ready by that time.

I can give you then a revised list of the changes which should be made in the house, although I think you and Mrs. Spear went over the house together and spoke about them all.

Very sincerely yours,

W. J. F.

November 21st, 1905.

Professor John Heigs,

Pottstown, Penna.

My Dear Professor Heigs:-

I have got in a snarl over some appointments in Chicago, from which I thought I was going to be able to get back to Philadelphia on Saturday night. I find I shall not be able to get back until early Sunday morning, so that I shall come out to Pottstown on the Sunday morning train, reaching Pottstown at 10-20. I do not like to get over on Sunday morning, but there is no help for it this time.

Very affectionately yours,

November 22nd, 1905.

Mr. John A. Cole,
Chicago, Ills.

My dear Mr. Cole:--

I have just received a telegram from Mrs. McCormick reminding me of her expectation that I was to stay with her the next time I came to Chicago, and saying that she had arranged with Mr. Andrew Stevenson for me to do so at this time. As I wrote you, Mr. White had written to me that I was to stay at the Chicago Beach Hotel. I wanted to write to you at once about the matter, so in case Mr. Stevenson has arranged for my going to Mrs. McCormick you might understand my doing so.

Thanking you again for your very kind invitation, I am

Very faithfully yours,

November 22nd, 1905.

The Rev. John Baneroff Devins, D.D.,

156 Fifth Ave., New York City.

My dear Dr. Devins:--

I do not know whether you were to have charge of the editing of the report of the Federation Conference or not. If you are, and you intend to make any use of my address on Sunday afternoon, would you be willing to let me revise it and I would return it promptly. If this is not in your hands, will you tell me who would have charge of it?

Very cordially yours,

November 22nd, 1905.

Mr. G. A. Warburton,

361 Madison Ave., City.

My dear George:--

I do not know whether there are any copies of my little pamphlet on Betting and Gambling at 3 West 29th St. or not. They used to have a number there. I have none. The little book was reprinted, however as one chapter in "A Young Man's Questions." I have no copy of this either here, but they have it at 3 West 29th St., or Dr. Houghton can get it from Revell's. I doubt, however, whether it goes into the thing as he would like. There must be some books on the subject, although I do not know of any. I have seen many scattered articles. If there is any book on the subject, Dr. Houghton could find out what it is from the Congressional Library at Washington; or you could call up the New York Library or the Columbia University Library and find out, or Dr. Robert Ellis Thompson, 1031 Walnut St., Philadelphia, would be pretty sure to know.

Very cordially yours,

288
✓
November 21st, 1905.

Dr. Edward H. Hume,
The Yale Mission,
Chensha, Hunan, China.

My Dear Mr. Hume:-

It has been a long while since I received your letter, but I have been at a loss to know what to do. I had many talks with your father about Robert before he took up work with the Baldwin Locomotive Works in Philadelphia, and it was only a pleasure to be of any service to him I could. When the trouble came I shrank from doing anything, although Dr. Brown, with whose sons Robert had lived in Philadelphia, and I inquired directly as to whether there was anything that we could do. I knew your father knew that anything I could do I would, and I did not want to intrude in any way that might by any possibility wound his feelings.

I have rather waited to see whether anything developed that would put me in the way of advising you, but nothing has, and it seemed to me, accordingly, that the best thing was just to write candidly to John, which I have done, and enclose a copy of my note.

So far as I have any knowledge there is nothing of which I have heard that would seem to make it your duty to come home, but of course my knowledge is slight, and John will know. I was tempted very much after receiving your letter to seek an interview with your father, but as far as I could hear everything had been done that could be done, and not knowing whether I could be helpful to him, I shrank from the possibility of intruding. If John's reply warrants my writing to your father to try to see him, I shall be glad to do so, and in that case I shall report to you.

It was a great pleasure to hear from you, and I appreciated deeply the fact of your writing to me, and the tone in which you have written. I have a

Mr. Hume, 2.

real love for your father, and I always thought of you and your brothers with feelings of special friendship, and I hope you will let me be of any time of any service that I can to you.

With kind regards,

Very sincerely yours,

November 22nd, 1905.

Mr. John C. Hume,

Care Brown Brothers,

59 Wall Street, N. Y. City.

My Dear Mr. Hume:-

I received some time ago a letter from your brother Edward, who knew of my interest in your brother Robert and my deep friendship for your father, asking whether I thought it would be an advantage or was in any sense his duty to come back to this country. I have unduly delayed answering, because I did not know what to say in reply, and I have hesitated to write to you. But I am writing to Edward that I have written to you, that I do not know what to advise, but am asking you to express your judgment to him. You know Edward, of course, infinitely better than I do, and could write to him so that he would come home at once if you thought it was his duty and your father needed him.

I hope I do not need to say what still I can say with sincerity, that if ever at any time I can be of any service to you or to your father, I hope you will let me know.

Very cordially yours,

November 22nd, 1905.

The Rev. J. V. Wemple,

163 First Street,

Albany, N. Y.

My Dear Mr. Wemple:-

Your kind note of the 13th

was received last week. May is pretty far away, and I hesitate to make any definite engagement for week days so far in advance, but I shall be glad to endeavor to hold May ninth for the Convention in Albany, and if you will write to me some time in the latter part of the winter regarding it, I shall be glad to tell then definitely whether it will be possible for me to

come.

Very cordially yours,

November 22nd, 1905.

Mr. John J. Mement,

Hartford, Conn.

My Dear Mr. Mement:-

I have engagements for all of my Sundays until June, and cannot, I am sorry to say, come to the Conference you propose to hold in Hartford next spring, for either Sunday April 1st or the preceding Saturday.

Very cordially yours,

New York, N. Y., 1905.

Miss Felo A. Forbes,

Waverly Cliff Manor,

New York.

My Dear Miss Forbes:-

I received some days ago
your very kind note inviting me to come up to
speak at your prayer meeting, on January the
eleventh. I have to go away now for a few
days, but I shall hope to let you know some
time in the near future whether it will be
possible for me to come.

Very cordially yours,

Wm. E. Glendon

November 28th, 1905.

The Rev. Alfred N. Seal, Ph. D.,

Gerard College, Philadelphia, Pa.

My dear Dr. Seal:--

I expect to be in Philadelphia on February the 11th, and have promised to speak in the evening at St. Paul's church. My first engagement in going, however, is at the University, and it may be that Mr. Evans may have some work there that he will want me to do in the afternoon. Will you see him about it. If he has no appointment for me for the afternoon, I shall be glad to speak to the boys at Gerard College then.

Very cordially yours,

November 28th, 1905.

Mr. Charles E. Mack,

3 West 28th St., City.

Dear Sir:--

Your note of November 23rd has been received. The work which will need to be done on my house at Englewood, however, is not extensive, and I shall arrange to have it done by some local painter.

Very truly yours,

November 28th, 1905

Miss Edna Campbell,

Syracuse, New York.

My dear Miss Campbell:--

Your kind note with

reference to the Student Volunteer meeting in Auburn in November, 1906, is just received.

I am sorry that it will not be possible for me to say so long in advance whether I can arrange to come or not. I shall not be making any appointments for next November probably until next summer. If you will write me then and I find I can arrange to go to the meeting without neglecting other work that I ought to do, it will be a pleasure to go.

Very sincerely yours,

November 28th, 1905.

The Rev. Albert Erdman, D.D.,

Norristown, New Jersey.

My dear Dr. Erdman:--

I have just received notice of a meeting of the Board of Directors of the New York Juvenile Asylum, of which I am a member, on the evening of December 30th at the Institution in Dobbs's Ferry. I ought to go to this meeting and that will prevent my going to Norristown for the 5th.

With kind regards,

Very cordially yours,

November 28th, 1905.

Mr. Raymond S. Rogers,

S. Bethlehem, Penn.

My dear Mr. Rogers:--

How would "The Value of a Clean Record" do for a subject for the meeting on the 8th?

I have had a very kind letter from President Draper about getting over the evening before, but have written to him that I shall not be able to go before the train on the morning of the 8th.

Very cordially yours,

November 28, 1905.

Mr. Clarence T. Baldwin,
Lawrenceville, New Jersey.

My dear Mr. Baldwin:--

I shall be very glad to speak at the evening meeting of the Association on Sunday, December 17th. You speak of the 31st. I do not expect to be in Lawrenceville that Sunday, but do expect to be there for the 17th. Perhaps you heard that I was going for the third Sunday in December, and may have got the date confused in that way.

Very sincerely yours,

November 28th, 1905.

Mr. John W. Wood,

281 Fourth Ave., New York.

My dear Wood:--

I enclose herewith a statement from Dr. Braat regarding the Wichita church.

When I wrote to him about the subject I told him that I wanted information for you, and he tells me in his letter, from which I have taken the enclosed extract, that he sent my letter on to the session of the church in Wichita. I have written to him requesting him to instruct the session to keep your name out of the matter altogether, in case they have any discussion with the Episcopal rector in Wichita.

Very cordially yours,

(Enclosure)

November 28th, 1905.

Mr. C. G. Trumbull,

1031 Walnut St., Philadelphia, Penn.

My dear Charlie:--

I enclose herewith the article on "The Glory of the Flesh". If, on reading it, it does not appear to you to be the thing you want for the paper, I know you will not hesitate to send it back; and if you do like it and would like to abbreviate it in any way for editorial use, do not hesitate to do so. I shall hope to send you the other on "The Creative Power of Love" within a few days.

Very affectionately yours,

November 28th, 1905.

Mr. Thomas S. Evans,

Howard Houston Hall,

West Philadelphia, Penn.

My dear Tom:--

I am sorry I cannot come over for the evening of December 5th, but I have already one engagement for that evening and have had to decline another.

Very cordially yours,

November 29th, 1905.

The Rev. O. H. Bronson,

Care Mr. Henry T. Bronson,

15 South William Street, City.

My Dear Bronson:-

I wrote you a note asking you if you could tell me again what President Eliot's suggestion was for the Pitkin tablet, when he was asked for a suggestion. I remember you told me once, and we agreed that it was not a felicitous suggestion which he made, and you chose instead, a beautifully apt verse from the Gospels and inscribed this on the tablet. Could you tell me what this verse was? I am afraid my previous note did not reach you, so I am sending this to you in care of your father.

Very cordially yours,

November 29th, 1905.

The Rev. J. R. Miller, D. D.,

Witherspoon Building,

Philadelphia, Penna.

My Dear Dr. Miller:-

I enclose herewith a little material for Forward.
Very affectionately yours,

November 29th, 1905.

Mr. S. M. Sayford,

201 Tremont Temple,

Boston, Mass.

My Dear Uncle Samuel:-

I haven't forgotten your kind word, but I had to go to Chicago last week, and then was in Pennsylvania over Sunday, and did not get back here until Monday afternoon. I shall be glad to plan to come up for the evening of January 24th. You will let me know later, the place and hour of meeting, will you not, and give me any suggestions as to what you would like me to touch on?

Your sincere friend,

2

December 1st, 1905.

Mr. Edward Bailey.

Harrisburgh, Penna.

My Dear Ed:-

I had to go to Chicago last week, or I should have written before this to send you a receipt for the five hundred dollars for a nurse in the Ursula Hospital. The receipt was made out at once and would have been sent to you directly from the Treasurer's office at the time, but I told them to let me know it so that I might send it to you, and my absence accounts for the delay.

I hope that you and Elizabeth and the little girls are all well, and that George continues to gain.

We are expecting Will and Fay out to-night.

Very cordially yours,

December 1st, 1905.

President Jacob Gould Schurman,

Ithaca, New York.

My Dear President Schurman:-

I am very sorry it

is not possible for me to accept your kind invitation

to preach at Cornell on Sunday, February

25th. I have already engagements for that day,

and for all my Sundays until June.

Very sincerely yours,

December 1st, 1905.

Miss Dora Magdalen Barnes,

Johns Hopkins Hospital,

Baltimore, Md.

My Dear Miss Barnes:-

Your kind note is just received. I am glad to know of the prosperity of the Christian work in the Hospital, and very grateful if my visit helped at all toward the organization of the Association.

I am sorry to have to say that it will not be possible for me to come down for any of your Monday night meetings. I expect to be in Baltimore, speaking for Mr. Stone on March 11th, and possibly I could come for a meeting Saturday evening the tenth. But I cannot say now. If you will write to me, however, toward the end of February, I can let you know.

Very cordially yours,

Wm. E. Beecher.

December 1st, 1905.

Mr. J. G. Pegerl,
369 South Lincoln Street,
Chicago, Ills.

My Dear Mr. Pegerl:-

Your kind letter of November 26th has been received. I am sorry to have to give you the same reply which I made in Chicago. I do not see any prospect of my being able to undertake such work as you propose. It is hard enough to get away for one day, ~~as~~ I did last week. It would be practically impossible to get away for one week without sacrificing other work which has first claims upon me.

Very sincerely yours,

December 1st, 1905.

Miss Margery T. Sinclair,
16 East 66th Street,
New York City.

My Dear Miss Sinclair:-

I am sorry I cannot come to speak for the Young People's Society, but I have engagements for all my Sundays until June, with the exception of one Sunday a month which I keep to spend at home. And I do not think you would want me to give that one Sunday up for one of your meetings. Indeed, even if you did, I must say that I have at last succeeded in stiffening my resolutions so that I intend to keep those home Sundays inviolate.

With kind regards,

Very cordially yours,

✓

November 29th, 1905.

Mr. Frank White,

The Temple, Chicago, Ills.

My dear Mr. White:--

I was at the Hill School in Pottstown over Sunday and found your most cordial note awaiting me Monday afternoon when I got back to my office. I am delighted if the meetings shall prove to have been helpful to the Union. They were certainly most pleasant and helpful to me, and I did rejoice at the warmth of our fellowship and at the evident presence of our Savior in the midst of us. I hope I may have the opportunity of continuing the strong warm friendships which have been formed, among which I esteem highly yours and Mr. Stevenson's. I am glad that we are together in such a work; and that in the future as larger responsibilities come to us, we can bear the responsibilities with the assurance of such unity of mind and mutual confidence as prevail among us now.

With kind regards,

Very sincerely yours,

L

November 29th, 1905.

Mrs. H. W. Campbell,

48 Le Moyne Block, Chicago, Ills.

My dear Mrs. Campbell:--

This is the first opportunity I have had to reply to your kind invitation to me to come out to speak at the American Committee meeting in Chicago on January 4th. I am very sorry to have to say that it will not be possible for me to go. I hope that you may have a thoroughly good meeting, and that this union may be consummated to the great advantage of the work.

It was a very great pleasure to see you in Chicago and to meet with the ladies of the Northwest Board.

Very cordially yours,

414

2

November 29th, 1905.

Mr. T. S. Clay,

107 Wall St., New York City.

My dear Mr. Clay:--

I was very glad to get your note of the 24th. I was in Chicago at the time it was received, and did not get back to New York until Monday, and could not have the pleasure of going down to the Water Street Mission.

I have rejoiced in Mr. Mercer's work and am glad that he has not lost his head. Any man who has an honest and humble message to speak to men in these days will be heard, and his opportunities for being heard will very soon surpass his strength.

Mr. Mercer needs only to keep right on and the doors will open before him just as fast as he is ready to pass through them; and I am more than glad if any word of mine has been helpful to him, and shall keep him in mind in the future for work that may call for just what he can do.

Thanking you heartily for your letter, I am

Very sincerely yours,

November 29th, 1905.

Professor Henry J. Christman,

Tiffin, Ohio.

My dear Professor Christman:--

Your very kind letter of November 23rd came last week while I was in Chicago. I am writing now in reply at the first opportunity since returning.

I appreciate very much the honor of your invitation and the privilege that it would be to be present at your Bible Conference in April. I am very sorry, however, that it will not be possible for me to go. Some of our Woman's Missionary Boards, which are auxiliary to our Board, hold their meetings at the time of your Conference, and we have to hold ourselves in readiness to attend them. Our fiscal year, moreover, closes on April 30th, and it is difficult to get away at that time for any extended absence, or for more than such necessary meetings as I have mentioned. If it were possible for me to accept your invitation, I would gladly do so.

Very cordially yours,

November 29th, 1905.

Miss S. C. Smith,

Cr. Record of Christian Work,

East Northfield, Massachusetts.

My dear Miss Smith:--

I should be glad to review the four books
which I have marked in the enclosed list.

I should be glad to review any of the following books also:

Brewer's, American and Christian Nation.
Dod's, The Bible, Its Origin and Nature.
Peabody's, Jesus Christ and the Christian Character.
Whyte's, The Walk, Conversation and Character of Jesus Christ
our Lord.
Bowne's, The Immanence of God.
Sanday, The Criticism of the Fourth Gospel.
Harnack, The Expansion of Christianity in the First Three
Centuries.
Ellingworth's, Christian Character.
Prothero, The Psalms in Human Life.

Very sincerely yours,

(1 enclosure)

2

December 1st, 1905.

The Rev. Thornton B. Penfield,
3 West 29th Street,
New York City.

My Dear Penfield:-

I thank you very much for
your note of November 29th, but I have had to
write to Professor Christman that it would not
be possible for me to accept his kind invita-
tion.

Very cordially yours,

December 4th, 1905.

Mr. S. M. Sayford,

201 Tremont Temple, Boston, Mass.

My dear Mr. Sayford:-

I have to be away

over Sunday but hope to be back by Monday noon, reaching my office about half past twelve. You could meet me here and then we could go out to Lehigh University; or I will meet you at one o'clock at the Convention Hall, if you prefer. I will be there at the Convention Hall, if you prefer. I will be there at the Convention Hall, if you prefer.

Very cordially yours,

Wm. D. P. P. P.

December 4th, 1905.

The Rev. S. M. Zwemer, D. D.,

Mr. D. D. P. P. P.

Rochester Theological Seminary,
Rochester, New York.

My dear Sir:-

I am sorry that I cannot meet on Friday the 8th, as I expect to be at Lehigh University that day, and I fear I cannot meet on the 9th, as I am a delegate to the Convention of Immigration and may be down at Ellis Island that day.

Yours,

Wm. D. P. P. P.

✓
December 5th, 1905.

The Rev. George E. Gillespie,
Coatesville, Pennsylvania.

My dear Gillespie:--

Thank you very much for your appreciative word regarding "Young Men who Overcame". I hope the little book may do good. There was no chapter in it which I enjoyed writing more than the chapter on "Isaac".

I do not know the First Church of Wilkinsburg, except by hearsay. It seems to be an immense big church, but what kind of a church it is I do not know. I have a friend out there to whom I should be glad to write if you would like to have me do so. The Main Avenue Church of Orange, of which Dr. Hadley is pastor, is looking for someone to be his associate for a few years, with the understanding that he will succeed him in not less than five years. I mentioned your name to these people to-day, and they may go over and ear around.

Very cordially yours,

December 5th, 1905.

Mr. John K. Holmes,

Cr. the Aspell Wholesale Grocery Co.,
314 Greenwich St., New York City.

My dear Jack:--

I had a talk the other day with Fred Sname, who is in the business of steel construction and contracting, and I spoke to him of you. He told me to write you to go down and see him, that they were constantly having opportunities and need for men with knowledge of the iron and steel business, and that he would be very glad to see you and find out whether there was anything he could do to help you into that line of work. I enclose herewith a note of introduction which you can give him.

Your sincere friend,

(enclosure)

December 5th, 1905.

Mr. Frederick Snare,

143 Liberty St., New York City.

My dear Fred:--

This will introduce Mr. John M. Holmes, of whom I spoke to you. The M. stands for Miles. Mrs. Holmes was one of my mother's dearest friends, and was related to many of the old Huntington people. They lived for years in Birmingham and then moved to Western Pennsylvania, where Mrs. Holmes died a few years ago. John Holmes is now at a wholesale grocery place, but he wants to get back in the steel business with which he was connected for some eight years. I believe in him thoroughly and I hope that there may be some opening where he can find the kind of work that he wants to do, and in which, perhaps, if you are looking for a man, he may prove to be of use to you.

Very cordially yours,

✓
December 4th, 1905.

Mr. Howard Benant,

211 Hill School, Pottstown, Penn.

My dear Mr. Benant:--

Your very kind and encouraging letter of the 26th was received on Saturday, and with it the strong verses which I was very glad to have. I have spoken of the truth which you have put so effectively. In Professor Lane's "Simple Psychology", in the chapter on "Habit", there is a fine setting forth of the same truth.

I am very thankful indeed if last Sunday morning's sermon had any help in it. That is what sermons are for, and I do rejoice if ever there is any little strength coming out of what I try to say at the Hill.

I rejoice in the good influence that you are exerting in the school.

With kind regards to Mrs. Benant and yourself, I am

Very sincerely yours,

2

November 1955

Mr. Edgar A. Morrow,

Ohio Wesleyan University,

Delaware Ohio.

Dear Mr. Morrow:-

I add to this note, as a postscript, a paragraph or two which perhaps ^{will} serve your purpose if I have not failed.

Very cordially yours.



* Every man needs two things; first, a standard of right character, and second, power to enable him to realize this standard in his own life. Men do not find either of these things inside themselves, and our moral vision is blurred, our moral judgments are often color blind. Every man needs a standard outside of himself to which he can bring his life, by which he can correct it, in which he can find the ideal of what he ought to be. But this is not enough. All of us know already a good deal more of what we ought to be than what we have become. What we need is power to enable us to be what we already know we ought to be, or what the perfect standard, as we come to realize it, shows us we ought to be. We need incentive where we lag; we need restraint where we run to excess. Ethical appeals do not avail us, for they simply amount to a summons to a man to take hold of his foot straps and lift him up into a higher

December 5th, 1905.

The Rev. Sidney S. Conger,
Cooperstown, New York.

My dear Shag:--

Your letters of November 23rd and 22nd have both been received and I was glad to hear from you. I judge from what you write that it is not worth while for me to do anything more in the case of the Baltimore Church.

As to the Newark Church, I am afraid everything is not happy in that field. I had a friend who wanted to be mentioned in connection with that work but when he learned of difficulties in the church and disagreements, he asked not to have his name suggested. It seems to me that church has a fine field. It has a good endowment which saves it from any financial problem, but as I gather, there is an element in the church that wants to cling to a certain social character which the changing constituency of the church makes impossible. This may be an unjust judgment, and I will know a little more about the church in a few weeks, as I expect to go out there to speak the last Sunday of the year. If it seems well, I shall be glad to speak of you there.

Now I will tell you frankly one or two things I have heard about you, because I have been making inquiries now and then in order to be able to answer just such questions as came from Baltimore. One friend says that you have "certain mannerisms in preaching that you ought to get rid of, both as to gesticulation, use of your voice and leaning over the pulpit." It may be that there is nothing in any of this, but I want to repeat to you just what they said to me. Another friend said that you were as straight as a die and altogether

faithful, but that you needed to be made a little more tender by going up to Northfield". That was the way this friend put it, although the prescription specified is not the only cure, if there should be anything to cure at all.

Let me know of anything that I can do and I will keep my eyes open at this end.

Very cordially yours,

Very cordially yours,

General Staff of 15-16th of the 1st division

time this winter. I begin now the morning at

and sleep to the girls on the 15th of the 1st division

I shall be delighted to see

My Dear Miss W. J. A.

New York City

Received by Miss W. J. A. on 15th of the 1st division

15th of the 1st division

Received by Miss W. J. A. on 15th of the 1st division

My dear Mr. Perkins:-

Thank you very much for

your letter of the 11th inst. and have endeavored to give

you the best of my ability.

I have no doubt but that you will find it

very interesting and useful.

Very truly yours,

Wm. H. W. Perkins

December 1st, 1882

December 1st, 1882

My dear Mr. Perkins:-

Thank you very much for

your letter of the 11th inst. and have endeavored to give

you the best of my ability.

I have no doubt but that you will find it

very interesting and useful.

Very truly yours,

Wm. H. W. Perkins

December 1st, 1882

December 1st, 1882

L
December 6th, 1905.

Mr. Frederick Lynch,

Hotel Winthrop, 7th Ave. and 125th St., New York City.

My dear Mr. Lynch:--

I have looked up my engagements for February and March, and I am sorry that it will not be possible for me to speak either February 2nd or March 26th in the Christian Endeavor Union of the 8th District. It was a pleasure to see you the other day. I am sorry that other engagements will prevent my getting to the meetings of the Federation to-day or tomorrow.

Very sincerely yours,

December 7th, 1905

Miss S. C. Smith,

Cr. Record of Christian Work,

East Northfield, Massachusetts.

My dear Miss Smith:--

Brewer's, America. A Christian Nation
is published by John C. Winston & Co.

Bowen's, The Immanence of God, by
Houghton Mifflin & Co.

Harnack's, The Expansion of Chris-
tianity in the First Three Centuries, by
Putnam.

Illingworth's, Christian Character,
by Macmillan.

Very cordially yours,

December 6th, 1905

Dr. Alfred T. Seal,

Garard College, Philadelphia, Penn.

My dear Dr. Seal:--

Your kind letter of the
5th is just received and I find to my con-
sternation, on looking up my appointments
more carefully, that I had already promised
to speak at Bryn Mawr College on the after-
noon of February 11th. This will prevent
my going to Garard, and I am very sorry
indeed, and especially sorry that my
forgetfulness will cause you trouble.

Hoping that I may be able to go some
other time, I am

Very cordially yours,

December 6th, 1905.

Mr. Theodore T. Johnston,

Elizabeth, N. J.

My dear Mr. Johnston:--

I was very glad to get your letter yesterday regarding your son in Lehigh and I shall look forward with much pleasure to seeing him tomorrow.

I do not know how much freedom I can have in speaking directly about the Christian life, as I understand my address is to have a period of a regular college lecture, but once one is started he is usually free to say what he will, and I shall be grateful if anything I can say tomorrow may stiffen up the Christian resolution of any of the boys.

It is a pleasure to hear from you again, and with pleasant memories of the days in Elizabeth and the hope of seeing you again sometime, I am

Very cordially yours,

December 9th, 1905.

The Rev. J. R. Miller, D. D.,

Witherspoon Bldg., Philadelphia, Pa.

My dear Dr. Miller:-

I enclose herewith
a few notes for FORWARD.

Very affectionately yours,

AND COMPANY BOSTON
Leaving New York at 8.00 p.

not. I will try to go down on the train
on the afternoon of the fourteenth or
I can get away in time for the meeting

I go to school every day.

Mr. J. H. Dismouth: --

Милос-Югославия Братство и др.

December 24th 1892



December 9th, 1905.

Mr. John W. Wood,

402 West 20th St., City.

My dear Wood:--

I am very sorry to hear of your being laid out on your back and trust that you may soon be up and about. I would gladly go to Pittsburg for you on the 14th if I did not have an engagement to speak in Princeton that evening. Anything which you felt you ought to do if you were well, I should be glad at any time to do for you if it were within my ability and power; but I promised to go to Princeton because I can leave here late in the afternoon and get back the same evening, and this engagement is important, not only that I have an engagement to speak to the students in the evening, but also because there is a meeting of the Graduate's Advisory Committee on the religious life of the under-graduates, and I am a member of this Committee.

Regretting that I cannot help in your emergency, and trusting that you may soon be about and none the worse from this temporary overthrow, I am

As ever your friend,

✓
December 11th, 1905.

Miss M. W. Winkhams,

276 West 86th St., New York City.

My dear Miss Winkhams:--

I greatly appreciate your kind note just received. I should be glad if I could accept your invitation, but it will not be possible for me to do so. I shall probably be away from New York at that time, and if I am not away shall have other engagements here for that evening.

Very cordially yours,

✓
December 11th, 1905.

Miss O. H. Lawrence,

Room 10, 25 East 22nd St., City.

My dear Miss Lawrence:--

I am sorry I cannot accept your kind invitation for January 21st, but I have already engagements to speak that day at Yale College.

Trusting you may have a good meet.

I am

Very sincerely yours,

December 11th, 1905.

Mr. John G. Hosmer,

14 Beacon St., Boston, Mass.

Dear Sir:--

The Life of George Bowen ,
regarding which you inquire, is not writ-
ten yet. I am still gathering the mat-
erial for it and do not expect to get to
work on it for a year or two.

Very sincerely yours,

✓
December 11th, 1905.

Mr. E. Haverhewer,

The Hill School, Pottstown, Pa.

My dear Mr. Haverhewer:

I am very glad to hear of your success in the
contest for the prize of \$1000.00. I am sure that God will
open before you the work that He would
have you do. Please do not hesitate
to come in at any time to see me or let
me know whenever I can be of any help
to you.

(Sincerely)

✓
December 11th, 1905.

Miss M. E. Miller,

101 Lexington Ave., N.Y.

My dear Miss Miller:--

Your good note of
Monday is just received. I am glad you
feel as you do, and am sure that God will
open before you the work that He would
have you do. Please do not hesitate
to come in at any time to see me or let
me know whenever I can be of any help
to you.

Very Sincerely yours,

130
1
Very cordially yours,
Dorcas E.

With kind regards to Mrs. Pitt and
if over with pleasure.

Excuse me. It has just come and I shall look
the book you sent me entitled "Knox's"

I want to thank you also for the lit-
targe influence of God.

and that it may be the starting point of
have a very good and profitable meeting
prevent my getting away. I hope you may
Expenditure here for the Sabbath which will
be possible for me to do so. I have en-
last week in December, but it will not
present at the conference in Chicago the
Sabbath is just received. I wish I could be

Your kind note of the

My dear Mr. Pitt:--

Woods Baptist Institute, Chicago, Ill.

Mr. A. B. Pitt,

December 11th, 1902.

Very affectionately yours,

God bless you for the new year.

to get ahead as fast as possible on the
soon to send you three more. I shall try
for January 1st and 2nd. I shall hope
notes for the Young Peoples' Meeting
I am, dear friend,

My dear Charles:--

1031 Walnut St., Philadelphia, Pa.

Mr. C. G. Thompson,

December 11th, 1902.

December 12th, 1905.

Mr. Oscar Westover,
United States Military Academy,
West Point, New York.

My Dear Westover:-

Your good note of Sunday is just received. I am sorry it will not be possible for me to come up to West Point this year, but I have engagements for all of my Sundays until next summer, with the exception of one Sunday - month which I keep at home. I am very sorry, but it wasn't possible to get a Sunday free for West Point. I have had to give up, alas, the hope of going to Annapolis, though I wanted very much to be able to get down there this winter.

I saw Mr. Jackson yesterday, and he told me of his visit to the Academy, and of the hearty welcome which he got from the men.

With best wishes for God's blessing on the work through the whole year,

I am,

Very cordially yours,

December 12th, 1905.

Mr. Murray Olyphant,

Englewood, N. J.

My Dear Mr. Olyphant:-

I am sorry I cannot speak at the Men's Meeting on February the 4th. I should be glad to do so if I were to be in Englewood that day, but I have promised to spend that Sunday at Andover. I hope you may have good meetings, and if ever I can be of help to you, I shall be glad to do whatever

I am,

Very cordially yours,

December 12th, 1905.

Mrs. J. L. Nevins,

Chefoo, China.

My Dear Mrs. Nevins:-

A copy of the Chefoo Daily News for October 29th, announcing the death of Miss Bainbridge, was received a few days ago, and I hasten to express in behalf of Mrs. Spear and myself, our very deep and loving sympathy with you. We can understand how great this loss will be to you, and how different it will make your life in Chefoo. It is a pleasant thing to think of Miss Bainbridge as free from all the limitations of our life and work here on the earth, and living now amid the infinite liberties of the untrammelled life in God; but it must be a great loss to you, and must make every day now a very different day from the old days when Miss Bainbridge was always at hand with her kindness and good-cheer.

I was glad to receive just this morning, a note from Ensign Conway, acknowledging the books which I sent him. Perhaps you will be interested in what he said:

I received your letter and the book and booklet a couple of days ago. I wish to thank you for them, and I hope to derive considerable benefit especially from the book 'The Man Christ Jesus.' As yet I have only glanced through the book.

I thank you also for your kind invitation to call upon you in New York, and I should like to have the opportunity to call, as I perhaps shall have, next summer.

I am sure to write to Mrs. Nevins and tell her that I have received these books from you. I hardly expect to go out there again very soon.

Mrs. Spear is in town to-day to do some Christmas shopping. It will be a very different sort of day for her from those pleasant, peaceful days which she spent in your home in Chefoo, - days to which we both look back in joy and affection. With much love from us both.

Ever your sincere friend,

December 13th, 1905.

The Rev. James C. Fernald,
Bliss Building,
Washington, D. C.

My Dear Mr. Fernald:-

When I was in Chicago several weeks ago, I received your very kind letter of November 22nd, regarding your son. I shall be very glad to write to him, and am going to take the liberty of showing your letter to the Rev. James B. Rodgers, D. D., one of our missionaries in Manila, who is now at home, and who is a man of true Christian character, and who, if he does not already know your son, I am sure will be glad to make his acquaintance when he returns to Manila. I shall tell your son frankly, of course, that you have written to me, and that it was your letter which led me to write to him.

With the earnest hope that by his life and active work for Christ he may service the Church as well as the nation in the Philippines, I am,

Very sincerely yours,

W. A. R.

December 15th, 1905.

Mr. W. R. Moody;

East Northfield, Mass.

My Dear Will:-

I am sorry it will not be possible for me to come up for February fifth, but our Board meets that afternoon, and it will be necessary for me to be present.

It was so good to see you when you were down here, and we shall count on that visit from you the next time you come.

Very affectionately yours,

December 15th, 1905.

Mr. Lewis S. Skidmore,

Ripon, Wisconsin:-

Dear Mr. Skidmore:-

I am sorry it will not be possible for me to accept your kind invitation to make the Commencement Address at Ripon next June. I am not sure that I shall be at the Geneva Conference this summer, and even if I am, I shall be there for only one or two days, and shall not be in Wisconsin before the Conference. I should very much enjoy coming to Ripon if I could, and appreciate heartily your kind invitation.

Very sincerely yours,

December 13th, 1902.

М. Ефес к. 10200.

Ustavni zakon

De l'ensemble, unio.

KA DEER HILL KOLLM:-

I saw a lot of birds

-mement I .dell and to tettel thyv guntiam a hnd
 -or hrs , oblieddel to waiveredd two flev vrev red
 ndidre to noisicob and of tetal amas hoy jand ecidol
 thguord and ti jalt ovelled flev nas I .etiv hoy
 jalt stus nas hrs , hoy of thguorda hrs yet jwerg
 yllibedde fllw thguorda hrs yet andt , mo og hoy as
 .egrdline

December 13th, 1902.

STANDARD. W. W. TORRANCE

Lexington Avenue,

How very odd.

Dr. Price:-

vphretsey to eton boog tuoy
 dliw nicl ot hals need evnā I .beviöer jaul ai
 laicöge ailt ni hoy to? revayiq ni vphretls etndjo
 ma I bna ,conabing lma nobziw to been to emit
 and to? gativgaktndt ni hoy dliw nicl ot balg
 -er lliw hoy wom I doliwoidzerib bna leanturo

, ysh and tni jnemeegne ne yhsatls evad I
 jag at epep jnnas hns ,stos reheweg , yshenbew
 . and jadt js loodes eldin and at qu
 , xnuv vflaibnos ynuv

December 13th, 1905.

Mr. Henry B. Fernald,

555 Calle Real,

Malate, Manila, P. I.

My Dear Mr. Fernald:-

A few weeks ago, while in Chicago, I met a brother of yours, and he gave me a delightful letter from your father, in which he spoke of you, of our having known one another when you were in the New York University, and of your work in the Philippines. Your father spoke of the high-minded and true-hearted spirit in which you had always done and were doing your work as a representative of the American people and government in the Philippines. And he spoke of his strong desire, which he has doubtless often expressed to you, that if the way were opened for some directly active Christian work, that you might enter it. ^{Thank you is missionary} In writing to your father, thanking him for his letter, I told him that I was going to ask Dr. Rodgers, one of our missionaries in Manila, to make your acquaintance after he returns from furlough, although I think it is more than likely that you and he are already acquainted. And probably you also know Dr. Rossiter and Mr. Hillis, and may be taking an active part either in the Presbyterian Church or some other of the American Churches in the City.

I have been very much interested the last year or two in the very question which I suppose has often occupied your mind, as to what is the duty of a Christian man in the East, who is not formally connected with missionary work, and who yet wishes to contribute his influence to the spread of Christian principle and Christian faith. I have been studying the lives of men like John Lawrence and Donald McLeod of India; of S. Wells Williams of China; and of Chinese Gordon, who belonged pretty much everywhere; and have wished as I read these lives, that every man who went out from the West to the East to serve Government or to follow trade, might be as fearless in his Christian princi-

Mr. Fernald, 2.

ples and as bold in their support as these men were. If you have never read Chinese Gordon's Letters to His Sister, I think you would enjoy them. They show the eccentric theological opinions of the man, but they reveal also his profound religious nature. Taken in connection with such a life as Sir William Butler's "Gordon," they show something of the secret of his unsurpassed hold upon the men and races with whom he came in contact, and they give some evidence of what men could do with opportunities like yours if they took them up in the spirit of Gordon. There is another book that would help a man in the same way. I mean George Smith's "Twelve Indian Statesmen," in which he writes briefly the biography of men like Lawrence and McLeod and other outspoken Christian men, who constituted the strength of British rule in India.

It must be very hard for a man to keep up his standards in the East. I was struck very much by a passage in Kidd's "Control of the Tropics," in which he referred to this difficulty:

"In climatic conditions which are a burden to him; in the midst of races in a different and lower stage of development; divorced from the moral and political environment from which he sprang, the white man does not in the end, in such circumstances, tend so much to raise the level of the races amongst whom he has made his unnatural home, as he tends himself to sink slowly to the level around him."

A friend of mine, an old classmate, who has been United States Minister to Korea, and has just been transferred to Cuba, has spoken to me of this same thing. He told me that when he went out to the East he resolved that he would lean over backward, if anything, in the stiffness of his moral standards; that the fact that the temptations to deteriorate were so strong he was bound should only constitute to him an additional reason for standing erect. But even where men do this morally, as many do, it must be very hard to do it spiritually - to keep one's Christian faith clear and distinct, and to avoid drifting into an attitude of easy and negligent tolerance of opinion that anybody may believe. I do not know that our acquaintance in the past warrants any appeal from me to you, but I have often wished that there were men in the Philippines, in the government if not in the mission service, who, would represent as high a type of Christian faith and life and missionary

Mr. Fernald, 3.

spirit as any regular missionary. Doubtless there are some such men, and Christian men here at home wish them strength and courage for what must be a very difficult task.

Very cordially yours,

December 14th, 1905.

The Rev. T. M. North, D. D.,

150 Fifth Avenue,

New York City.

My Dear Dr. North:-

Your very kind note of yesterday, with its enclosed check to cover my expenses in connection with the Bridgeport Meeting, has been received. I am very much obliged to you for your kindness, and for your encouraging word regarding the Sunday afternoon meeting at the Federation Conference. I am glad the Conference took the ground that it did, but was sorry to see Dr. Rice's position in his letter in the Christian City.

With warm regard.

Very cordially yours,

Mr. Nathan Wilbur Helm,
Exeter, New Hampshire.

My dear Mr. Helm:--

I have accepted your kind invitation to visit Exeter this year, but I am afraid it will not be possible for me to go. I have engagements for all of my Sundays, and the only one of them near Exeter is February 4th when I have to be at Andover. I have to be back in New York the next afternoon, so that I could not stay over, and I fear that even if I could go up for Saturday evening, that would not be a very suitable evening for a meeting. If it would, and I could get to Exeter from New York that day in time for an evening meeting and go down to Andover after the meeting, I should be glad to go.

Very sincerely yours,

December 13th, 1905.

The Rev. J. R. Miller, D. D.,

Witherspoon Bldg., Philadelphia, Pa.

My dear Dr. Miller:--

Your very good Christ-

mas letter was received yesterday, and I send back with heartiest love my Christmas greetings and best wishes for the new year. It is a constant joy and spiritual help to work with you or for you, and it is a constant stimulus to see in you an example of the Christian life which encourages all of us to struggle forward ourselves in the hope that we can more fully attain.

I enclose two little articles for "Forward", and am

Ever affectionately yours,

(Enclosure)

December 18th, 1905.

Dr. F. Howard Taylor,

3320 Arch St., Philadelphia, Penn.

My dear Brother Howard:--

It was a great pleasure to receive a few days ago your letter of December 4th. Only last Saturday evening I came very near seeing you, as I met Horace Coleman on the train in West Philadelphia and learned from him that he had just said good-bye to you at the station. Surely, we must have a glimpse of you in our home before you go to England. I wish you were going to stay for the Student Volunteer Convention in Nashville, February 28th to March 4th, but whenever you go, please be sure to keep a few days at least for Englewood before you sail.

With a great deal of love from Mrs. Speer and me to you both,

Very affectionately yours,

December 18th, 1905.

Miss Ruth P. Ward,

Teachers' College,

1230 Amsterdam Ave., City.

My dear Miss Ward:--

Your kind note of December 7th has been received. I am very glad to know that you have got the Mission Study work under way, and trust that it may be a very successful year, and may lead to even larger classes next year.

Very cordially yours,

December 15th, 1905.

Mr. Charles A. Reynolds,

1032 Walnut St.,

Philadelphia, Pa.

My dear Charles:--

I enclose herewith the

editorial on the Creative Power of Love,

and send with it the Young People's Col-

umn for February 4th. I do not recall at

the moment the exact date of your father's

death. Will you please fill that in?

Very affectionately yours,

December 15th, 1905.

Mr. Lucius H. Miller,

Princeton, N. J.

My dear Lucius:--

Miller says that he will be
here next Tuesday and will be very glad
if you will come and lunch with us that day.
Very cordially yours,

✓
December 15th, 1905.

The Rev. S. J. McPherson, D.D.,
Lawrence, Mo., U.S.A.

My dear Dr. McPherson:--
I shall hope to

go down tomorrow evening on the Frisco
Special and will be glad to meet
with you regarding the U.S. McPherson
and the children,
very sincerely yours,

✓
December 15th, 1905.

Dr. T. E. P. Sailer,
156 Fifth Ave., City.

Dear Thomas:--
Don't forget our appoint-
ment to lunch, with Mrs. Miller on Tues-
day, December 19th.
As ever yours,

✓
December 15th, 1905.

Mr. Raymond S. Rogers,
South Bethlehem, Penn.

My dear Mr. Rogers:--

Your kind note of yesterday with its enclosed Money Order, covering my railroad fare to Bethlehem, is just received. I am very much obliged to you for your kind thoughtfulness. I have not had a chance to talk with Mr. Baer since his visit, but hope to see him soon. I am glad to know that you have reason to be encouraged, and I trust that the work of the year may be very fruitful and effective.

Very cordially yours,

December 15th, 1905.

Mr. Charles D. Hillis,

Dobbs Ferry, New York.

My dear Mr. Hillis:--

I did not use the ticket which you sent me last week and return it herewith.

I am glad to hear of Miss Masters' gift of the organ. Mr. Holmes, of whom you speak, I have known since we were boys in Central Pennsylvania, and I trust that he may be able to offer his goods at prices advantageous to the Institution.

I hope that you and Mrs. Holmes are well, and with warm regards, I am

Very sincerely yours,

(enclosure)

✓ December 15th, 1905.

Mr. James T. Barrow,

My dear Mr. Barrow:--

I shall hope to be present at the meeting of the Committee on Nominations at Mr. Williams' office next Tuesday noon.

Very cordially yours,

✓ December 15th, 1905.

The Rev. H. T. McEwen, D. D.,

Amsterdam, New York.

My dear Mr. McEwen:--

This morning's Sun contained the enclosed account of the Princeton-Harvard debate. I think "K. H. McEwen" must be your boy Kenneth, and if so, I send my hearty congratulations to you and Mrs. McEwen.

Very cordially yours,

(enclosure)

December 15th, 1905.

Prof. G. A. Funkhouser,
Dayton, Ohio.

My dear Dr. Funkhouser:--

Your kind letter

was received yesterday and I telegraphed at once as you requested. I wish I could accept your invitation, but, as I wrote, I had still to be the last meeting of our Board before the General Assembly and I must not be absent at that time.

Very cordially yours,

December 17th, 1905.

The Rev. J. R. Miller, D. D.,

Witherspoon Bldg., Philadelphia, Pa.

My dear Dr. Miller:--

I am sending you

herewith by registered post, Dr. McBride's lectures on The Church of Christ in Japan, of which I wrote to Mr. Scribner, and which he has asked me to forward to you. I hope that you may find them good material for publication by your Board.

Very affectionately yours,

(enclosures)

✓
December 16th, 1905.

Mr. John M. Holmes,

314 Greenwich St., New York City.

My dear Jack:--

Your note of the 14th is received. Please do not call me "Mr. Speer", but just stay on the same old terms.

I am glad to hear of your success with your firm. Mr. Hillis of the Juvenile Asylum told me that you had been there, and I wrote to him about you, and should be glad to say a word at Dr. McKenzie's School, if I go there or see Dr. McKenzie.

I have met Mr. John D. Rockefeller, Jr., but have never ventured to give anybody a note of introduction to him. If some time I find I could be of help to you there, however, I should be glad.

I wonder if you got a letter from me which I sent some days ago, enclosing a note of introduction to Mr. Sname. I asked him if you had been to see him and he said you had not. Fearing that my letter did not reach you, I enclose with this a note of introduction to him. I think that you can find an opening there in the steel business if you wish to take it up again.

I am going down to Lawrenceville to-day and shall not be back Monday morning until late, so that I may miss you then, but I hope you will come in when you can.

Your sincere friend,

(enclosure)

✓
December 16th, 1905.

Mr. Frederick Snare,

143 Liberty St., New York City.

My dear Fred:--

This will introduce Mr. John M. Holmes, of whom I spoke to you. The M. stands for Miles. Mrs. Holmes was one of my mother's dearest friends, and was related to many of the old Huntington people. They lived for years in Birmingham and then moved to Western Pennsylvania where Mrs. Holmes died a few years ago. John Holmes is now at a wholesale grocery place, but he wants to get back in the steel business with which he was connected for some eight years. I believe in him thoroughly and I hope that there may be some opening where he can find the kind of work that he wants to do, and in which, perhaps, if you are looking for a man, he may prove to be of use to you.

Very cordially yours,

✓
December 26th, 1905.

Mr. A. De R. Chipman,

22 Whitehall St., New York City.

My dear Mr. Chipman:--

Your kind note of
yesterday is just received. I have to
go away this afternoon and shall not
get back until late Monday morning, and
then I have a Committee Meeting and a
Meeting of our Board in the afternoon,
so that I am afraid I may miss you if
you come in on Monday.

I doubt very much after whether I
would be able to be of any help as I have
engagements for all of my Sundays until
the summer time, and have also some
other appointments for week nights the
last of January.

Very cordially yours,

Wm. E. Hall

December 16th, 1905.

Miss Mary T. Hale,

1732 Clifton Place,

Minneapolis, Minn.

My Dear Miss Hale:-

Your kind note of December 8th,

with the invaluable letters and quotations attached, has been received. I have gone over them with the deepest interest. They are just the sort of material that is indispensable. I can see what an immense labor it is, but I do hope that you may be able to go on and make similar extracts from the letters of the ensuing years. I shall look forward with greatest interest especially to those relating to the Kurdish invasion. The form in which you sent the quotations is very satisfactory, and I am very grateful for them.

With best wishes for a pleasant Christmas,

I am,

Very sincerely yours,

December 16th, 1905.

Mr. Edward L. Broom,

Lafayette College, Raritan, N. J.

My dear Mr. Broom:-

I was glad to receive the other day your letter of the 15th, and shall look forward with pleasure to seeing you during your holidays. I expect to be here practically all the time, although I have engagements for a number of days, but shall be here Friday, December 22nd, I think, or Friday the 29th, and could see you almost any time in the afternoon.

Dr. Halsey, who is the Secretary in charge of all correspondence with cardinals, would also be glad to meet you, and I hope when you are here you will be sure to meet him too.
Very cordially yours,

December 16th., 1905.

Mr. Hamilton C. Conant,
120 Boylston St., Boston, Mass.

Dear Mr. Conant:--

Your kind note of yesterday is just received, and I am sorry that it will not be possible for me to stay over to speak at the Convention in Cambridge January 25th. I shall have to come back to New York on the night of the 24th, immediately after the meeting.

I am sorry also that I cannot promise to go to the State Convention next October. That is the month in which our Presbyterian Synods meet, and I shall probably have to be in the West at that

time.

Very sincerely yours,

December 16th., 1905.

Miss Sophie F. Woodman,
478 West 59th St., City.

My dear Miss Woodman:--

Your kind note of yesterday is just received. I am sorry that it will not be possible for me to come for the meeting on the afternoon of January 10th. I trust you may have a good meeting and may be able to awaken the interest that ought to be felt in the Nashville Convention and a proper representation there from Newark.

Very cordially yours,

✓
December 16th, 1905.

Mr. S. Edgar Briggs,

156 Fifth Ave., New York City.

My dear Mr. Briggs:--

Referring to your note of November 25th, I do not think of any changes to suggest in the Pitkin book.

As to Mr. Beach's letter, which I return, the suggestion regarding "The Missions and Modern History" would not help any. It would mean the printing of another book. The possible thing, it seems to me, might be to see whether, when they get through with their study of different countries, the three movements--- the Student Volunteer, the Young People's and the Woman's -- might not want to combine on some general course of study such as Missions and Modern History would provide, which would call for a large enough edition to make it worth your while printing the book on thin paper and providing at a low figure.

Very cordially yours,

December 16th, 1906.

Mr. Luther D. Wishard,

Metropolitan Bldg., Madison Sq., City.

My beloved Luther:--

You cannot take me in by any such gold brick letter as yours of the 14th just received. I was down at Princeton Thursday at a meeting of the Advisory Committee and you were not there and no financial report from you was read, and here you come along trying to rope me in some Canadian Wheat Land speculation, under the cover of the Philadelphian Secretary funds. Before I can send you any check as an expression of faith, I feel that I ought to spend at least a day with you, and will appoint for this purpose next Wednesday--place, Summit.

Very affectionately yours,

✓

December 16th, 1905.

Professor William Adams Brown, D. D.,

700 Park Avenue,

New York City.

My Dear Dr. Brown:-

I should have written to thank you long before this, for your very kind letter of November 14th. I appreciated very much your kind words regarding the address in the Brick Church, and I sympathize heartily with the view expressed in your letter as to the interest which we ought to feel in the contributions which the native churches will make to a better understanding of Christianity. I am sorry I cannot suggest many books by missionaries which would help you to enter into the movement and drift of thought in this matter in the native churches. Of course, for the most part, the intellectual leadership in these churches is still found among the missionaries, and the large majority of them represent rather the attitude and convictions of the churches from which they come; although even of these, I think, there would be few whose position has not been really modified by their experiences and the necessities of their work. I knew very well the Mr. A. G. Jones, who was the English Baptist to whom you refer; he was one of my best friends in China, and I have often talked with him about his book. He was a man of rugged strength who had not had a technical theological course in England, and he took up with the more freedom, accordingly, the problem of theological construction for the Chinese Church. Perhaps Dr. Gibson's *Mission Problems and Mission Methods in South China* might be of some service to you, and you know of course of Dr. Hume's *Missions from a Modern View*. This represents, however, I think a statement of Christianity under the influence of Western liberalizing opinion rather than any development of Hindu Christian thought. Perhaps the same thing can be said of Keshub Chunder Sen's writings. His principle was rather that of Western Unitarianism, or even rationalism, rather than a genuine attempt to construe Christianity with fidelity to history, or one

Dr. Brown, Z.

side, and yet in the terms of Hindu Christian experience on the other. There has been very little I think produced as yet in the native churches of sufficient maturity to be of much value. There are some books, however, like Muir's "Sweet First Fruits," and Muir's "All Kindi," and Uchimura's "Diary of a Japanese Convert," Moscondar's "Oriental Christ," and the "Life of Keshab Chunder Sen," Padmanji's "Once Hindu, now Christian," which are worth looking over. The Japanese Church is naturally the one that is most conscious of the privilege of an independent theological construction, and whose leaders are perhaps as free intellectually as those of any native Church; and a good deal has appeared in the periodicals in Japan which I think it would be worth your while keeping track of. You can do this fairly well from the monthly summary of current religious publications in the Japan Weekly Mail. My impression is that the native Church in India is following with much more docility the customary Western forms of statement. Thus far, neither in India nor in Japan have the native churches been equipped with the historical knowledge which would give them a basis for independent theological construction, while their Christian experience has been pretty elementary.

I shall be very glad indeed to let you know at any time of any books coming to my notice which might be serviceable to you.

Very cordially yours,

December 18th, 1905.

Mr. Henry G. Talridge,

1031 Walnut Street,

Philadelphia, Penna.

My Dear Mr. Talridge:-

Thank you very much

for your note of the 18th. I have the Young People's material for the last Sunday in January prepared, and will send it either alone or with several others shortly.

With kind regards.

Very sincerely yours,

Robert E. Ober.

The Rev. W. McPherson,

34 St. Andrews Place,

Yonkers, N. Y.

My Dear Mr. McPherson:-

Your note of the 18th is just received. I am not fond of having my picture printed anywhere, and I am so little fond of it that it doesn't make much difference to me whether any explanations accompany it or not.

With best wishes for all your work, and for a pleasant Christmas Season, I am,

Very sincerely yours,

Robert E. Ober.

December 18th, 1905.

Mr. H. W. Rankin,
119 Macon Street,
Brooklyn, N. Y.

My Dear Mr. Rankin:-

Your good note of December 15th has been received. I enclose herewith a copy of Mr. Keppler's letter. I have gone over all the proper names so as to make sure they are correct. I am sending the other enclosures of your letter with the original of Mr. Keppler's letter to Mrs. McCartney.

I never questioned the depth and significance of Dr. McCartney's influence in China. Where I have thought that there was a risk of error of judgment on your part, was with reference to your estimate of the importance and significance of Dr. McCartney's work in Japan. But I am ready to be convinced by the book when it appears.

With warm regards.

Your sincere friend,

Mark E. Speer.

December 18th, 1905.

Mrs. B. B. McCartney,
Madison, New Jersey.

My Dear Mrs. McCartney:

I enclose herewith two letters and a photograph which Mr. Keppler sent you. I have had a careful copy of Mr. Keppler's letter made, and returned it to Mr. Rankin, to be inserted in the bound volume of Dr. McCartney's letters.

I hope that you are very well, and with best wishes for the Christmas Season, I am,

Very sincerely yours,

Mark E. Speer.

✓
December 1941., 1908.

Mrs. Charles L. Bailey,

31 South Front St., Harrisburg, Penn.

Dear Mother:--

I have sent you directly from Revell's the books you wished, although in order that there might not be confusion over the bill I had the bill sent to me by express, and I have your books as please open the package. I enclose herewith the bill as you wished. It has not been paid, so that you can send your check with the bill directly to Revell.

Emma is very busy getting ready for her visit, and we shall all be over on Saturday afternoon. We will be here at 2 o'clock.

With much love to all,

Your affectionate son,

Rob.

2

December 19th, 1905.

Miss Annie Hutchinson,

Landen Ave., Hollywood, N. J.

My dear Miss Hutchinson:—

Mr. Reed has received the \$1.00 which was given you to be forwarded to Miss Wilder, and we sent that to her in the same letter with the \$5.00 which you had previously sent yourself. We have been glad to have been of help to you and Miss Wilder.

With best Christmas wishes, I am

Very sincerely yours,

December 21st, 1905.

Mrs. M. E. Foster,
Clifton Springs,
New York.

My Dear Mrs. Foster:-

Your very kind note of Christmas Greeting has just been received. I appreciate very much your kindness in writing, and should rejoice to come up to Clifton now for a few days' rest if I could possibly do so. Perhaps some time in the future it may be possible for me to get away, and to bring Mrs. Speer, whom I should like to see the Sanitarium.

I am sorry to hear that Mr. Buck is not improving, and very sorry that he is suffering so. By him, as by many, the end must be longed for as the end of an undesirable, and the beginning of a free and real life.

With best Christmas wishes.

Very cordially yours,

December 21st, 1905.

Mr. H. Hiebner,
1854 Cranford Avenue,
Philadelphia, Penna.

My Dear Mr. Hiebner:-

Your kind note of the 19th

is just received. I am sorry it will not be possible for me to speak for you on April 1st, but I have appointments for every Sunday until next summer. I ought to say that these appointments include one Sunday a month at home, but I long ago made the rule to keep that one Sunday, and count that as one of my appointments.

Very sincerely yours,

December 21st, 1905.

Mr. J. R. Smiley,
Young Men's Christian Association,
Boston and Berkeley Streets,
Boston, Mass.

My Dear Mr. Smiley:-

Your kind note of the

10th is received. I am sorry it will not be possible for me to get up to Boston in time for one of the noon shop meetings on January 24th. I shall only be able to get up in time for the evening appointment.

Very sincerely yours,

December 19th, 1905.

The Rev. James C. Fernald,
1100 Fourteenth Street, N. W.,
Washington, D. C.

My Dear Mr. Fernald:-

Your very kind note of the 16th has been received. I tried to have in mind the wise caution in your letter, and yet I had to write your son in such a way that he would not write my writing as intrusive and inexplicable. What I said to him was as follows:

A few weeks ago, while in Chicago, I met a brother of yours, and he gave me a delightful letter from your father, in which he spoke of you, of our having known one another when you were in the New York University, and of your work in the Philippines. Your father spoke of the high-minded and true-hearted spirit in which you had always done and were doing your work as a representative of the American people and government in the Philippines. And he spoke of his strong desire, which he has doubtless often expressed to you, that if the way were opened for some directly active Christian work, though not in missionary service, that you might enter it. In writing to your father, thanking him for his letter, I told him I was going to ask Dr. Rodgers, one of our missionaries in Manila, to make your acquaintance after he returns from Furlough, although I think it is more than likely that you and he are already acquainted. And probably you also know Dr. Rossiter and Mr. Hillis, and may be taking an active part either in the Presbyterian church or some other of the American Churches in the City.

I have been very much interested the last year or two in the very question which I suppose has often occupied your mind, as to what is the duty of a Christian man in the East, who is not formally connected with missionary work, and who yet wishes to contribute his influence to the spread of Christian principle and Christian faith. I have been studying the lives of men like John Lawrence and Donald McLeod of India; S. Wells Williams of China; and of Chinese Gordon, who belonged pretty much everywhere; and have wished as I read these lives, that every man who went out from the West to the East to serve government or to follow trade, might be as fearless in his Christian principles and as bold in their support as these men were. If you have never read Chinese Gordon's Letters to His Sister, I think you would enjoy the book. These letters show the eccentric theological opinions of the man, but they reveal also his profound religious nature. Taken in connection with such a life as Sir William Butler's "Gordon," they show something of the secret of his unsurpassed hold upon the men and races with whom he came in contact, and they give some evidence of what men could do with opportunities like yours if they took them up in the spirit of Gordon. There is another book that would help a man in the same way. I mean George Smith's "Twelve Indian Statesmen," in which he writes briefly the biography of men like Lawrence and McLeod and other out-spoken Christian men, who constituted the strength of British rule in India.

It must be very hard for a man to keep up his standards in the East. I was very much struck by a passage in Kidd's "Control of the Tropics," in which he referred to this difficulty:

"In climatic conditions which are a burden to him; in the midst of races in a different and lower stage of development; divorced.

Mr. Fernald, 2.

from the moral and political environment from which he sprang, the white man does not in the end, in such circumstances, tend so much to raise the level of the races amongst whom he has made his unnatural home, as he tends himself to sink slowly to the level around him."

A friend of mine, an old classmate, who has been United States Minister to Korea, and has just been transferred to Cuba, has spoken to me of this same thing. He told me that when he went out to the East he resolved that he would lean over backward, if anything, in the stiffness of his moral standards; that the fact that the temptations to deteriorate were so strong he was bound should only constitute to him an additional reason for standing erect. But even where men do this morally, as many do, it must be hard to do it spiritually - to keep one's Christian faith clear and distinct, and to avoid drifting into an attitude of easy and negligent tolerance of opinion that anybody may believe. I do not know that our acquaintance in the past warrants any appeal from me to you, but I have often wished that there were men in the Philippines, in the government as well as in the mission service, who would represent as high a type of Christian faith and life and missionary spirit as any regular missionary. Doubtless there are some such men, and Christian men here at home wish them strength and courage for what must be a very difficult task.

If I can ever be of any service please let me know.

Very cordially yours,

December 21st, 1905.

Mr. E. O. Macfarlane, Jr.,

957 Delaware Avenue,

Buffalo, N. Y.

My Dear Mr. Macfarlane:-

I shall be very glad

to speak at the Scheff meetings on the 14th and 21st, at the noon hour.

Very cordially yours,

December 21st, 1905.

✓
Dear Mr. Helms:-

It was very kind of you to send me the copy of the Woodlawn Presbyterian with its account of the meetings of the Young Men's Union last month. The account is altogether too kind and complimentary and I very much prefer to have all personal elements left out. I appreciate thoroughly the kind and brotherly spirit.

It was a great pleasure to meet with the Union and I trust that the Conference may have left an abiding influence on the lives of many of the men who were present.

Very cordially yours,

✓
December 21st, 1905.

Mr. Nathan Wilbur Helm,

Exeter, N. H.

Dear Mr. Helms:-

Your kind letter of the 17th

has been received. I sincerely appreciate the cordial desire which you and Mr. Men express, and wish that it might be possible for me to go to Exeter this winter, but I do not see how it would be possible for me to leave New York before Saturday noon, and that would make impossible, of course, any meeting either Saturday morning or afternoon. I hope very much that perhaps next year it will be possible for me to arrange to come.

Very cordially yours,

December 22nd, 1905.

1031 Walnut Street,

Philadelphia, Penna.

My Dear Charles:-

I enclose herewith the first of the Lessons. It is like groping in the dark to find just the right method and principle in such a new course, coming upon one's feet from the old's work within. And it may take a lesson or two before I find a measureably satisfactory form and principle of selection and definite purpose. Please make any suggestions or criticisms that come to you.

I enclose also the Young People's Column for the January 28th meeting; and several editorial paragraphs.

I hope that you and all the family may have a very Happy Christmas, and with abiding love, I am,

Your sincere friend,

December 21st, 1905.

Mr. Will R. Kinsey, Jr.,

Harvard Academy,

Amherst, Mass.

My Dear Mr. Kinsey:-

I have not forgotten your kind invitation to me to come down to Amherst, and have hoped that it might be possible to arrange to come. What I have heard from Mr. Mott and Mr. Stone of their visits makes me only the more anxious to come down; but I see no possibility of coming this winter, and have had to give up, also, the expectation of getting to West Point, to which I had hoped to be able to make annual visits.

Rejoicing that there has been so much interest in the work of the Association, and in the meetings of Mr. Mott and Mr. Stone, and trusting that the religious life of the Academy may develop steadily, I am,

Very sincerely yours,

✓

December 27th, 1905.

The Rev. S. J. McPherson, D. D.,
Lawrenceville, N. J.

My Dear Dr. McPherson:-

I think Dr. Mackenzie is admirably suited for a semi-nary professorship. He has living interests. I doubt whether there is a minister in New York City who is better informed on Missions; and Dr. Ellinwood, whose judgment is very good, told me once that he thought there was no better preacher in New York. He is a very friendly, human man; able to deal sympathetically with young men and to make them feel genuinely at home with him. I think he is a man of good, progressive judgment, able to see both sides of questions, of fair and judicial mind. I think his course here has shown him to be a man of tact, and he doesn't lack in principle or faithfulness to it. Theologically I have little basis for judgment, but I should not classify him as an ultra-conservative, but as an open-minded, free-sighted, advancing man, of conservative character. On all these accounts, and many others, I should think him an admirable man to succeed Dr. Herrick Johnson.

On the other hand, his age would need to be considered; his years of waxing strength are behind him, and he is a man of such good restraint and self-control that I am not sure of the heat and contagiousness of his inner fires. And yet, I know him to be a man of feeling, for I have seen him genuinely moved, and I think he has the gifts of teaching. My grounds of misgiving would be, first, his age; second, his flexibility; and third, the immediacy of his contact with the younger life of the world. And yet I can cite a good deal to remove these misgivings. He is a great reader, and I know that he reads the young men's books, and is sympathetic with the world's young life; and his adaptation to it and to the old life as well, are real and deep. My impression of his fitness for the position at McCormick would be distinctly favorable.

I should think it would be well to look into his connection with the

Dr. Matheson, 2.

San Francisco Seminary and the work that he did there. I think that, as far as I have heard of it, it would indicate his adaptation to such work as is proposed at McCormick.

I hope that everything is going well at Jeanette's, and with warm regards and best wishes for the New Year, I am,

Your sincere friend,

✓
December 27th, 1905.

Miss Anna L. Raston,

5521 Wayne Ave., Germantown, Pa.

My dear Cousin Annie:--

Your very kind note came last week, a day or two before I went over to Harrisburg with Emma and the children. We spent Christmas there and I left them all with Mother. Emma will not return until the end of the week.

Thank you very much for the invitation to speak at one of your parlor meetings. I shall be glad to try to go. Saturday is the most convenient time for me, because I go to Pottstown once a month, and would be able to stop off in Germantown on the way, but I can arrange to go for some other afternoon. How would Wednesday afternoon, May 16th, do? If some other afternoon that week would be better, perhaps I could manage it.

With much love from us all and best wishes for the New Year,

Very sincerely yours,

December 27th, 1905.

Mr. Paul E. Gross,

216 North Main St.,

Bethlehem, Pennsylvania.

My dear Mr. Gross:--

Your kind note is received, but I am sorry it will not be possible for me to accept your invitation for any of the dates you mention, and I am afraid there is no other Friday evening on which I could come. I have about as many appointments ahead as I can hope to be able to care for properly, and I would suggest your trying to get Mr. C. V. McVie or some of the other Secretaries of the Young People's Missionary Movement, whose office is at 156 Fifth Ave., New York City. Trusting you may have a very successful missionary work among the young people, I am

Yours sincerely,

✓ December 27th, 1905.

Mr. Charles W. Gilroy,

3 West 29th St., City.

My dear Gilroy:--

Your kind letter of yesterday is just received. I have not made any engagements as yet beyond June 10th, although our Board meets on June 18th and I might not be able to leave New York until after that date. I shall be glad to see you about the dates of the Conference whenever you are here.

With best wishes for the New Year,

Very cordially yours,

✓ December 27th, 1905.

Miss Agnes P. Muir,

Englewood, N. J.

Dear Miss Muir:--

I am sorry to have been so slow in answering your kind note about my speaking at one of the West Side Christian Endeavor Meetings this winter. I could come the evening of January 7th, if that would be satisfactory. I have no other engagement for that evening, and I think nothing will call me away from Englewood that day. Will you let me know whether you would like me to come for that evening?

Very sincerely yours,

December 27th, 1905.

Mr. Lucius Miller,

Princeton, New Jersey.

My dear Luke:--

I return herewith the Directory of Graduates. I have marked the classes from '70 to '91 inclusive. I could go on back of '70 with the number of the classes, but perhaps it would be better to get Professor Huxt to take the classes from '70 back. I recognize many names in these classes which are good names, and I think I could make suggestions for almost all the classes of which there are survivors, and would be glad to do so if you cannot get better suggestions from others. If there is anyone at hand who could check over my suggestions and supplant them with better ones, please be sure to have them do it.

Very cordially yours,

✓
December 27th, 1905.

Mr. C. Charles Denby, Jr.,

State Department, Washington, D.C.

My dear Mr. Denby:--

I did not know until a few days ago of your appointment as Chief Clerk of the State Department, and hasten to say how glad I am to know that you are settled here at home in the service of the State Department. I hope that if you alone, or you and Mrs. Denby, are here in New York at any time, you will give Mrs. Speer and me the pleasure of coming out to dine and spend a night at least with us in Englewood.

With kind regards and best wishes for the New Year,

Very sincerely yours,

December 30th, 1905.

Mr. Delevan L. Pierson,

44 East 23rd Street,

New York City.

My Dear Del:-

Your kind note, with its enclosure, is just received. I have not yet seen the January number of the Review, but shall look one up if possible to-day. Will you send me two extra copies of the January number, so that I can cut out my article for my scrap book?

I was under the impression that Dr. Martin's article had appeared, and I should not be surprised if you had sent copies to Dr. Martin, and he had received them and forgotten about it. Still, Mrs. Nevius I think has made no reference to it, and she would not forget.

With best wishes for the New Year.

Very affectionately yours,

December 30th, 1905.

The Rev. Charles S. Lane, D. D.,
136 Cottage Avenue,
Mt. Vernon, New York.

My Dear Dr. Lane:-

Thank you very much for your note of yesterday, and for its suggestion as to the character of the meeting next Thursday.

I shall be glad to come up for supper with you, in response to your kind invitation, and shall take the train leaving at 5-16, from the Grand Central Station. I appreciate very much your cordial invitation to spend the night, but I ought to get back to Englewood, as Mrs. Sneer will be away, and our youngest child will be at home with only her nurse. If I could catch the 9-14 train it would be a convenience; otherwise I shall have to take the 9-58.

Very cordially yours,

R. D. Pierson

December 30th, 1905.

The Rev. William Hoge Marquis, D. D.,

105 East Broadway,

Louisville, Ky.

My Dear Dr. Marquis:-

Your very kind letter of the 27th is just received. I wish I could accept your invitation, but I already have engagements in Pittsburg for April 29th, in connection with the East Liberty Church and the Western Theological Seminary. If I were free, so that I could come down to Louisville at that time, I should be delighted to accept your invitation.

Very cordially yours,

January 2nd, 1906.

The Rev. S. M. Hamilton, D. D.,

Englewood, New Jersey,

My dear Dr. Hamilton:-

I find I have no appointment for January 10th, and shall be very glad to be of any service to you in connection with the prayer meeting that night.

Very cordially yours,

January 2nd, 1906.

Mr. Lucius Hopkins Miller,

Roselle, New Jersey.

My dear Miller:--

Sailer has gone to California and will not be back until February

probably. I have an engagement in the evening at Mr. Vernon, and have promised to take a train that will take me home down town here about half past four. I shall be here, however, all the rest of that day, and will be glad to see you at any time; although I am not sure now whether I will be able to get up to 3 West 29th St. for the Conference time.

With best wishes for the New Year,

Very sincerely yours,

January 2nd, 1906.

President George D. Merrill,
Hamilton, New York.

My dear President Merrill:--

Your kind invitation is just received. I wish I could have the pleasure of accepting it, but I have to be in Boston for the city and have to be here on the 25th, so it will not be possible for me to leave the afternoon of the 24th at Colgate on the day of Departure.

Trusting that it may be a profitable day, I am

Very sincerely yours,

✓
January 2nd, 1906.

The Rev. H. G. Buehler,

Lakeville, Connecticut.

My dear Mr. Buehler:--

It has occurred to me, as we have been fixing up our new home, that it might be a good thing to some time stucco the outside wall half way up with the same sort of material that you have used at Hotchkiss. Could you tell me how that worked for you, and can you give me any idea as to what the cost would be for a small undertaking.

I hope that you and Mrs. Buehler and Reginald have had a happy holiday, and wish best wishes for the New Year.

Ever your friend,

January 2nd, 1905.

The Rev. James B. Ely, D. D.,

Wincoke, Penn.

My dear James:--

Thank you very much for the calendar with the picture of Dwight and Elizabeth. I wish you and Mrs. Ely and both of them the best of New Year's.

Yours sincerely friend,

Dec 21 1904, 1905.

Miss A. T. Ferguson,

The Vineyard,

Meriden, Conn.

My Dear Miss Ferguson:--

It was a great pleasure to receive your note of the 26th, and the accompanying statement regarding the proposed publication. I am sorry you were put to the trouble of blotting my name out. I have no hesitation whatever in commending your work, but only hesitated to appear to be doing so, as I do not possess the social knowledge which I do not possess. I am glad to render.

Looking forward with pleasure to seeing you, and with kind regards, I am,

Very sincerely yours,

And sincerely yours,

That this will be satisfactory.

And I am so the contrary. I shall ensure
some more time later in the year. Unless I
let me off for this time, and would be glad to
later year, and I shall be glad if you could
possibly arrange, at either the earlier or the
be convenient for me to speak in England on
day is just received. I think that it might not
and that more of a letter.

My Dear Mrs. Mill:-

England, N. Y.

Mrs. James L. Mill,

London, England, 1868.

And I am so the contrary. I shall ensure

some more time later in the year. Unless I

let me off for this time, and would be glad to

later year, and I shall be glad if you could

possibly arrange, at either the earlier or the

be convenient for me to speak in England on

day is just received. I think that it might not

and that more of a letter.

My Dear Mrs. Mill:-

England, N. Y.

Mrs. James L. Mill,

London, England, 1868.

January 4th, 1906.

Mr. Henry T. Smith,

1002 York St., New Haven, Conn.

My dear Mr. Smith:-

I am sorry to hear that you were
suffering in last week's storm. I hope
other plans will be made for you to visit
the New Haven House. It is a very pleasant
place going to a private house or to one
of the fraternal houses as I have done
the last two years.

I am sorry to hear that your
21st is postponed. Very sorry
that I struck the Sunday after the 21st
of the year, but I trust will be very
pleasant.

I am very much
and best wishes for the New

January 15th, 1906.

Mrs. Wilson,

The Evergreens,

Archmont Manor, N. Y.

My Dear Mrs. Wilson:-

Your very kind letter of
Sunday was received yesterday. I shall be glad
to speak at the Anniversary of the Association
on Tuesday evening, February 15th.

With best wishes for the New Year from
Mrs. Speer and myself.

Very cordially yours,

✓
January third, 1906.

Miss Reba P. Forbes,

The Briar Cliff School,

Briar Cliff Manor, N. Y.

My Dear Miss Forbes:-

I have not forgotten your very kind invitation to me to come up to speak at the School on January 11th. I have been hoping that it might be possible for me to do so, but I have so many engagements that week, that I shall not be able to come then, and I fear not for any time this month or next. Perhaps some time in March I might be able to come, although I hesitate to make any promise even for this. But if that is not too late, and there is any evening then when you would like to have me come, I should be glad to manage it if possible.

Very cordially yours,

January third, 1906

The Rev. John Timothy Stone,

Brown Memorial House,

Baltimore, Md.

My Dear John:-

Thank you very much for the

New Year Greeting and the letter from James.

Thank you, also, for your remembrance of Elliott, and all the Christmas greetings from your home, including those from your dear Mother. I hope you may all have the happiest and most blessed of New Years, and looking

forward all joy to the time together at the Camp,

I am,

Very affectionately yours,

January third, 1906.

Mr. J. M. Richards,

Montclair, N. J.

My Dear Mr. Richards:-

Thank you very much for

your kind New Year Greeting, and the copy of Vergil's Sonnet, together with your sensible comment on it. It is beautifully printed. Only, how good it would be if the Sonnet ended in a Christian way!

With best wishes for the New Year,

Very cordially yours,

January third, 1906.

Mr. S. W. McGill,
150 North Centre,
Nashville, Tennessee.

My Dear Mr. McGill:-

Thank you very much for
your New Year Greeting. I appreciated very much
this remembrance, and with best wishes for God's
abounding blessing on you during the coming year,
I am,

Very cordially yours,

✓
January fifth, 1906.

Dr. Thomas F. Staley,

Bristol, Tenn.

My Dear Dr. Staley:-

Your kind note of the first is just received. It was a great pleasure to hear from you. I remember well our little talk when you came to see me some time ago. I wish I could accept your invitation to stop off at Bristol on the way to or from the Nashville Convention, but I have just had to write to Principal Hallins of the Baptist Theological Seminary in Louisville, that it would be impossible for me to do any thing of this sort, as engagements here will require me staying here until the last hour before leaving for Nashville, and will also require my immediate return. I am glad to hear of the association building, and trust that God is blessing you in your professional work and also in your service of Him in the effort to win other men to Christ.

Hoping to meet you again some day, I am,

Very sincerely yours,

V. H. H.

✓
January fifth, 1906.

Mr. Andrew Stevenson,

950 First National Bank Building,

Chicago, Ills.

My Dear Mr. Stevenson:-

I am very much obliged for your kind note of January third, just received, enclosing a letter from Mr. Hall. I am overjoyed if the meetings in November have left any abiding results and am very grateful to God if individual men like Mr. Hall have been helped to a richer and freer life.

I have been wanting to write to you for several days, confidentially, to ask about Mr. Ganse. How do you regard his qualifications for an important financial religious position. It is a position calling for the highest business talent and the truest Christian spirit. It is also a position that would not of course be able to pay for the business ability which requires anything like its market value. Whoever undertook the work would have to do so in a missionary spirit, and it would be desirable that, if he has any family dependent upon him, he should have some supplementary income of his own. Would Mr. Ganse be the man for such a position? and if so, would there be the slightest possibility of appealing successfully to his spirit of self-sacrifice in the interest of a great Christian cause? I should appreciate it very much if you would write as frankly as I know the confidence of our mutual friendship will lead you to feel free to write.

With best wishes for the New Year, and kind regards to Mrs. Stevenson,
I am,

Your sincere friend,



January fifth, 1906.

President E. Y. Mullins, D. D.,

Louisville, Kentucky.

My Dear Dr. Mullins:-

Your very kind note of the second has been received. I wish I could accept your kind invitation to stop off in Louisville, but I shall not be able to do so, ^{to} either going ~~or~~ coming from Nashville. I cannot leave New York until midnight of February 25th, which will get me to Nashville only in time for the Annual Conference of Mission Boards, preceding the Student Volunteer Convention; and I have engagements in New York on Tuesday, March 6th, so that I shall have to return immediately after the Convention. It would be a pleasure to visit the Southern Baptist Seminary if it were possible.

Very sincerely yours,

✓
January fifth, 1906.

The Rev. Edwin A. Bulkley, D. D.,
479 West 152nd Street,
New York City.

My Dear Dr. Bulkley: -

Your very kind note of December twenty-third, with the accompanying notes regarding George Bowen, has been received, and I am very much obliged for your kindness and the trouble that you have taken. The notes will be extremely helpful. They are the first recollections I have been able to get from any of his seminary classmates, and I appreciate very much the trouble which you have taken. I think your hints as to his character are very accurate and helpful, and I fear it is going to be a difficult business to balance justly the somewhat eccentric characteristics on the one hand, and the noble and admirable qualities on the other.

With warm regards.

Your sincere friend,

Henry

✓
January 26, 1906.

Mr. W. R. Moody,

East Northfield, Mass.

My dear Will:--

I suppose "National Convention" in your letter is a stenographer's mistake for "Nashville". I would gladly give the address I am going to make if I had it, but I cannot get it out, and do not expect to be fully prepared until the day it is to be delivered. I have not been able to do anything much yet and shall not, I fear, for some time.

With warm regards to you all and best wishes for the New Year,

Affectionately your friend,

P. S.--I enclose herewith two book reviews. You sent me down a fine lot of books the other day and I ought to be sending you some more reviews before long.

(enclosure)

January 6th, 1906.

Mr. J. D. Miller, D. D.,

Wetherpoon Bldg., Philadelphia, Pa.

My dear Dr. Miller:--

I enclose herewith

some notes for short articles for EC

and

very affectionately yours,

W. E. Felt

January 6th, 1906.

Mr. Charles G. Trumbull,

1051 Walnut St., Philadelphia, Penn.

My dear Charles:--

I send herewith the

notes for the Young People's Meetings
for February 11th and 18th.

Very affectionately yours,

W. E. Felt

1890, J. 1890, 1890.

1890, 1890, 1890, 1890, 1890.

Constantinople, Turkey.

My dear Mrs. J. 1890, 1890, 1890.

Dr. Clement may have written to you regarding the success which he had. I entertain that there should be a biography of Dr. Cochran. I have written about the matter to all the missionaries in the family and all the missions in Persia, and all agree that there ought to be such a biography, and have been so long that I should undertake to prepare it. Dr. Clement has been so busy in gathering material, and I have written to all the relatives here, and have quite a number of papers from Dr. Smith Cochran, Dr. Scott, Dr. Lamb and others, and am hoping that the missionaries in Persia will take time and pains to prepare all they can. But there is probably no one who would be able to supply as many recollections of his boyhood and his early life, or to furnish as much that would have in it the atmosphere and conditions in which he lived and worked as yourself; and I write to ask earnestly if you will not write out the recollections that you can, however slight or familiar they may be, and send them to me.

I have, of course, gathered all his letters and reports to the board, and am going over all the correspondence that he has ever written to the board, in order to pick out everything that refers to him. This will supply the first and second of the period, and of course it only begins to cover his life in Persia, and does not cover his life in Persia before he came to America and his life in Persia after he came to America.

✓

January 9th, 1936.

Miss Agnes C. Slocum,

Abbott Academy, Andover, Mass.

Dear Miss Slocum:--

Your very kind note of the sixth has been received. I shall be glad to try to come up to Amherst on Saturday, February 3rd, in time to speak at the evening meeting at Abbott Academy at 8 o'clock.

Very sincerely yours,

2

January 9th, 1906.

The Hon. James A. Beaver,
 Jr. of the Superior Court,
 Scranton, Pennsylvania.

Your good letter of the 6th was received yesterday. I am sorry that the dates you mention are all impossible for me. I have engagements here in New York on Jan. 31st and Feb. 1st and 2nd, and I must be in Andover, Mass on Saturday evening, Feb. 3rd. I could come for Friday evening, Feb. 9th, however, but that would mean going against the Dedication Committee. I wish I could come for the time proposed and stay over Sunday; but, as I have said, I have to be in Andover then, and indeed I have engagements for every Sunday until the middle of the summer.

With warm regards,

Very cordially yours,



to you are going to be the more but in much
what you want is
 a lot of material upon which you can exercise the activity of selec-
 tion and exclusion. I am glad to suggest some names in reply to
 your letter of the 4th.

1. DEVOTIONAL BOOKS.

Stalker's, *Imago Christi*.
 Phelps', *The Still Hour*.
 Monle's, *Secret of Prayer*.
 Trumbull, *Prayer, Its Nature and Scope*.
 Trumbull, *The Ideal Life*.
 Packer's, *Thoughts*. Charles Gordon's *Letters to his*
Master.
 Mrs. Channing's, *Life of Horace Bushnell*.
 Trumbull's, *Six volumes of Essays, Ourselves and Others, etc.*

2. COMMENTARIES AND BOOKS ON THE BIBLE.

Little's, *Commentary on the New Testament*, formerly called
 Speaker's *Commentary*, 4 volumes.
 G. A. Smith's, *Book of the Twelve Prophets*.
 Keble's, *Expositors Bible*.
 Kellogg, on *Leviticus*, *Expositors Bible*.
 Keble's, on *Hebrews* and on the *Epistles of John*.
 J. J. Stewart's, *Life and Times of Jesus Christ*.
 Farrar's, *Messages of the Books*.
 Farrar's, *Progress and Doctrine in the New Testament*.
 Ramsay's, *St Paul the Traveler and Roman Citizen*.

3. APOLOGETICS.

Young's, *Christ of History*.
 Liddon's, *Divinity of our Lord*.
 Simpson's, *Fact of Christ*.
 Fisher's, *Christian Apologetics*.
 Bruce's, *Apologetics*.
 Harris', *Self Relation of God*.
 Gordon's, *The Christ of To-day*.

The Rev. Harlan P. Beach, 2.

Forrest, The Christ of History and Experience.
 Sterr's, The Divine ~~Reign~~ of Christianity.
 Bashnell's, Nature and the Supernatural.
 Kellogg's, Light of Asia and Light of the World
 Gore's, Incarnation of the Son of God.

4. RECREATIVE LITERATURE.

Morley's Life of Gladstone.
 Forsythe's, Religion in Recent Art.
 Henderson's Life of Stonewall Jackson.
 Townsend's Asia and Europe.
 Seelye's, Expansion of England.
 Thackeray's, Kipling and Stevenson.
 A good selection of Browning's Poetry.

5. PERIODICALS.

The Review of Reviews.
 Hibbert Journal.
 The Missionary Review of the World.
 East and West.
 The Church Missionary Intelligencer.
 Princeton Review.
 London Weekly Times.
 McClure's Magazine.
 The Century.

This is no perfect list, but perhaps you can get something out of it in combining it with the other replies you will doubtless have in hand.

Very cordially yours,

Robert E. Spurr

